॥ श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् ॥

श्रीभक्तिसर्वस्वम्



श्रीहरिदास शास्त्री

श्रीहरिदास निवास, पुरानी कालीदह

वृन्दावन, मथुरा (उ. प्र.)

फोन : 0565-3202322, 3202325

।। श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम्।।

श्रीभक्तिसर्वस्वम्

अंहःसंहरदखिलं सकृदुदयादेव सकल लोकस्य।
तरणिरिव तिमिर जलधिं जयति जगन्मङ्गलं हरेर्नाम।।

श्रीधाम वृन्दावन वास्तव्येन न्याय वैशेषिक शास्त्रि, नव्य
न्यायाचार्य, काव्य, व्याकरण, साङ्ख्य, मीमांसा,
वेदान्त, तर्क, तर्क, न्याय, वैष्णवदर्शनतीर्थ,
विद्यारत्नाद्युपाध्यलङ्कृतेन
श्रीहरिदास शास्त्रिणा
सम्पादितम्।

सद्ग्रन्थ प्रकाशक :-
श्रीहरिदास शास्त्री
श्रीगदाधरगौरहरि प्रेस.
श्रीहरिदास निवास, पुरानी कालीदह,
वृन्दावन, मथुरा, (उत्तर प्रदेश)।
श्रीचैतन्याब्द—५२५

प्रकाशक :-

श्रीहरिदास शास्त्री

संस्थापकाध्यक्ष :-

श्रीहरिदास शास्त्री गोसेवा संस्थान
श्रीहरिदास निवास, पुरानी कालीदह,
वृन्दावन, मथुरा, (उत्तर प्रदेश)।
फोन नं— ०५६५-३२०२३२२, ३२०२३२५

प्रकाशन तिथि :
श्रीगौरशिरोमणि महाशय
पण्डित श्रीविनोदविहारी गोस्वामीजी महाराज
का
तिरोभाव महोत्सव
पौष द्वितीया कृष्ण पक्ष, सम्वत् २०६७, श्रीगौराङ्गाब्द ५२५

प्रथम संस्करण

प्रकाशन सहायता- ५०/- रुपये

सर्व्वस्वत्व सुरक्षित

।। श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम्।।

विज्ञप्ति

"**श्रीभक्तिसर्व्वस्वम्**" ग्रन्थ श्रीगौरगदाधर की अनुकम्पा से प्रकाशित हुआ, इसमें–

दूसरों के तृप्ति में तृप्त, दूसरों के दुःख में दुःखी, निज सुख दुःख में उल्लास व दुःख वर्जित, स्वेष्टाराधन में तत्पर श्रीचैतन्यदेव के अनुचरवृन्द स्वाभाविक निरभिमानी होने पर भी मानववृन्द को सुखी करने के लिए शिक्षाप्रदान के बहाने से सम्प्रार्थनात्मिका, दैन्यबोधिनी, लालसामयी प्रार्थना का प्रवर्त्तन किये हैं, इनके अनुशीलन से मन तत्क्षणात् श्रीव्रजदेवियों के भाव से भावित होकर उनके आनुगत्य में श्रीकृष्ण के भजन में प्रवृत्त होता है।

श्रीहरिदास शास्त्री

।। श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् ।।

श्रीभक्तिसर्वस्वम्

श्रीश्रीशिक्षाष्टकम्

चेतोदर्पणमार्ज्जनं भवमहादावाग्नि-निर्व्वापणं
श्रेयः-कैरव-चन्द्रिका-वितरणं विद्यावधू-जीवनम्।
आनन्दाम्बुधिवर्द्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं
सर्व्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्णसङ्कीर्त्तनम्।।१।।

जो मानस दर्पण के मालिन्य को विदूरित करता है, जो भवरूप दावानल का निवारक है, जो परम मङ्गल पथ रूप श्वेत पद्म के लिए शुभ्र ज्योत्स्ना स्वरूप है, जिसके श्रवण से आनन्द सागर उद्वेलित हो उठता है, जिसके पद-पद में सुधास्वाद पूर्णरूप में विराजमान है, जो आत्मा को रसभाव से स्नान कराकर अभूतपूर्व प्रीति सुख वितरण करता है, वह श्रीकृष्ण सङ्कीर्त्तन जययुक्त हो।

नाम्नामकारिबहुधा निजसर्वशक्ति-
स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः।
एतादृशी तव कृपा भगवन्! ममापि
दुर्दैवमीदृशमिहाजनि नानुरागः।।२।।

हे भगवन्! आपकी इस प्रकार करुणा है कि आपके नाम समूह में बहुधा निज शक्ति निहित है एवं उन सब नामों के स्मरणार्थ कोई नियमित काल नहीं है अर्थात् सब समय विहित है, किन्तु मेरा इस प्रकार का दुर्दैव है कि इस प्रकार के नाम के प्रति अनुराग नहीं हुआ है।

तृणादपि सुनीचेन तरुरिव सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्त्तनीयः सदा हरिः।।३।।

तृण से भी अतीव विनीत होकर, तरु के तुल्य परोपकारी एवं सहिष्णु होकर, निज मान अभिमान को वर्जनकर, अपर को सम्मान प्रदानकर सर्वदा श्रीहरि के नाम का कीर्त्तन करना कर्त्तव्य है।

न धनं न जनं न सुन्दरीं कवितां वा जगदीश! कामये।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे भवताद्भक्तिरहैतुकी त्वयि।।४।।

हे जगदीश! मैं धन, जन, सुन्दरी अथवा कवित्व शक्तिमान होने की कामना नहीं करता हूँ, किन्तु जन्म जन्म में हे ईश्वर! तुम्हारे चरणों में अहैतुकी भक्ति हो, यही कामना करता हूँ।

अयि नन्दतनुज! किङ्करं पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ।
कृपया तव पादपङ्कजस्थित धूलीसदृशं विचिन्तय।।५।।

हे नन्दनन्दन! विषम संसार समुद्र में निपतित मुझको कृपा पूर्वक निज चरण पङ्कज स्थित धूली के तुल्य मानो।

नयनं गलदश्रुधारया वदनं गद्गदरुद्धया गिरा।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नाम ग्रहणे भविष्यति।।६।।

हे प्रभो! कब आपका नाम ग्रहण करते करते नयनों से वारि धारा विगलित होगी, वदन में वाणी अवरुद्ध होगी एवं शरीर पुलकायित होगा?

युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम्।
शून्यायितं जगत् सर्व्वं गोविन्द-विरहेण मे।।७।।

गोविन्द विच्छेद में मुहूर्त्त समय भी मेरे पक्ष में युगवत् प्रतीत होता है, नयनों से वर्षाकालीन जलधारा के तुल्य अश्रुधारां निर्गलित होती रहती है एव समस्त जगत शून्य प्रतीत होते हैं।

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु मा-
मदर्शनान्मर्महतां करोतु वा।
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो
मत्प्राणनाथस्तु स एव नापरः।।८।।

हे सखि! कृष्ण मुझको आलिङ्गन कर चरणरता किङ्करी मानें अथवा महाकष्ट में डालकर निष्पेषित करें, किम्वा अदर्शन देकर मर्म्महता करें अथवा बहुनारी लम्पट होकर यथा तथा विहार करें तथापि वह कृष्ण ही एकमात्र मेरे प्राणनाथ हैं, अपर कोई नहीं।

इति-श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभोर्मुखाब्ज-विगलितं
श्रीश्रीशिक्षाष्टकं सम्पूर्णम्॥

।। श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् ।।

श्रीश्रीनरोत्तमप्रभोरष्टकम्

श्रीकृष्णनामामृतवर्षिवक्त्र चन्द्रप्रभा धस्त तमोभराय।
गौराङ्ग देवानुचराय तस्मै नमो नमः श्रील नरोत्तमाय।।१।।

जो श्रीकृष्णनामामृतवर्षि मुखचन्द्रप्रभा द्वारा लागों का अज्ञानरूप अन्धकार नष्ट करते हैं, मैं उन गौराङ्ग देवानुचर श्रील नरोत्तम को पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ।

सङ्कीर्तनानन्दज-मन्दहास्य-दन्तद्युति-द्योतित-दिङ्मुखाय।
स्वेदाश्रुधारा स्नपिताय तस्मै नमो नमः श्रील नरोत्तमाय।।२।।

सङ्कीर्तन में जिनके मन्द हास्य से होने वाले दन्तद्युति से दिङ्मुखमण्डल अच्छी तरह से द्योतित हो उठता है एवं उसी समय घर्म और नेत्रों के जलधारा से जो स्नान करने लगते हैं, मैं उन श्रील नरोत्तम को पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ।

मृदङ्ग-नाम श्रुतिमात्र चञ्चत्पदाम्बुजामन्द मनोहराय।
सद्यः समुद्यत्पुलकाय तस्मै नमो नमः श्रील नरोत्तमाय।।३।।

जो मृदङ्ग ध्वनि श्रवण मात्र से होने वाले चञ्चल पादपद्म से सज्जनों का मनोहरण करते हैं, सद्य जिनको पुलक सञ्चार होता है, मैं उन श्रील नरोत्तम को पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ।

गन्धर्व-गर्व क्षपण स्वलास्यविस्मापिताशेष कृति व्रजाय।
स्वसृष्टगानप्रथिताय तस्मै नमो नमः श्रील नरोत्तमाय।।४।।

जो नृत्य कौशल से गन्धर्वों के गर्व को नष्ट करके अशेष सुधीवर्ग को विस्मयान्वित करने वाले हैं एवं स्वरचित गीतों के द्वारा ख्याति लाभ किये हैं, मैं उन श्रील नरोत्तम को पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ।

आनन्दमूर्च्छावनिपात भातधूली भरालङ्कृत विग्रहाय।
यद्दर्शनं भाग्य भरेण तस्मै नमो नमः श्रील नरोत्तमाय।।५।।

आनन्द से मूर्च्छित होकर भूमि में लुण्ठन करने से धूल समूह से जिनका शरीर अलंकृत होता रहता है एवं बहुत भाग्य से जिनका साक्षात् दर्शन होता है, मैं, उन श्रील नरोत्तम को पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ।

स्थले स्थले यस्य कृपा प्रपाभिः कृष्णान्यतृष्णा जन संहतीनाम्।
निर्म्मूलिता एव भवन्ति तस्मै नमो नमः श्रील नरोत्तमाय।।६।।

जो स्थान स्थान पर कृपारूप जलछत्र स्थापन करके लोक समूह का कृष्णभिन्न तृष्णा समूह को निर्मूलित करने वाले हैं, मैं उन श्रील नरोत्तम को पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ।

यद्भक्ति निष्ठोपल रेखिकेव स्पर्शः पुनः स्पर्शमणीव यस्य।
प्रामाण्यमेव श्रुतिवद्यदीयं तस्मै नमः श्रील नरोत्तमाय।।७।।

जिनकी भक्ति दृढ़ता पाषाण रेखा के समान प्रतीत होता है, जिनका पादादि स्पर्श स्पर्शमणि के समान अभीष्ट सिद्धि करने वाला है एवं जिनके वाक्य वेद तुल्य प्रामाणिक हैं, मैं उन श्रील नरोत्तम को पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ।

मूर्त्तैव भक्तिः किमयं किमेष वैराग्यसारस्तनुमान् नृलोके।
सम्भाव्यते यःकृतिभिःसदैव तस्मै नमः श्रील नरोत्तमाय।।८।।

इस नृलोक में जिनको देखकर कृति व्यक्तिगण सदा तर्क करते रहते हैं कि यह मूर्तिमती भक्ति हैं? अथवा वैराग्य के सार? मैं उन श्रील नरोत्तम को पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ।

श्रीराधिकाकृष्णविलाससिन्धौ निमज्जतः श्रील नरोत्तमस्य।
पठेद् यः एवाष्टकमेतदुच्चैरसौ तदीयां पदवीं प्रयाति।।९।।

श्रीराधाकृष्ण के विलाससिन्धु में जो सर्वदा निमग्न रहते हैं, उन श्रील नरोत्तम के इस अष्टक को जो उच्च स्वर से पाठ

करता है, वह उनके पदवी को प्राप्त करता है।

कारुण्यदृष्टिशमिताश्रितमन्तुकोटि-
रम्याधरोद्यदति सुन्दर दन्तकान्ति।
श्रीमन्नरोत्तम मुखाम्बुज मन्दहास्यं लास्यं
तनोतु हृदि मे वितरत् स्वदास्यम्।।१०।।

कारुण्यदृष्टिविशिष्ट, रम्य अधरों से होकर प्रकटित अति सुन्दर दन्तकान्ति से आश्रितजनों के कोटि अपराध नाशकारी, ऐसे श्रीमन्नरोत्तम के मुखपद्म का मन्द मन्द हास्य मुझको स्वदास्य प्रदान करके हृदय में नृत्य करें।

राजन्मृदङ्ग करताल कलाभिरामं
गौराङ्ग गानमधुपान भराभिरामम्।
श्रीमन्नरोत्तम पदाम्बुज मञ्जु नृत्यं
भृत्यं कृतार्थयतु मां फलितेष्टकृत्यम्।।११।।

शोभायमान मृदङ्ग व करताल के शब्दों से अतिशय आनन्दित, श्रीगौराङ्गदेव के गुणगान के मधुपान से अति आनन्दित श्रीमन्नरोत्तम पदाम्बुज के मनोहर नृत्य इस भृत्य को इष्टफल प्रदान कर कृतार्थ करें।

इति-श्रीमद्विश्वनाथ चक्रवर्त्ति ठक्कुर विरचित
स्तवामृतलहर्यां
श्रीश्रीनरोत्तमप्रभोरष्टकं सम्पूर्णम्।

श्रीश्रीप्रेमभक्ति-चन्द्रिका

श्रीचैतन्यमनोऽभीष्टं स्थापितं येन भूतले ।
सोऽयं रूपः कदा मह्यं ददाति स्वपदान्तिकम् ।।

श्रीगुरुचरण पद्म, केवल भकति सद्म,
वन्दो मुञि सावधान मने ।
जाँहार प्रसादे भाई, ए भव तरिया जाई,
कृष्णप्राप्ति हय जाहा हने ।
गुरु मुखपद्म वाक्य, हृदये करिया ऐक्य,
आर न करिह मने आशा ।
श्रीगुरुचरणे रति, एइ से उत्तम गति,
जे प्रसादे पुरे सर्व आशा ।।
चक्षुदान दिला जेई, जन्मे जन्मे प्रभु सेई,
दिव्यज्ञान हृदे प्रकाशित ।
प्रेमभक्ति जाहा हैते, अविद्या विनाश जाते,
वेदे गाय जाँहार चरित ।।
श्रीगुरु करुणासिन्धु, अधम जनार बन्धु,
लोकनाथ लोकेर जीवन ।
हा ! हा !! प्रभु कर दया, देह मोरे पदछाया,
एबे यशः घुषुक त्रिभुवने ।।
वैष्णव-चरणरेणु, भूषण करिया तनु,

जाहा हैते अनुभव हय ।
मार्ज्जन हय भजन, साधुसङ्गे अनुक्षण,
अज्ञान अविद्या पराजय ।।
जय सनातन रूप, प्रेमभक्ति रस-भूप,
युगल-उज्ज्वलरस तनु ।
याँहार प्रसादे लोक, पाशारिल सब शोक,
प्रकट कल्पतरु जनु ।।
प्रेमभक्ति - रीति यत, निज ग्रन्थे सुवेकत,
लिखियाछे दुइ महाशय ।
याँहार श्रवण हैते, परानन्द हय चित्ते,
युगल मधुर रसाश्रय ।।
युगल-किशोर-प्रेम, लक्षवान येन हेम,
हेन धन प्रकाशिल यारा ।
जय रूप ! सनातन ! देह मोरे एइधन,
से रतन मोर गले हारा ।।
भागवत शास्त्रमर्म, नवविध भक्ति-धर्म,
सदाइ करिव सुसेवन ।
अन्य देवाश्रय नाई, तोमारे कहिल भाइ,
एइ तत्व परम भजन ।।
साधु शास्त्र गुरु वाक्य, चित्तेते करिया ऐक्य,
सतत भासिव प्रेम माझे ।
कर्मी ज्ञानी भक्तिहीन, इहारे करिब भिन्न,
नरोत्तम एइ तत्त्व गाजे ।।१।।

श्रीमद्रूपगोस्वामिनोक्तम्—

"अन्याभिलाषिताशून्यं ज्ञानकर्माद्यनावृतम् ।
आनुकूल्येन कृष्णानुशीलनं भक्तिरुत्तमा ।।"

अन्य अभिलाष छाड़ि, ज्ञानकर्म परिहरि,
कायमने करिव भजन ।
साधुसङ्गे कृष्णसेवा, ना पूजिब अन्य देवा,
एइ भक्ति परम कारण ।।
महाजनेर जेइ पथ, ताते हव अनुरत,
पूर्वापर करिया विचार ।
साधन-स्मरण लीला, इहाते ना कर हेला,
काय-मने करिया सुसार ।।
असत् सङ्ग सदा त्याग, छाड़ अन्य गीत-राग,
कर्मी ज्ञानी परिहरि दूरे ।
केवल भक्त सङ्ग, प्रेमकथा रसरङ्ग,
लीला-कथा व्रजरसपुरे ।।
योगी न्यासी कर्मी ज्ञानी, अन्य देव पूजक ध्यानी
एइ लोक दूरे परिहरि ।
कर्म धर्म दु:ख शोक, जेवा थाके अन्य योग,
छाड़ि भज गिरिवरधारी ।।
तीर्थयात्रा-परिश्रम, केवल मनेर भ्रम,
सर्वसिद्धि गोविन्दचरण ।
दृढ़विश्वास हृदे धरि, मद मात्सर्य परिहरि,
सदा कर अनन्य-भजन ।।

कृष्णभक्त सङ्ग करि, कृष्णभक्त अङ्ग हेरि,
श्रद्धान्वित श्रवण-कीर्त्तन ।
अर्च्चन वन्दन ध्यान, नवभक्ति महाज्ञान,
एइ भक्ति परम कारण ।।
हृषीके गोविन्द-सेवा, ना पूजिब अन्यदेवा,
एइ त अनन्यभक्ति कथा ।
आर जत उपालम्भ, विशेष सकलि दम्भ,
देखिते लागये मने व्यथा ।।
देहे वैसे रिपुगण, यतेक इन्द्रियगण,
केहो कार बाध्य नाहि हय ।
शुनिले ना शुने कान, जानिले ना जाने प्राण,
दढ़ाइते ना पारे निश्चय ।।
काम क्रोध लोभ मोह, मद मात्सर्य दम्भ सह,
स्थाने स्थाने नियुक्त करिव ।
आनन्द करि हृदय, रिपु करि पराजय,
अनायासे गोविन्द भजिव ।।
कृष्णसेवा कामार्पणे, क्रोध भक्तद्वेषीजने,
लोभ साधुसङ्गे हरिकथा ।
मोह इष्ट-लाभ विने, मद कृष्ण गुणगाने,
नियुक्त करिव यथा तथा ।।
अन्यथा स्वतन्त्र काम, अनर्थादि जार धाम,
भक्तिपथे सदा देय भङ्ग ।
किवा वा करिते पारे, काम क्रोध साधकेरे,
यदि हय साधुजनार सङ्ग ।।
क्रोध वा ना करे किवा, क्रोध त्याग सदा दिवा,

लोभ मोह एइत कथन ।
छय रिपु सदा हीन, करिवे मनेर अधीन,
कृष्णचन्द्र करिया स्मरण ।।
आपनि पलावे सब, शुनिया गोविन्द-रव,
सिंह-रवे जेन करिगण ।
सकलि विपत्ति जावे, महानन्द सुख पावे,
जार हय एकान्त भजन ।।
ना करिह असत् चेष्टा, लाभ पूजा प्रतिष्ठा,
सदा चिन्त गोविन्द-चरण ।
सकल विपत्ति जावे, महानन्द सुख पावे,
प्रेमभक्ति परम कारण ।।
असत् सङ्ग कुटिनाटी, छाड़ अन्य परिपाटी,
अन्य देवे ना करिह रति ।
आपन-आपन स्थाने, पिरिति सभाइ टाने,
भक्तिपथे पड़ये विपति ।।
आपन भजन पथ ताहे हव अनुरत,
इष्टदेव स्थाने लीला-गान ।
नैष्ठिक भजन एइ, तोमारे कहिल भाइ,
हनुमान ताहाते प्रमाण ।।

श्रीनाथे जानकीनाथे चाभेदः परमात्मनि।
तथापि मम सर्वस्वं रामः कमललोचनः।।

देवलोक पितृलोक, पाय तारा महासुख,
साधु साधु बले अनुक्षणि ।
युगल-भजन जारा प्रेमानन्दे भासे तारा,
त्रिभुवन ताहार निछनि ।।
पृथक आवास योग, दुखमय विषय भोग,

व्रजेवास गोविन्द-सेवन ।

कृष्णकथा कृष्णनाम, सत्य सत्य रसधाम,

व्रजजनेर सङ्ग अनुक्षण ।।

सदा सेवा अभिलाष, मने करि विश्वास,

सर्वथाइ हइया निर्भय ।

नरोत्तम दास बोले, पड़िलुँ असत् भोले,

परित्राण कर महाशय ।।२।।

तुमि त दयार सिन्धु, अधम जनार-बन्धु,

मोरे प्रभु ! कर अवधान ।

पड़िलुँ असत्-भोले, काम तिमिङ्गिले गिले,

ओहे नाथ! कर परित्राण ।।

यावत् जनम मोर, अपराधे हइनु भोर,

निष्कपटे ना भजिनु तोमा ।

तथापिह तुमि गति, ना छाड़िह प्राणपति,

मुञि सम नाहिक अधमा ।।

पतित-पावन नाम, घोषणा तोमार श्याम !

उपेखिले नाहि मोर गति ।

यदि हउ अपराधी, तथापिह तुमि गति,

सत्य सत्य जेन पति सती ।।

तुंमि त परम देवा, नाहि मोरे उपेखिवा,

शुन शुन प्राणेर ईश्वर ।

यदि करों अपराध, तथापिह तुमि नाथ,

सेवा दिया कर अनुचर ।।

कामे मोर हत चित, नाहि जाने निज हित,

मनेर ना घुँचे दुर्वासना ।
मोरे नाथ ! अङ्गी कुरु, तुँहि वाञ्छा-कल्पतरु,
करुणा देखुक सर्वजना ।।
मो सम पतित नाइ, त्रिभुवने देख चाइ,
"नरोत्तम-पावन" नाम धर ।
घुषुक संसारे नाम, पतित उद्धार श्याम,
निज दास कर गिरिधर ।।
नरोत्तम बड़ दुखी, नाथ ! मोरे कर सुखी,
तोमार भजन - सङ्कीर्त्तने ।
अन्तराय नाहि जाय, एइ त परम भय,
निवेदन करि अनुक्षणे ।।३।।

आन कथा आन व्यथा, नाहि जेन जाङ तथा,
तोमार चरण-स्मृति साजे ।
अविरत अविरल, तूया गुणे कलकल,
गाङ जेन सतेर समाजे ।।
अन्यव्रत अन्यदान, नाहि करौं वस्तुज्ञान,
अन्य सेवा अन्यदेव पूजा ।
हा हा कृष्ण ! बलि बलि, बेड़ाङ आनन्द करि,
मने मोर नाहे जेन दूजा ।।
जीवने मरणे गति, राधाकृष्ण प्राणपति,
दोंहार पिरीतिरस सुखे ।
युगल सङ्गति जारा, मोर प्राण गले हारा,
एइ कथा रहु मोर बुके ।।

युगल-चरण सेवा, युगल चरणध्येवा,
युगलेते मनेर पिरीति ।
युगल-किशोर रूप, काम-रतिगण भूप,
मने रहु उ लीला कि रीति ।।
दशनेते तृण धरि, हा हा ! किशोर ! किशोरि !
चरणाब्जे निवेदन करि ।
व्रजराज-कुमार श्याम, वृषभानुकुमारी नाम,
श्रीराधिका रामा मनोहारी! ।।
कनक-केतकी राइ, श्याम मरकत काइ
दरप-दरप करु चूर ।
नटवर शिरोमणि, नटिनीर शेखरिणी,
दुँहु गुणे दुहुँ मन झूर ।।
श्रीमुख सुन्दर वर, हेम नील कान्तिधर,
भावभूषण करु शोभा ।
नील-पीत वासधर, गौरीश्याम मनोहर
अन्तरेर भावे दोँहि लोभा ।।
आभरण मणिमय, प्रति अङ्गे अभिनय,
तह्यु पाय नरोत्तम दास ।
निशि-दिशि गुण गाङ', परम आनन्द पाङ,
मने मोर एइ अभिलाष ।।४।।

रागेर भजन पथ, कहि एबे अभिमत,
लोकवेद सार एइ वाणी ।
सखीर अनुगा हैया, व्रजे सिद्धदेह पाइया,

एइ भावे जुड़ावे पराणी ।।
श्रीराधिकार सखी जत, ताहा वा कहिब कत,
मुख्य सखी करिये गणन ।
ललिता विशाखा तथा, सुचित्रा चम्पकलता,
रङ्गदेवी सुदेवी कथन ।।
तुङ्गविद्या इन्दुरेखा, एइ अष्ट सखी लेखा,
एवे कहि नर्म-सखीगण ।
इहा सभा सहचरी, प्रियप्रेष्ठ नामधरि,
प्रेम सेवा करे अनुक्षण ।।
समस्नेहा विषमस्नेहा, ना करिह दुइ लेहा,
कहि मात्र अधिक स्नेहागण ।
निरन्तर थाके सङ्गे, कृष्णकथा लीलारङ्गे,
नर्मसखी एइ सव जन ।।
श्रीरूप मञ्जरी आर, श्रीरति मञ्जरी सार,
लवङ्ग मञ्जरी मञ्जुलाली ।
श्रीरस मञ्जरी सङ्गे, कस्तूरिक-आदि रङ्गे,
प्रेमसेवा करि कुतूहली ।।
ए सभार अनुगा हैया, प्रेमसेवा निव चाइया,
इङ्गिते बुझिव सब काज ।
रूपे गुणे डगमगि, सदा हव अनुरागी,
वसति करिव सखी माझ ।।
वृन्दावने दुइजन, चारिदिके सखीगण,
समयेर सेवा रससुखे ।
सखीर इङ्गित हवे, चामर दुलाव तवे,

ताम्बूल योगाब चाँदमुखे ।।

युगल चरण सेवि, निरन्तर एइ भावि,
अनुरागे थाकिव सदाय ।
साधने भाविब याहा, सिद्धदेहे पाब ताहा,
रागपथेर एइ से उपाय ।।
साधने जे धन चाई, सिद्धदेहे ताहा पाइ,
पक्वापक्व मात्र से विचार ।
पाकिले से प्रेमभक्ति, अपक्वे साधन रीति,
भकति लक्षण तत्त्वसार ।।
नरोत्तम दास कहे, एइ जेन मोर हय,
अनुरागे व्रजपुरे-बास ।
सखीगण-गणनाते, आमारे गणिबे ताते,
तबहुँ पूरब अभिलाष ।।५।।

सखीनां सङ्गिनीरूपामात्मानं वासनामयीम् ।
आज्ञासेवापरां तत्तद्कृपालङ्कार भूषिताम् ।।
कृष्णं स्मरन् जनञ्चास्य प्रेष्ठं निज समीहितम् ।
तत्तत् कथा रतश्चासौ कुर्याद्वासं व्रजे सदा ।।

युगल-चरण-प्रति, परम आनन्द तति,
रति प्रेमा हउक परबन्धे ।
कृष्णनाम राधानाम, उपासना रसधाम,
चरणे पड़िया परानन्दे ।।
मनेर स्मरन प्राण, मधुर मधुर धाम,

विलास युगल स्मृति-सार ।

साध्य साधन एइ, इहा बइ आर नाइ,

एइ तत्त्व सर्वतत्व-सार ।।

जलद-सुन्दरकान्ति, मधुर मधुर भाँति,

वैदगधि, अवधि सुवेश ।

पीतवसनधर, आभरण मणिवर,

मयूर चन्द्रिका करु केश ।।

मृगमद-चन्दन, कुङ्कुम विलेपन,

मोहन मुरति-त्रिभङ्ग ।

नवीन कुसुमावली, श्रीअङ्गे शोभये भालि,

मधुलोभे फिरे मत्त-भृङ्ग ।।

ईषत् मधुर-स्मित, वैदगधि लीलामृत,

लुबधल व्रजवधूवृन्दे ।

चरण-कमल पर, मणिमय नूपुर,

नखमणि झलमल चन्द्रे ।।

नूपुर-मुरली ध्वनि, कुलबधू मरालिनी,

शुनिया रहिते नारे घरे ।

हृदये बाड़ये रति, जेन मिले पति सती,

कुलेर धरम जाय दूरे ।।

गोविन्द-शरीर नित्य ताहार सेवक सत्य,

वृन्दावन भूमि तेजोमय ।

ताहाते यमुना जल, करे नित्य झलमल,

तारतीरे अष्टकुञ्ज हय।।

शीतल किरण कर, कल्पतरु गुणधर,

तरुलता षड़ ऋतु सेवा ।
पूर्णचन्द्रसमज्योति, चिदानन्दमयमूर्त्ति,
महालीला दरशनलोभा।।
गोविन्द आनन्दमय, निकटे वनिताचय,
बिहरे मधुर अति शोभा ।
दुँहु प्रेमे डगमगि, दुँहेदोँहा अनुरागी,
दुँहुरूपे दुँहु मनलोभा।।
व्रजपुर वनितार, चरण-आश्रय सार,
कर मन एकान्त करिया ।
अन्यबोल गण्डगोल, ना शुनिह उतरोल,
राख प्रेम हृदये भरिया ।।
पाप-पुण्यमय देही, सकल अनित्य एहि,
धन जन सब मिछा धन्द ।
मरिले जाइबे कोथा, ना पाओ ताहाते व्यथा,
निति कर तबु कार्य मन्द ।।
राजार जे राज्यपाट, जेन नाटुयार नाट,
देखिते देखिते किछु नय ।
हेन माया करे जेइ, परम ईश्वर सेइ,
ताँरे मन! सदा कर भय ।।
पाप ना करिह मन, अधम से पापिजन,
तारे मन दूरे परिहरि ।
पुण्य जे सुखेर धाम, तार न लइओ नाम,
पुण्य मुक्ति दुइ त्याग करि ।।
प्रेमभक्ति सुधा निधि, ताहे डुब निरवधि,

आर जत क्षारनिधि प्राय ।

निरन्तर सुख पाबे, सकल सन्ताप जावे

परतत्व कहिल उपाय ।।

अन्येर परश जेन, नहे कदाचित हेन,

इहाते हइबे सावधान ।

राधाकृष्ण नाम गान, एइ से परम ध्यान,

आर ना करिह परमाण ।।

कर्मी ज्ञानी मिश्रभक्त, ना हबे ताये अनुरक्त,

शुद्ध भजनेते कर मन ।

व्रज जनेर जेइ मत, ताहे हवे अनुरत,

एइ से परम-तत्त्व धन ।।

प्रार्थना करिब सदा, शुद्ध भावे प्रेम कथा,

नाम मन्त्रे करिया अभेद ।

आस्तिक करिया मन, भज राङ्गा श्रीचरण,

पाप-ग्रन्थि हवे परिच्छेद ।।

राधाकृष्ण श्रीचरण, ताते सब समर्पन,

श्रीचरणे बलिहारी जाऊँ ।

तुया नाम शुनि शुनि, भक्तमुखे पुनि पुनि,

परम आनन्द सुख पाऊँ ।।

हेम गौरी-तनु राइ, आँखि दरशन चाइ,

रोदन करिब अभिलाषे ।

जलधर ढर-ढर, अङ्ग अति मनोहर,

रूपे गुणे भुवन प्रकाशे ।।

सखीगण चारि पाशे, सेवा करे अभिलाषे,

परम से सेवा-सुख धरे ।
एइ मने आशा मोर, ऐछे रसे हञा भोर,
नरोत्तम सदाइ विहरे ।।६।।

राधाकृष्ण करौं ध्यान, स्वपने ना बोल आन,
प्रेम बिनु आर नाहि चाङ ।
युगलकिशोर-प्रेम, लक्षवान जेन हेम,
आरति पिरीति रसे ध्याङ ।।
जल बिनु जेन मीन, दुःख पाय आयुहीन,
प्रेम विनु एइ मत भक्त ।
चातक जलद-गति, एमति एकान्त-रीति,
जाने जेइ सेइ अनुरक्त ।।
मरन्द भ्रमरा येन, चकोर चन्द्रिका तेन,
पतिव्रता जनेर येन पति ।
अन्यत्र ना चले मन, येन दरिद्रेर धन,
एइ मत प्रेमभक्तिरीति ।।
विषय गरलमय, ताहे मान सुखचय,
से ना सुख, दुःख करि मान ।
गोविन्द-विषय रस, सङ्ग कर तार दास,
प्रेमभक्ति सत्य करि जान ।।
मध्ये मध्ये आछे दुष्ट, दृष्टि करि हय रुष्ट,
गुण के विगुण करि माने ।
गोविन्द-विमुखजने, स्फूँर्त्ति नहे हेन धने,
लौकिक करिया सब जाने ।।

अज्ञान विशुद्ध यत, नाहि लय सतमत,
अहङ्कारे ना जाने आपना ।
अभिमानी भक्तिहीन, जग माझे सेई दीन,
वृथा तार अशेष भावना ।।
आर सब परिहरि परम नागर हरि ।
सेव मन ! करि प्रेम आशा ।
एक व्रजपुर घरे, गोविन्द रसिकवरे,
करह सदाइ अभिलाषा ।।
नरोत्तम दास कहे, सदा मोर प्राण दहे,
हेन भक्त सङ्ग ना पाइया ।
अभाग्येर नाहि ओर, मिछाइ हइनु भोर,
दु:ख रहे अन्तरे जागिया ।।७।।

वचनेर अगोचर, वृन्दावन लीलास्थल,
स्वप्रकाश प्रेमानन्दघन ।
याहाते प्रकट सुख, नाहि जरा-मृत्यु दु:ख,
कृष्णलीलारस अनुक्षण ।।
राधाकृष्ण दुँहु प्रेम, लक्षवान जेन हेम,
याँहार हिल्लोल रससिन्धु ।
चकोर नयन प्रेम, काम-रति करो ध्यान,
पीरिति सुखेर दुँहु बन्धु ।।
राधिका प्रेयसी वरा, वामदिके मनोहरा,
कनक केशर-कान्ति धरे ।
अनुरागे रक्त-साड़ी, नीलपट्ट मनोहारी,

अङ्गे अङ्गे आभरण परे ।।

करये लोचन पान, रूप लीला दुँहु प्राण,

आनन्दे मगन सहचरी ।

वेदविधि अगोचर, रतन-वेदीर पर,

सेव निति किशोर-किशोरी ।।

दुर्लभ जनम हेन, नाहि भज हरि केन,

कि लागिया मर भवबन्धे ।

छाड़ अन्य क्रियाकर्म, नाहि देख वेद धर्म,

भक्ति कर कृष्णपद द्वन्दे ।।

विषय विषम गति, नाहि भज व्रजपति,

श्रीनन्दनन्दन सुखसार ।

स्वर्ग आर अपवर्ग, संसार नरक भोग,

सर्वनाश जनम विकार ।।

देहे ना करिह आस्था, मन्दरीते यम शास्ता

दुःखेर समुद्र कर्मगति ।

देखिया शुनिया भज, साधुशास्त्र मत यज

युगलचरणे कर रति ।।

ज्ञानकाण्ड कर्मकाण्ड, केवल विषेर भाण्ड,

अमृत बलिया येवा खाय ।

नाना योनि सदा फिरे, कदर्य्य भक्षण करे,

तार जन्म अधःपाते जाय ।।

राधाकृष्णे नाहि रति, अन्य देवे बले पति,

प्रेमभक्ति किछु नाहि जाने ।

नाहि भक्तिर सन्धान, भरमे करये ध्यान,

वृथा तार से छार भावने ।।

ज्ञान कर्म करे लोक, नाहि जाने भक्तियोग,
नाना मते हइया अज्ञान ।
तार कथा नाहि शुनि, परमार्थ तत्त्व जानि,
प्रेम-भक्ति भक्तगण प्राण ।।
जगत् व्यापक हरि, अज-भव आज्ञाकारी,
मधुर मूरति लीलाकथा ।
एइ तत्त्व जाने येइ, परम उत्तम सेइ,
तार सङ्ग करिव सर्वथा ।।
परम नागर कृष्ण, ताहे हउ अति-तृष्ण,
भज ताँरे व्रजभाव लञा ।
रसिक भकत सङ्गे, रहिव पिरीति रङ्गे,
व्रजपुरे वसति करिञा ।।
श्रीगुरु भकतजन, ताँहार चरणे मन,
आरोपिया कथा अनुसारे ।
सखीर सर्वथा मत, हइया ताहार यूथ,
सदा विहरिव व्रजपुरे ।।
लीलारस सदा गान, युगलकिशोर ध्यान,
प्रार्थना करिव अभिलाषे ।
जीवने मरणे एइ, आर किछु नाइ चाइ,
कहे दीन नरोत्तम दासे ।।८।।

आन कथा ना शुनिव , आन कथा ना बलिव,
सकलि कहिब परमार्थ ।
प्रार्थना करिब सदा, लालसा अभीष्ट कथा,
इहा विनु सकलि अनर्थ ।।

ईश्वरेर तत्त्व यत, ताहा वा कहिब कत,
अनन्त अपार केवा जाने ।
व्रजपुर प्रेम नित्य, एइ ये परम सत्त्व,
भज भज अनुराग मने ।।
गोविन्द गोकुलचन्द्र, परम आनन्दकन्द,
परिवार-गोपगोपी सङ्गे ।
नन्दीश्वर याँर धाम, गिरिधारी याँर नाम,
सखी सङ्गे भज तारे रङ्गे ।।
प्रेमभक्ति तत्त्व एइ, तोमारे कहिनु भाइ,
आर दुर्वासना परिहरि ।
श्रीगुरु प्रसादे भाइ, ए सब भजन पाइ,
प्रेमभक्ति सखी अनुचरि ।।
सार्थक भजन-पथ, साधु सङ्गे अविरत,
स्मरण भजन कृष्णकथा ।
प्रेमभक्ति हय यदि, तबे हय मन शुद्धि,
तबे जाय हृदयेर व्यथा ।।
विषय विपत्ति जान, संसार स्वपन मान;
नरतनु भजनेर मूल ।
अनुरागे भज सदा, प्रेमभावे लीला-कथा
आर यत हृदयेर शूल ।।
राधिका-चरणरेणु, भूषण करिया तनु,
अनायासे पावे गिरिधारी ।
राधिका चरणाश्रय, करे येइ महाशय,

तारे मुञि याङ बलिहारी ।।

जय जय राधा-नाम, वृन्दावन यार धाम,
कृष्णसुख विलासेर निधि ।
हेन राधागुणगान, ना शुनिल मोर कान,
वञ्चित करिल मोरे विधि ।।

तार भक्तसङ्गे सदा, रसलीला-प्रेम कथा,
ये करे से पाय घनश्याम ।
इहाते विमुख येइ, तार कभु सिद्धि नाइ,
ना शुनिये येन तार नाम ।।

कृष्णनाम गाने भाइ, राधिका-चरण पाइ,
राधानाम गाने कृष्णचन्द्र ।
संक्षेपे कहिल कथा, घुचाह मनेर व्यथा,
दुखमय अन्य कथा द्वन्द्व ।।

अहङ्कार अभिमान, असत्-सङ्ग असत्-ज्ञान,
छाड़ि भज गुरु-पादपद्म ।
करि आत्म-निवेदन, देह-गेह परिजन,
गुरुवाक्य परम महत्त्व ।।

श्रीकृष्णचैतन्यदेव, निरवधि ताँरे सेव,
प्रेम-कल्पतरु वरदाता ।
व्रजराजनन्दन, राधिका-जीवन-धन,
अपरूप एइ सब कथा ।।

नवद्वीपे अवतरि, राधाभाव अङ्गीकरि,
भाव कान्ति अङ्गेर भूषण ।

तिन वाञ्छा अभिलाषी, शची गर्भे परकाशी,
सङ्गे लञा पार्षद गण ।।
गौरहरि अवतरि, प्रेमेर बादर करि,
साधिला मनेर निज काज ।
राधिकार प्राणपति, कि-भावे काँदये निति,
इहा बुझे भकत-समाज ।।
गुपते साधिवे सिद्धि, साधन नवधा भक्ति,
प्रार्थना करिव दैन्ये सदा ।
करि हरि-सङ्कीर्त्तन, सदाइ विमल मन,
इष्टलाभ बिने सब बाधा ।।
संसार बाटोयारे, काम-फाँसे बान्धि मारे,
फुत्कार करये हरिदास ।
करह भकत सङ्ग, प्रेमकथा रस-रङ्ग,
तबे हय विपद-विनाश ।।
स्त्री-पुत्र बान्धव जत, मरि जाय कत शत,
आपनाके हओ सावधान ।
मुञि से विषय हत, ना भजिनु हरिपद,
मोर आर नाहि परित्राण ।।
रामचन्द्र कविराज, सेइ सङ्गे मोर काज,
तार सङ्ग बिनु सब शून्य ।
यदि जन्म हय पुन, तार सङ्ग हय येन,
तबे हय नरोत्तम धन्य ।।
आपन भजन कथा ना कहिवे यथा तथा

इहाते हइवे सावधान ।
ना करिह केह रोष, ना लइह मोर दोष,
प्रणमह भक्तेर चरण ।।
श्रीगौराङ्ग प्रभु मोरे ये बलान वाणी ।
ताहा कहि भाल-मन्द किछुइ ना जानी ।।
लोकनाथ प्रभुर पद हृदये विलास ।
प्रेमभक्तिचन्द्रिका कहे नरोत्तम दास ।।

इति श्रीश्रीप्रेमभक्तिचन्द्रिका समाप्ता।।



श्रीश्रीनरोत्तम ठाकुर महाशयकृत प्रार्थना

(१)

गौराङ्ग बलिते हवे पुलक शरीर ।
हरि हरि बलिते नयने बहे नीर ।।
आर कबे निताइचाँद करुणा करिवे ।
संसार वासना मोर कबे तुच्छ हवे ।।
विषय छाड़िया कबे शुद्ध हवे मन ।
कबे हाम हेरव सेइ वृन्दावन ।।
रूप रघुनाथ पदे हइवे आकुति ।
कबे हाम हेरव से युगल पिरीति ।।
रूप रघुनाथ पदे रहु मोर आश ।
प्रार्थना करये सदा नरोत्तमदास ।।

(२)

हरि हरि! कि मोर करम गति मन्द ।
व्रजे राधाकृष्ण पद, ना सेविनु तिल आध,
ना बुझिनु रागेर सम्बन्ध ।।
स्वरूप सनातन रूप, रघुनाथ भट्टयुग,
भूगर्भ श्रीजीव लोकनाथ ।
इहाँ सबार पाद-पद्म, ना सेविनु तिल आध,
किसे मोर पुरिवेक साध ।।

कृष्णदास कविराज, रसिक भकत माझ,
ये रचिल चैतन्य-चरित ।
गौर गोविन्द लीला, शुनिले गलये शिला,
ना डुबिल ताहे मोर चित ।।
ताहार भक्तेर सङ्ग, ताँर सङ्गे याँर सङ्ग,
तार सङ्गे केन नैल वास ।
कि मोर दु:खेर कथा, जनम गोङानु वृथा,
धिक् धिक् नरोत्तमदास ।।

(३)

राधाकृष्ण ! निवेदन एइ जन करे ।
दौँह अति रसमय, सकरुण हृदय,
अवधान कर नाथ मोरे ।
हे कृष्ण गोकुल चन्द्र, हे गोपी प्राणवल्लभ,
हे कृष्णप्रिया शिरोमणि ।
हेम गौरी श्याम गाय, श्रवणे परश पाय,
गुन शुनि जुड़ाय पराणि ।।
अधम दुर्गति जने, केवल करुणा मने,
त्रिभुवने ए यश खेयाति ।
शुनिया साधुर मुखे, शरण लइनु सुखे,
उपक्षिले नाहि मोर गति ।।
जय राधे जय कृष्ण, जय जय राधे कृष्ण,
कृष्ण कृष्ण जय जय राधे ।
अञ्जलि मस्तके धरि, नरोत्तम भूमे पड़ि,
कहे दौँहे पुराओ मन साधे ।।

(४)

हरि ! हरि ! हेन दिन हइवे आमार ।
दोँह अङ्ग निरखिव, दोँह अङ्ग परशिव,
सेवन करिव दोँहाकार ।।
ललिता विशाखा सङ्गे, सेवन करिवे रङ्गे,
माला गाँथि दिव नाना फूले ।
कनक सम्पुट करि, कर्पूर ताम्बूल भरि,
योगाइव वदन-कमले ।।
राधाकृष्ण श्रीचरण, सेइ मोर प्राणधन,
सेइ मोर जीवन उपाय ।
जय पतित-पावन, देह मोरे एइ धन,
तुया बिने अन्य नाहि भाय ।।
श्रीगुरु करुणा-सिन्धु, अधम जनार बन्धु,
लोकनाथ लोकेर-जीवन ।
हा हा प्रभु ! कर दया, देह मोरे पद छाया,
नरोत्तम लइल शरण ।।

(५)

हरि हरि ! विफले जनम गोङाइनु ।
मनुष्य जनम पाइया, राधाकृष्ण ना भजिया,
जानिया शुनिया विष खाइनु ।।
गोलोकेर प्राणधन, हरिनाम सङ्कीर्त्तन,
रति न जन्मिल केने ताय ।
संसार विषानले, दिवा निशि हिया ज्वले,

जुड़ाइते ना कैनु उपाय ।।

ब्रजेन्द्रनन्दन जेइ, शचीसुत हैल सेइ,

बलराम हइल निताइ ।

दीनहीन यत छिल, हरिनामे उद्धारिल,

तार साक्षी जगाइ-माधाइ ।।

हा हा प्रभु नन्दसुत, वृषभानुसुतायुत,

करुणा करह एइ बार ।

नरोत्तमदास कय, ना ठेलिह राङ्गापाय,

तुया बिने के आछे आमार ।।

(६)

हरि हरि कबे मोर हइवे सुदिन ।
भजिब से राधाकृष्ण हैञा प्रेमाधीन ।।
सुयन्त्रे मिशाये गाव सुमधुर तान ।
आनन्दे करिव दोँहार रूपगुणगान ।।
राधिका गोविन्द बलि काँदिब उच्चैःस्वरे ।
भिजिवे सकल अङ्ग नयनेर नीरे ।।
एइ बार करुणा कर रूप-सनातन।
रघुनाथ दास मोर श्रीजीव जीवन।।
एइबार करुणा कर ललिता विशाखा।
सख्यभावे मोर प्रभु सुबलादि सखा।।
सबे मिलि कर दया पूरुक मोर आश ।
प्रार्थना करये सदा नरोत्तमदास ।।

(७)

प्राणेश्वर! निवेदन एइ जन करे ।

गोविन्द गोकुलचन्द्र, परम आनन्दकन्द,

गोपीकुल-प्रिय देह मोरे ।।

तुयाप्रिय पदसेवा, एइ धन मोरे दिवा,

तुमि प्रभु करुणार निधि ।

परम मङ्गल यश, श्रवणे परम रस,

कार किवा कार्य्य नहे सिद्धि ।।

दारुण संसार गति, विषयेते लुब्ध मति,

तुया विस्मरण शेल बुके ।

जर जर तनु मन, अचेतन अनुक्षण,

जीयन्ते मरण भेल दुःखे ।।

मो बड़ अधम जने, कर कृपा निरीक्षणे,

दास करि राख वृन्दावने ।

श्रीकृष्णचैतन्य नाम, प्रभु मोर गौर-धाम,

नरोत्तम लइल शरणे ।।

(८)

गोविन्द गोपीनाथ! कृपा करि राख निजपदे ।

काम क्रोध छय जने, लये फिरे नाना स्थाने,

विषय भुञ्जाय नाना मते ।।

हइया मायार दास, करि नाना अभिलाष,

तोमार स्मरण गेल दूरे ।

अर्थ लाभ एइ आशे, कपट वैष्णव-वेशे,

भ्रमिया बेड़ाइ घरे-घरे ।।

अनेक दु:खेर परे, लये छिले ब्रजपुरे,

कृपा डोर गलाय बाँधिया ।

दैव माया बलात्कारे, खसाइया सेइ डोरे,

भवकूपे दिलेक डारिया ।।

पुनः यदि कृपा करि, ए जनार केशे धरि,

टानिया तुलह ब्रजधामे ।

तबे से देखिए भाल, नतुवा पराण गेल,

कहे दीन दास नरोत्तमे ।।

(९)

मोर प्रभु मदनगोपाल !

श्रीगोविन्द गोपीनाथ, तुमि अनाथेर नाथ,

दया कर मुञि अधमेरे ।

संसार सागर घोरे, पड़ियाछि कारागारे,

कृपा डोरे बान्धि लह मोरे ।।

अधम चण्डाल आमि, दयार ठाकुर तुमि,

सुनियाछि वैष्णवेर मुखे ।

ए बड़ भरसा मने, लये फेल वृन्दावने,

वंशीवट येन देखिसुखे ।।

कृपा कर आगु गुरि, लह मोरे केशे धरि,

श्रीयमुना देह पदछाया ।

अनेक दिनेर आश, नहे येन नैराश,

दयाकर ना करिह माया ।।

अनित्य शरीर धरि, आपन-आपन करि,
पाछे-पाछे शमनेर भय ।
नरोत्तमदास भने, प्राण कान्दे रात्रि दिने,
पाछे व्रज प्राप्ति नाहि हय ।।

(१०)

धन मोर नित्यानन्द, पति मोर गौरचन्द्र,
प्राण मोर युगलकिशोर ।
अद्वैत आचार्य्य बल, गदाधर मोर कुल,
नरहरि विलसइ मोर ।।
वैष्णवेर पदधूलि, ताहे मोर स्नान-केलि,
तर्पण मोर वैष्णवेर नाम ।
विचार करिया मने, भक्तिरस आस्वादने,
मध्यस्थ श्रीभागवतपुराण ।।
वैष्णवेर उच्छिष्ट, ताहे मोर मन निष्ठ,
वैष्णवेर नामेते उल्लास ।
वृन्दावने चबुतारा, ताहे मोर मन घेरा,
कहे दीन नरोत्तमदास ।।

(११)

निताइ पद कमल, कोटि चन्द्र सुशीतल,
ये छायाय जगत जुड़ाय ।
हेन निताइ बिने भाइ, राधाकृष्ण पाइते नाइ,
दृढ़ करि धर निताइयेर पाय ।।

से सम्बन्ध नाहिं यार,	वृथा जन्म गेल तार,
सेइ पशु बड़ दुराचार ।
निताइ ना बलिल मुखे,	मजिल संसार सुखे,
विद्या-कुले कि करिबे तार ।।
अहङ्कारे मत्त हइया,	निताइ पद पासरिया,
असत्येरे सत्य करि मानि ।
निताइयेर करुणा हबे,	व्रजे राधाकृष्ण पावे,
भज निताइयेर चरण दुखानि ।।
निताइ चरण सत्य,	ताँहार सेवक नित्य,
निताइ पद सदा कर आश ।
नरोत्तम बड़ दुःखी,	निताइ मोरे कर सुखी,
राख राङ्गा चरणेर पाश ।।

(१२)

ओरे भाइ ! भज मोर गौराङ्गचरण ।
ना भजिया मैनु दुःखे,	डुबि गृह विषकूपे,
दग्ध कैल ए पाँच पराण ।।
तापत्रय विषानले,	अहर्निशि हिया ज्वले,
देह सदा हय अचेतन ।
रिपुवश इन्द्रिय हइल,	गोरापद पासरिल,
विमुख हैल हेन धन ।।
हेन गौर दयामय,	छाड़ि सब लाज भय,
काय मने लओरे शरण ।
पामर दुर्मति छिल,	तारे गोरा उद्धारिल,

तारा हैल पतित-पावन ।।
गोरा द्विज नटराजे, बान्धह हृदय माझे,
कि करिबे संसार शमन ।
नरोत्तम दास कहे, गोरा सम केह नहे,
ना भजिते देन प्रेमधन ।।

(१३)

गौराङ्गेर दुटी पद , यार धन सम्पद,
से जाने भकति-रस सार ।
गौराङ्गेर मधुर लीला, यार कर्णे प्रवेशिला,
हृदय निर्म्मल भेल तार ।।
ये गौराङ्गेर नाम लय, तार हय प्रेमोदय,
तारे मुञि याइ बलिहारी ।
गौराङ्ग गुणेते झुरे, नित्य लीला तारे स्फुरे,
से जन भकति अधिकारी ।।
गौराङ्गेर सङ्गीगणे, नित्य-सिद्ध करि माने,
से याय व्रजेन्द्रसुत पाश ।
श्रीगौड़मण्डल भूमि, येबा जाने चिन्तामणि,
तार हय व्रजभूमे वास ।।
गौर प्रेम रसार्णवे, से तरङ्गे जेवा डुबे,
से राधा-माधव अन्तरङ्ग ।
गृहे वा वनेते थाके, हा गौराङ्ग बले डाके,
नरोत्तम मागे तार सङ्ग ।।

(१४)

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु ! दया कर मोरे ।
तोमा बिने के दयालु जगत संसारे ।।
पतित पावन हेतु तव अवतार ।
मो सम पतित प्रभु ना पाइवे आर ।।
हा हा प्रभु नित्यानन्द! प्रेमानन्द सुखी ।
कृपावलोकन कर आमि बड़ दुःखी ।।
दया कर सीतापति अद्वैत गोसाइ ।
तव कृपाबले पाइ चैतन्यनिताइ ।।
हा हा स्वरूप सनातन रूप रघुनाथ ।
भट्टयुग श्रीजीव हा प्रभु लोकनाथ ।।
दया कर श्रीआचार्य प्रभु श्रीनिवास ।
रामचन्द्र सङ्ग माङ्गे नरोत्तमदास ।।

(१५)

ये आनिल प्रेमधन करुणा प्रचुर ।
हेन प्रभु कोथा गेला आचार्य्य ठाकुर ।।
काँहा मोर स्वरूप रूप काँहा सनातन ।
काँहा दास रघुनाथ पतित-पावन ।।
काँहा मोर भट्टयुग काँहा कविराज ।
एक काले कोथा गेल गोरा नटराज ।।
पाषाणे कुटिव माथा अनले पशिव ।
गौराङ्ग गुणेर निधि कोथा गेले पाव ।।
से सब सङ्गीर सङ्गे ये कैल विलास ।

से सङ्ग ना पाञा काँदे नरोत्तमदास ।।

(१६)

हरि हरि! बड़ शेल मरमे रहिल ।

पाइया दुर्ल्लभ तनु, श्रीकृष्णभजन बिनु,
जन्म मोर विफल हइल ।।

व्रजेंन्द्रनन्दन हरि, नवद्वीपे अवतरि,
जगत भरिया प्रेम दिल ।

मुञि से पामर मति, विशेषे कठिन अति,
तेइ मोर करुणा नहिल ।।

स्वरूपसनातन रूप, रघुनाथ भट्टयुग,
ताहाते ना हैल मोर मति ।

दिव्य चिन्तामणि धाम वृन्दावन हेन स्थान,
सेइ धामे ना कैनु वसित ।।

विशेष विषये मति, नहिल वैष्णवे रति,
निरन्तर खेद उठे मने ।

नरोत्तम दास कहे, जीवेर उचित नहे,
श्रीगुरु वैष्णव सेवा बिने ।।

(१७)

ठाकुर वैष्णव पद, अवनीर सम्पद,
शुन भाइ हञा एक मने ।

आश्रय लइया सेवे, सेइ कृष्ण भक्ति लभे,
आर सब मरे अकारणे ।।

वैष्णव चरण-जल,	प्रेमभक्ति दिते बल,
आर केह नहे बलवन्त ।
वैष्णव चरण-रेणु,	मस्तके भूषण बिनु,
आर नाहि भूषणेर अन्त ।।
तीर्थ जल पवित्र गुणे,	लिखियाछे पुराणे,
से सब भक्तिर प्रपञ्चन ।
वैष्णवेर पादोदक,	सम नहे एइ सब,
जाते हय वाञ्छित पूरण ।।
वैष्णव सङ्गेते मन,	आनन्दित अनुक्षण,
सदा हय कृष्ण परसङ्ग ।
दीन नरोत्तम काँदे,	हिया धैर्य्य नाहि बाँधे,
मोरदशा केन हैल भङ्ग ।।

(१८)

ठाकुर वैष्णवगण !	करि एइ निवेदन,
मो बड़ अधम दुराचार ।
दारुण संसार निधि,	ताहे डुबाइल विधि,
केशे धरि मोरे कर पार ।।
विधि बड़ बलवान्,	ना शुने धरम ज्ञान,
सदाइ करम पाशे बाँधे ।
ना देखि तारण लेश,	जत देखि सब क्लेश,
अनाथ कातरे तेञि काँदे ।।
काम क्रोध लोभ मोह,	मद अभिमान सह,
आपन-आपन स्थाने टाने ।

आमार ऐछन मन, फिरे जेन अन्धजन,
सुपथ-विपथ नाहि माने ।।
ना लइनु सत मत, असते मजिल चित,
तुया पाये ना करिनु आश ।
नरोत्तमदासे कय, देखि शुनि लागे भय,
तराइया लह निज पाश ।।

(१९)

एइ बार करुणा कर वैष्णव गोसाञि ।
पतित-पावन तोमा बिने केह नाइ ।।
याहार निकटे गेले पाप दूरे जाय ।
एमन दयाल प्रभु केवा कोथा पाय ?
गङ्गार परश हइले पश्चाते पावन ।
दर्शने पवित्र कर एइ तोमार गुण ।।
हरिस्थाने अपराधे तारे हरिनाम ।
तोमा स्थाने अपराधे नाहिक एड़ान ।।
तोमार हृदये सदा गोविन्द विश्राम ।
गोविन्द कहेन मम वैष्णव पराण ।।
प्रति जन्मे करि आशा चरणेर धूलि ।
नरोत्तमे कर दया आपनार बलि ।।

(२०)

कि रूपे पाइव सेवा मुइ दुराचार ।
श्रीगुरु वैष्णवे रति ना हइल आमार ।।

अशेष मायाते मन मगन हइल ।
वैष्णवेते लेश मात्र रति ना जन्मिल ।।
गले फाँस दिते फिरे माया से पिचाशी ।
विषये भुलिया अन्ध हैनु दिवा निशि ।।
इहारे करिया जय छाड़ान ना जाय ।
साधु कृपा बिना आर नाहिक उपाय ।।
अदोष दरशि प्रभु पतित उद्धार ।
एइ बार नरोत्तमे करह निस्तार ।।

(२१)

हरि हरि! कि मोर करम अभाग ।
विफले जीवन गेल, हृदये रहिल शेल,
नाहि भेल हरि अनुराग ।।
यज्ञ दान तीर्थ स्नान, पुण्य-कर्म जप ध्यान,
अकारणे सबे गेल मोहे ।
बुझिलाम मने हेन, उपहास हय जेन,
वस्त्रहीन अलंकार देहे ।।
साधुमुखे कथामृत, शुनिया विमल चित,
नाहि भेल अपराध कारण ।
सतत असत सङ्ग, सकलि हइल भङ्ग,
कि करिव आइले शमन ।।
श्रुति स्मृति सदा कय, शुनियाछि एइ हय,
हरि पद अभय शरण ।
जनम लइया सुखे, कृष्ण ना बलिनु मुखे

ना करिनु से रूप भावन ।।

राधाकृष्ण दुँहु पाय, तनु मन रहु ताय,

आर दूरे याउक वासना ।

नरोत्तमदासे कय, आर मोर नाहि भय,

तनु मन सँपिनु आपना ।।

(२२)

हरि ब'लव आर मदनमोहन हेरिब गो ।

एइरूपे व्रजेर पथे कबे चलब गो ।।

याव गो व्रजेन्द्रपुर, हब गोपिकार नूपुर,

तादेर चरणे मधुर-मधुर बाजिब गो ।

विपिने विनोद खेला, सङ्गते राखालेर मेला,

ताँदेर चरणेर धूला माखिब गो ।।

राधाकृष्णेर रूप माधुरी, हेरिब दु'नयन भरि,

निकुञ्जेर द्वारे द्वारी रहिब गो ।

तोमरा सब व्रजवासी, पुराओ मनेर अभिलाष-इ,

कबे श्रीकृष्णेर वाँशी शुनिव गो ।।

एइ देह अन्तिमकाले, राखिब श्रीयमुनार जले,

जय राधा श्रीकृष्ण ब'ले भासिब गो ।

कहे नरोत्तम दास, ना पूरिल अभिलाष,

कबे आर ब्रजवास करिब गो ।।

(२३)

हरि हरि! आर कि एमन दशा हव ।

ए भव-संसार त्यजि, परम आनन्दे मजि,
आर कबे व्रजभूमे जाव ।
सुखमय वृन्दावन, कबे हवे दरशन,
से धूलि लागिबे कबे गाय ।
प्रेमे गदगद हैञा, राधाकृष्ण नाम लैञा,
कान्दिया बेड़ाइव उभराय ।।
निभृते निकुञ्जे जाञा, अष्टाङ्गे प्रणाम हैञा,
डाकिब हा राधानाथ बलि ।
कबे यमुनार तीरे, परश करिब नीरे,
कबे पिब करपुटे तुलि ।।
आर कबे एमन हब, श्रीरासमण्डले जाब,
कबे गड़ागड़ि दिव ताय ।
वंशीवट छाया पाञा, परम आनन्द हञा,
पड़िया रहिब तार छाय ।।
कबे गोवर्द्धन गिरि, देखिब नयन भरि,
कबे हबे राधाकुण्डे वास ।
भ्रमिते भ्रमिते कबे, ए देह पतन हबे,
कहे दीन नरोत्तमदास ।।

(२४)

हरि हरि ! आर कबे पालटिबे दशा ।
ए सब करिया वामे, जाव वृन्दावन धामे,
एइ मने करियाछि आशा ।।
धन-जन पुत्र-दारे, ए सब करिया दूरे,
एकान्त हइया कबे जाब ।

सब दु:ख परिहरि, वृन्दावने वास करि,
माधुकरी मागिया खाइव ।।
यमुनार जल जेन, अमृत समान हेन,
कबे पिब उदर पुरिया ।
कबे राधाकुण्ड जले, स्नान करि कुतूहले,
श्यामकुण्डे रहिव पड़िया ।।
भ्रमिव द्वादश वने, रसकेलि जे जे स्थाने,
प्रेमावेशे गड़ागड़ि दिया ।
सुधाइव जने-जने, व्रजवासिगण स्थाने,
निवेदिव चरणे धरिया ।।
भजनेर स्थान कबे, नयन गोचर हबे,
आर यत आछे उपवन ।
तार मध्ये वृन्दावन, नरोत्तमदासेर मन,
आशा करे युगलचरण ।।

(२५)

करङ्ग कौपीन लञा, छेँड़ा कान्था गाय दिया,
तेयागिब सकल विषय ।
कृष्णे अनुराग हबे, व्रजेर निकुञ्जे कबे,
जाइया करिब निजालय ।।
हरि हरि! कबे मोर हइबे सुदिन ।
फलमूल वृन्दावने, खाञा दिवा-अवसाने,
भ्रमिव हइया उदासीन ।।
शीतल यमुना जले, स्थान कुतूहले,

प्रेमावेशे आनन्दित हञा ।
बाहुर उपर बाहुतुलि, वृन्दावने कुलि कुलि,
कृष्ण बलि बेड़ाब काँदिया ।।
देखिब संकेत स्थान, जुड़ाबे तापित प्राण,
प्रेमावेशे गड़ागड़ि दिव ।
काँहा राधा! प्राणेश्वरि! काँहा गिरिवरधारि,
काँहा नाथ! बलिया डाकिब ।।
माधवी कुञ्जेरोपरि, सुखे बसि शुकशारी,
गाइवेक राधाकृष्ण रस ।
तरुमूले बसि ताहा, शुनि जुड़ाइवे हिया,
कबे सुखे गोङाव दिवस ।।
श्रीगोविन्द गोपीनाथ, श्रीमती-राधिका-साथ,
देखिब रतन सिंहासने ।
दीन नरोत्तम दास, करये दुर्लभ आश,
एमति हइवे कत दिने ।।

(२६)

हरि हरि ! कबे हव वृन्दावनवासी ।
निरखिब नयने युगल रूपराशि ।।
त्यजिया शयन सुख विचित्र पालङ्क ।
कबे व्रजेर धूलाय धूसर हबे अङ्ग ।।
षड़रस भोजन दूरे परिहरि ।
कबे व्रजे मागिया खाइब माधुकरी ।।
परिक्रमा करिया बेड़ाब वने वने ।

विश्राम करिब जाइ यमुना पुलिने ।।
ताप दूर करिब शीतल वंशीवटे ।
(कबे) कुञ्जे बैठब हाम वैष्णव निकटे ।
नरोत्तम दास कहे करि परिहार ।
कबे वा एमन दशा हइबे आमार ।।

(२७)

आर कि एमन दशा हब । सब छाड़ि वृन्दावने जाब ।।
आर कबे श्रीरास मण्डले । गड़ागड़ि दिव कुतूहले ।।
आर कबे गोवर्द्धन गिरि । देखिव नयन यूग भरि ।।
श्यामकुण्डे राधाकुण्डे स्नान। करि कबे जुड़ाब पराण।।
आर कबे यमुनार जले । मज्जने हइब निरमले ।।
साधुसङ्गे वृन्दावने वास। नरोत्तमदासकरे आश।।

(२८)

राधा-कृष्ण सेवोँ मुञिँ जीवने-मरणे ।
ताँर स्थान ताँर लीला देखो रात्रि दिने ।।
जे स्थाने लीला करे युगल किशोर ।
सखीर संगिनी हञा ताहे हङ भोर ।।
श्रीरूपमञ्जरी पद सेवोँ निरविधि ।
ताँर पादपद्म मोर मन्त्र महौषधि ।।
श्रीरतिमञ्जरी देवी ! मोरे कर दया ।
अनुक्षण देह तुया पादपद्म छाया ।।
श्रीरसमञ्जरी देवी! कर अवधान ।
अनुक्षण देह तुया पादपद्म ध्यान ।।

वृन्दावने नित्य नित्य युगल-विलास ।
प्रार्थना करये सदा नरोत्तमदास ।।

(२९)

राधाकृष्ण प्राण मोर युगलकिशोर ।
जीवने मरणे गति आर नाहि मोर ।।
कालिन्दीर कूले केलिकदम्बेर वन ।
रतन वेदीर उपर बसाब दुजन ।।
श्यामगौरी अङ्गे दिव (चुया) चन्दनेर गन्ध ।
चामर ढुलाब कबे हेरिब मुखचन्द्र ।।
गाँथिया मालतीर माला दिव दौँहार गले ।
अधरे तुलिया दिव कर्पूर ताम्बूले ।।
ललिता विशाखा आदि यत सखीवृन्द ।
आज्ञाय करिव सेवा चरणारविन्द ।।
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभुर दासेर अनुदास ।
सेवा अभिलाष करे नरोत्तमदास ।।

(३०)

हरि हरि! कबे मोर हइबे सुदिन ।
केलि कौतुक रङ्गे करिब सेवन ।।
ललिता विशाखा सने, यतेक सखीर गणे
मण्डली करिब दौँहा मेलि ।
राइकानु करे धरि, नृत्य करे फिरि फिरि
निरखि गोङाव कुतूहली ।।

अलस-विश्राम-घरे, गोवर्द्धन गिरिवरे ।
राइ कानु करिबे शयने ।
नरोत्तमदासे कय, एइ जेन मोर हय ।
अनुक्षण चरण सेवने ।।

(३१)

गोवर्द्धन गिरिवर, केवलनिर्ज्जन स्थल,
राइ कानु करिबे शयने ।
ललिता विशखा सङ्गे, सेवन करिब रङ्गे,
सुखमय रातुल-चरणे ।।
कनक-सम्पुट करि, कर्पूर चन्दन ताम्बूल पुरि,
जोगाइब वदन कमले ।
मणिमय किङ्किणी, रतननूपुर आनि,
पराइव चरण युगले ।।
कनक कटोरा पुरि, कर्पूर, चन्दन भरि,
कबे दिव दुजनार गाय ।
मल्लिका मालती यूथी, नाना फुले माला गाथि,
कबे दिव दोँहार गलाय ।।
सुवर्णेर झारि करि, राधाकुण्डे जल पुरि,
दोँहाकार अङ्गेते राखिब ।
गुरुरूपा सखी वामे, त्रिभङ्ग भङ्गिम ठामे,
चामरेर बातास करिब ।।
दोँहार कमल-आँखि, पुलक हइया देखि,
दुँहु पद परशिव कबे ।

चैतन्यदासेर दास, मने मात्र अभिलाष,
नरोत्तम दासे सदा स्फुरे ।।

(३२)

हरि हरि! आर कि एमन दशा हव ।
कबे वृषभानुपुरे, आहीरी गोपेर घरे,
तनया हइया जनमिब ।।
यावटे आमार कबे, ए पाणिग्रहण हबे,
बसति करिब कबे ताय ।
सखीर परम श्रेष्ठ, ये ताहार हय प्रेष्ठ,
सेवन करिब तार पाय ।।
तँह कृपावान् हइया, रातुल चरणे लइया,
आमारे करिबे समर्पण ।
सफल हइबे दशा, पुरिबे मनेर आशा,
सेवि दुँहार युगलचरण ।।
वृन्दावने दुइजन, चतुर्दिके सखीगण,
सेवन करिब अवशेषे ।
सखीगण चारिभिते, नाना यन्त्र लइया हाथे,
देखिव मनेर अभिलाषे ।।
दुँहु चाँदमुख देखि, जुड़ाबे तापित आँखि,
नयने बहिबे अश्रुधार ।
वृन्दार निदेश पाव, दोँहार निकटे जाब,
हेन दिन हइबे आमार ।।
श्रीरूपमञ्जरी सखी, मोरे अनाथिनी देखि,

राखिबे रातुल दुटी पाय।

नरोत्तमदास भने, प्रिय नर्म्म सखीगणे,

कबे दासी करिबे आमाय ।।

(३३)

हरि हरि ! आर कि एमन दशा ह'व ।

छाड़िया पुरुष देह, कबे वा प्रकृति ह'ब,

दुँहु अङ्गे चन्दन पराव ।।

टानिया बाँधिव चूड़ा, नव गुञ्जाहारे बेड़ा,

नाना फूले गाँथि दिव हार ।

पीतबसन अङ्गे, पराइव सखी सङ्गे,

वदने ताम्बूल दिव आर ।।

दुँहु रूप मनोहारी, हेरिव नयन भरि,

नीलाम्बरे राइ साजाइया ।

नवरत्न जरि आनि, बाँधिव विचित्र वेणी,

ताहे फुलमालती गाँथिया ।।

से ना रूपमाधुरी, देखिव नयन भरि,

एइ करि मने अभिलाष ।

जय रूप सनातन, देह मोरे एइ धन,

निवेदये नरोत्तमदास ।।

(३४)

प्राणेश्वरि! एइबार करुणा कर मोरे ।

दशनेते तृण धरि, अञ्जलि मस्तके करि,

एइजन निवेदन करे ।।

प्रिय सहचरी सङ्गे, सेवन करिब रङ्गे,
अङ्गे वेश करिबेक साधे ।
राख एइ सेवा काजे, निज पदपङ्कजे,
प्रिय सहचरीगण माझे ।।
सुगन्धि चन्दन, मणिमय आभरण,
कौषिक वसन नाना रङ्गे ।
एइ सब सेवा याँर, दासी जेन हङ ताँर,
अनुक्षण थाकि ताँर सङ्गे ।।
जल सुवासित करि, रतन भृङ्गारे भरि,
कर्पूर वासित गुया पान ।
ए सब साजाइया डाला, लवङ्ग मालती माला,
भक्ष्य द्रव्यनाना अनुपाम ।।
सखीर इंगित हबे, ए सब आनिया कबे,
योगाइव ललितार काछे ।
नरोत्तमदास कय, एइ जेन मोर हय,
दाँड़ाइया रहु सखीर पाछे।।

(३५)

अरुण-कमल-दले, शेज बिछाइव,
बसाइव किशोरकिशोरी ।
अलका आवृतमुख, पङ्कज मनोहर,
मरकत श्याम हेम गौरी ।।
प्राणेश्वरि! कवे मोरे हवे कृपादिठि।

आज्ञाय आनिया कबे, विविध फूलवर,
शुनव वचन दुँहु मिठि ।
मृगमद तिलक, सिन्दूर वनायब,
लेपव चन्दन गन्धे ।।
गाँथि मालतीफूल, हार पहिराओव,
धाओयाव मधुकरवृन्दे ।
ललिता आमारे कबे , वीजन देओयव,
बीजव मारुत मन्दे ।।
श्रमजल सकल, मिटाव दुँहु कलेवर,
हेरव परम आनन्दे ।
नरोत्तमदास, आश पदपंकज,
सेवन माधुरी-पाने ।
होओयव हेन दिन, ना देखिये कोन चिह्न,
दुँहुजन हेरव नयाने ।।

(३६)

कुसुमित वृन्दावने, नाचत शिखिगणे,
पिककुल भ्रमर झंकारे ।
प्रिय सहचरी सङ्गे, गाइया जाइवे रङ्गे,
मनोहर निकुञ्ज कुटीरे ।।
हरि हरि ! मनोरथ फलिबे आमारे ।
दुँहुक मन्थर गति, कौतुके हेरव अति,
अङ्ग भरि पुलक अन्तरे ।
चौदिके सखीर माझे, रधिकार इंगिते,

चिरुणी लइया करे करि ।।

कुटिल कुन्तल सब, विथारिया आँचरव,

बनाइव विचित्र कबरी ।

मृगमद मलयज, सब अङ्गे लेपव,

पराइव मनोहर हार ।

चन्दन-कुंकुमे, तिलक बनाइव,

हेरव मुख सुधाकर ।।

नील-पट्टाम्बर, यतने पराइव,

पाये दिव रतन-मञ्जीरे ।

भृङ्गारेर जले राङ्गा, चरण धोयाइव,

मुछव आपन चिकुरे ।।

कुसुम-कमलदले, शेज बिछाइव,

शयन कराब दोँहाकारे ।

धवल चामर आनि, मृदु मृदु वीजब,

शरमित दुँहुक शरीरे ।।

कनक सम्पुट करि, कर्पूर ताम्बूल भरि,

जोगाइव दोँहार वदने ।

अधर सुधारसे, ताम्बूल सुबासे,

भोखब अधिक यतने ।।

श्रीगुरु करुणासिन्धु, लोकनाथ दीनबन्धु,

मुइ-दीने कर अवधान ।

राधाकृष्ण वृन्दावन, प्रियनर्म्मसखिगण,

नरोत्तम मागे एइ दान ।।

(३७)

हरि हरि! कबे मोर हइबे सुदिन ।

गोवर्द्धन गिरिवरे, परम निभृत घरे,

राइकानु कराब शयन ।।

भृङ्गारेर जले राँगा, चरण धोयाइव,

मुछाव आपन चिकुरे ।

कनक सम्पुट करि, कर्पूर ताम्बूल पुरि,

जोगाइव दुहुँक अधरे ।।

प्रिय-सखीगण सङ्गे, सेवन करिब रङ्गे,

चरण सेविव निज करे ।

दुहुँक कमल दिठि, कौतुके हेरव,

दुँहु अङ्ग पुलक अन्तरे ।।

मल्लिका मालती यूथी, नाना फूले मालागाँथि,

कबे दिब दोँहार गलाय ।

सोनार कटोरा करि, कर्पूर चन्दन भरि,

कबे दिब दोँहाकार गाय ।।

आर कबे एमन हब, दुँहु मुख निरखिव,

लीलारस निकुञ्जशयने ।

श्रीकुन्दलतार सङ्गे, केलि कौतुक रङ्गे,

नरोत्तम करिबे श्रवणे ।।

(३८)

हरि हरि! कवे नाकि हेन दशा हवे।

ललिता विशाखा सङ्गे, सेवन करिव रङ्गे,

आपना बलिया आज्ञादिवे।।

वृषभानु किशोरी, तार प्रिय सहचरी,

सेइ यूथे हइवे गमन।

निकुञ्ज कुटीर वने, मिलाइब दुइ जने,

प्रमानन्दे करिब सेवन।।

श्रीरूपमञ्जरी कबे, सेवाय युकति दिवे,

समय बुझिया अनुमाने।

लीला-परिश्रम जानि, अगुरु-चन्दन आनि,

लेपन करिब दुइजने।।

माला गाँथि नाना फुले, पराइब दुहुँ गले,

सदा करि चामर व्यजने।

कनक-सम्पुट करि, ताम्बुल कर्पूर भरि,

योगाइव दुहार वदने।।

श्रीचैतन्य शचीसुत, मोर प्रभु लोकनाथ,

यदि दास करे राङ्गा पाय।

श्रीआचार्य श्रीनिवास, रामचन्द्र तार दास,

नरोत्तम सङ्ग सेवा चाय।।

(३९)

हरि हरि! कत दिने हेन दशा हव।

श्रीरसमञ्जरी सङ्गे, श्रीमणिमञ्जरी रङ्गे,

श्रीरूपेर अनुगा हइव।।

सुशीतल वृन्दावन, रत्नवेदी सुशोभन,

ताहे मणिमय सिंहासन।

हेम-नील-कान्तिधर,　　　राइकानु सुन्दर,
ताहे वसाइव दुइजन।।
सखीर आदेश हवे,　　　चामर दुलाव कबे,
ताम्बुल योगाब चाँद-मुखे।
आनन्दित ह'ब सदा,　　　शुद्धभावे प्रेमकथा,
दुँहार पिरीति रससुखे।।
मल्लिका मालती यूथी,　　　नाना फुले माला गाँथि,
पराइब दुँहार गलाये।
रसेर आलस-काले,　　　वसिया चरण तले,
सेवन करिब दुँहार पाये।।
राधाकृष्ण प्राणपति,　　　जीवने मरणे गति,
इहा बिने आर नाहि मने।
श्रीकृष्णचैतन्य प्राण,　　　स्वरूप-रूप-सनातन,
नरोत्तमेर एइ निवेदन।।

(४०)

प्रभु हे! एइबार करह करुणा ।
युगल चरण देखि,　　　सफल करिब आँखि,
ऐइ मोर मनेर कामना ।।
निज-पद सेवा दिवा,　　　नाहि मोरे उपेखिवा,
दुहुँ पहुँ करुणासागर।
दुँहु बिनु नाहि जानो,　　　एइ बड़ भाग्य मानो,
मुइ बड़ पतित पामर ।।
ललिता आदेश पाञा,　　　चरण सेविव जाञा,

प्रियसखी-सङ्गे हय मने ।

दुँहुदाता-शिरोमणि, अति दीन मोरे जानि,

निकटे चरण दिबे दाने ।।

पाब राधाकृष्ण पा, घुचिबे मनेर घा,

दूरे जाबे ए सब विकल ।

नरोत्तमदासे कय, एइ बाञ्छा सिद्धि हय,

देह-प्राण सकल सफल ।।

(४१)

हरि हरि ! कि मोर करम अतिमन्द ।

विषये कुटिल मति, सत्सङ्गे ना हैल रति,

कि से आर तरिबार पथ ।।

स्वरूप सनातन रूप, रघुनाथ भट्टयुग,

लोकनाथ सिद्धान्त-सागर ।

शुनिताम से सब कथा, घुचित मनेर व्यथा,

तबे भाल हइत अन्तर ।।

यखन गौर नित्यानन्द, अद्वैतादि भक्तवृन्द,

नदीया नगरे अवतार।

तखन ना हैल जन्म, एवे देहे किवा कर्म्म,

मिछा मात्र बहि फिरि भार ।।

हरिदास आदि बुले, महोत्सव आदि करे,

ना हेरिनु से सुखविलास ।

कि मोर दुःखेर कथा, जनम गोङानु वृथा,

धिक्-धिक् नरोत्तमदास ।।

(४२)

श्रीरूप मञ्जरी पद, सेइ मोर सम्पद,
सेइ मोर भजन-पूजन ।
सेइ मोर प्राणधन, सेइ मोर आभरण,
सेइ मोर जीवनेर जीवन ।।
सेइ मोर रसनिधि, सेइ मोर बाँछा सिद्धि,
सेइ मोर वेदेर धरम ।
सेइ व्रत सेइ तप, सेइ मोर मन्त्रजप,
सेइ मोर धरम करम ।।
अनुकूल हबे विधि, से पदे हइबे सिद्धि,
निरखिव ए दुइ नयाने ।
से रूपमाधुरीराशि, प्राणकुवलयशशी,
प्रफुल्लित हबे निशि दिने ।।
तुया अदर्शन अहि, गरले जारल देहि,
चिरदिन तापित जीवन ।
हा हा प्रभु! कर दया, देह मोरे पद छाया,
नरोत्तम लइल शरण ।।

(४३)

शुनियाछि साधु मुखे बले सर्वजन ।
श्रीरूप कृपाय मिले युगल चरण ।।
हा हा प्रभु! सनातन गौर-परिवार ।
सबे मिलि वाञ्छा पूर्ण करह आमार ।।
श्रीरूपेर कृपा जेन आमा प्रति हय ।

से पद आश्रय जार सेइ महाशय ।।
प्रभु लोकनाथ कबे सङ्गे लइया जाबे ।
श्रीरूपेर पाद पद्मे मोरे समर्पिबे ।।
हेन कि हइबे मोर नर्म्म सखीगणे ।
अनुगत नरोत्तमे करिबे शासने ।।

(४४)

'एइ नव दासी' बलि श्रीरूप चाहिबे ।
हेन शुभक्षण मोर कत दिने हबे ।।
शीघ्र आज्ञा करिवेन "दासी हेथा आय ।
सेवार सुसज्जा कार्य करह त्वराय" ।।
आनन्दित हञा हिया ताँर आज्ञा बले ।
पवित्र मनेते कार्य्य करिव तत्काले ।।
सेवार सामग्री रत्न थालाते करिया ।
सुवासित वारि स्वर्णझारिते पुरिया ।।
दोँहार सम्मुखे लये दिब शीघ्रगति ।
नरोत्तमेर दशा कबे हइबे एमति ।।

(४५)

श्रीरूप-पश्चाते आमि रहिब भीत हञा ।
दोँहे पुन कहिबेन आमा पाने चाञा ।।
सदय हृदये दोँहि कहिबेन हासी ।
कोथाय पाइले रूप! एइ नव दासी ।।
श्रीरूपमञ्जरी तबे दोँह वाक्य शुनि ।

मञ्जुलाली दिल मोरे एइ दासी आनि ।।
अति नम्रचित्त आमि इहारे जानिल ।
सेवा कार्य्य दिया तबे हेथाय राखिल ।।
हेन तत्त्व दोँहाकार साक्षाते कहिया ।
नरोत्तमे सेवाय दिबे नियुक्त करिया ।।

(४६)

हा हा प्रभु लोकनाथ! राख पादद्वन्द्वे ।
कृपादृष्टे चाह यदि हइया आनन्दे ।।
मनोवाञ्छा सिद्धि तबे हङ पूर्णतृष्ण ।
हेथाय चैतन्य मिले सेथा राधाकृष्ण ।।
तुमि ना करिले दया के करिबे आर ।
मनेर वासना पूर्ण कर एइ बार ।।
ए तिन-संसारे मोर आर केह नाइ ।
कृपा करि निज-पदतले देह ठाञि ।।
राधाकृष्ण लीलागुण गाङ रात्रि दिने ।
नरोत्तम वाञ्छा पूर्ण नहे तुया बिने ।।

(४७)

लोकनाथ! प्रभु! तुमि दया कर मोरे ।
राधाकृष्णचरणे येन सदा चित्त स्फुरे ।।
तोमार सहिते थाकि सखीर सहिते ।
एइ त वासना मोर सदा उठे चिते ।।
सखिगण ज्येष्ठ येँहो ताँहार चरणे ।

मोरे समर्पिबे कबे सेवार कारणे ।।
तबे से हइबे मोर वाञ्छित पूरण ।
आनन्दे सेविव दौँहार युगल चरण ।।
श्रीरूपमञ्जरी सखि! कृपादृष्टे चाञा ।
तापी-नरोत्तमे सिञ्च सेवामृत दिञा ।।

(४८)

हा हा प्रभू! कर दया करुणा तोमार ।
मिछा मायाजाले तनु दहिछे आमार ।।
कबे हेन दशा हबे सखीसङ्ग पाब ।
वृन्दावने फूल गाँथि दौँहाके पराब ।।
सम्मुखे बसिया कबे चामर ढुलाब ।
अगुरु चन्दन गन्ध दौँह अङ्गे दिब ।।
सखीर आज्ञाय कबे ताम्बूल जोगाब ।
सिन्दूर तिलक कबे दौँहाके पराब ।।
विलास कौतुक केलि देखिब नयने ।
चन्द्रमुख निरखिव बसाये सिंहासने ।।
सदा से माधुरी देखि मनेर लालसे ।
कतदिने हवे दया नरोत्तमदासे ।।

(४९)

हरि हरि! कबे हेन दशा हबे मोर ।
सेविव दौँहार पद आनन्दे विभोर ।।
भ्रमर हइया सदा रहिब चरणे ।

श्रीचरणामृत सदा करिब आस्वादने ।।
एइ आशा करि आमि यत सखिगण ।
तोमादेर कृपाय हवे वाञ्छित पूरण ।।
बहुदिने वाञ्छा करि पूर्ण जाते हय ।
सबे मेलि दया कर हइया सदय ।।
सेवा आशे नरोत्तम काँदे दिवानिशि ।
कृपा करि कर मोरे अनुगत-दासी ।।

(५०)

जय जय श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द ।
जयाद्वैतचन्द्र जय गौरभक्तवृन्द ।।
कृपा करि सबे मिलि करह करुणा ।
अधम-पतित जने ना करिह घृणा ।।
ए तिन संसार माझे तुया पद सार ।
भाविया देखिनु मने गति नाहि आर ।।
से पद पाबार आशे खेद उठे मने ।
व्याकुल हृदय सदा करिये क्रन्दने ।।
किरूपे पाइब किछु ना पाइ सन्धान ।
प्रभु लोकनाथ-पद नाहिक स्मरण ।।
तुमि त दयाल प्रभु चाह एक बार ।
नरोत्तम हृदयेर घुचाओ अन्धकार ।।

(५१)

कबे कृष्णधन पाव, हियार माझारे थोव,
जुड़ाइव ए पाप पराण ।

साजाइया दिव हिया, बसाइव प्राणप्रिया,
निरखिव से चन्द्रवयान ।।
हे सजनि ! कबे मोर हइवे सुदिन ।
से प्राणनाथेर सङ्गे, कबे वा फिरिव रङ्गे,
सुखमय यमुना पुलिन ।।
ललिता विशाखा निया, ताँहारे भेटिव गिया,
साजाइया नाना उपहार ।
सदय हइया विधि, मिलाइवे गुणनिधि,
हेन भाग्य हइवे आमार ।।
दारुण विधिर नाट, भाङ्गिल प्रेमेर हाट,
तिलमात्र ना राखिल तार ।
कहे नरोत्तमदास, कि मोर जीवने आश,
छाड़ि गेल व्रजेन्द्रकुमार ।।

(५२)

एइ बार पाइले देखा चरण दुखानि ।
हियार माझारे राखि जुड़ाव पराणी ।।
तारे ना देखिया मोर मने बड़ ताप ।
अनले पशिब किंवा जले दिव झाँप ।।
मुखेर मुछाव घाम खाओयाव पान-गुया ।
घामेते बातास दिव चन्दनादि चुया ।।
वृन्दावनेर फुलेर गाँथिया दिव हार ।
बिनाइया बाँधिव चूड़ा कुन्तलेर भार ।।
कपाले तिलक दिव चन्दनेर चाँद ।
नरोत्तमदास कहे पिरीतेर फाँद ।।

(५३)

गोरा पहुँ ना भजिया मैनु ।
प्रेमरतन धन हेलाय हाराइनु ।।
अधम यतन करि धन तेयागिनु ।
आपन करम दोषे आपनि डुबिनु ।।
सत्सङ्ग छाड़ि कैलु असते विलास ।
ते-कारणे लागिल जे कर्म्म-बन्ध-फाँस ।।
विषय-विषमविष सतत खाइनु ।
गौरकीर्तन रसे मगन ना हैनु ।।
एमन गौराङ्गेरगुणे ना काँन्दिल मन।
मनुष्य दुर्लभ जन्म गेल अकारण।।
केन वा आछये प्राण कि सुख पाइया ।
नरोत्तमदास केन ना गेल मरिया ।।

(५४)

वृन्दावन रम्य स्थान, दिव्य चिन्तामणि धाम,
रतनमन्दिर मनोहर ।
आवृत कालिन्दी-नीरे, राजहंस केलि करे,
ताहे शोभे कनक कमल ।।
तार मध्ये हेम पीठ, अष्टदले वेष्टित,
अष्टदले प्रधान नायिका ।
तार मध्ये रत्नासने, वसि आछेन दुइजने,
श्याम सङ्गे सुन्दरी राधिका ।।
ओ-रूप-लावण्यराशि, अमिय पाड़िछे खसि,

हास्य परिहास सम्भाषणे ।
नरोत्तमदास कय, नित्यलीला सुखमय,
सदाइ स्फुरुक मोर मने ।।

(५५)

कदम्ब तरुर डाल, नामियाछे भूमे भाल,
फुटियाछे फुल सारि सारि ।
परिमले भरल, सकल वृन्दावन,
केलि करे भ्रमरा भ्रमरी।।
राइकानु विलसइ रङ्गे ।
किवा रूप-लावणि, वैदगध खनि धनि,
मणिमय आभरण अङ्गे ।
राधार दक्षिण कर, धरि प्रिय गिरिधर,
मधुर मधुर चलि जाय ।।
आगे पाछे सखीगण, करे फुल-वरिषण,
कोन सखी चामर दुलाय ।
परागे धूसर स्थल, चन्द्रकरे सुशीतल,
मणिमय वेदीर उपरे ।।
राइकानु करजोड़ी, नृत्य करे फिरिफिरि,
परशे पुलके तनु भरे ।
मृगमद चन्दन, करे करि सखिगण,
बरिखये फुल गन्धराजे ।।
श्रमजल बिन्दु विन्दु, शोभा करे मुखइन्दु,
अधरे मुरली नाहि बाजे ।

हास-विलास रस, सरल मधुर भाष,
नरोत्तम-मनोरथ भरु ।।
दुँहुक विचित्र वेष, कुसुमे रचित केश,
लोचनमोहन लीला करु ।।

(५६)

हे देहे नागरवर, शुन ओ हे मुरलीधर,
निवेदन करि तुया पाय ।
चरण-नखर-मणि, जेन चाँदेर गाँथनि,
भाल शोभे आमार गलाय ।।
श्रीदाम सुदाम सङ्गे, यखन बने याओ रङ्गे,
तखन आमि दुयारे दाँड़ाये ।
मने करि सङ्गे याइ, गुरु जनार भय पाइ,
आँखि रहिल तुया पाने चेये ।।
चाइ नवीन मेघ पाने, तुया बन्धू! पड़े मने,
एलाइले केश नाहि बाँधि ।
रन्धनशालाते याइ, तुया बन्धु! गुण गाइ,
धुँयार छलना करि कान्दि ।।
मणि नओ माणिक नओ, आँचले बाँधिले रओ,
फुल नओ ये केशे करि वेश ।
नारी ना करित विधि, तुया हेन गुणनिधि
लइया फिरिताम देश देश ।।
अगुरु चन्दन हइताम, तुया अङ्गे माखा रइताम,
घामिया पड़िताम राँगा-पाय ।

कि मोर मनेर साध, वामन ह'ये चाँदे हात,

विधि कि साध पुरावे आमार ।।

नरोत्तमदासे कय, तोमार उचित हय,

तुमि आमाय ना छाड़िह दया ।

ये दिन तोमार भावे, आमार ए देह यावे,

सेइ दिने देओ पदछाया ।।

इति श्रीनरोत्तमदास ठाकुर महाशय की प्रार्थना समाप्त।



अभिसार

कानड़ा

शरद चन्द पवनमन्द, विपिने भरल कुसुमगन्ध।
कुल्लमल्लिका मालती यूथी
मत्त मधुकर भोरणी।।
हेरत राति ऐछन भाति
श्यामा मोहन मदने माति।
मुरलीगान पञ्चम तान
कुलवती चित्त चोरणी।।
शुनत गोपी प्रेमरोपी
मनहिँ मनहिँ आपना सौंपी।
ताँहि चलत याँहि बोलत
मुरलीक कल लोलनी।।
विछुरि गेह निजहुँ देह
एक नयने काजर रेह।
वाँहे रञ्जित कङ्कण एक
एक कुण्डल डोलनी।।
शिथिल छन्द नाविक बन्ध
वेगे धाओत युवती वृन्द।
खसत वसन रसन चोली
गलित वेणी लोलनी।।
ततहिँ वेलि सखिनी मेलि
केहु काहुक पथ नासेरी।
ऐ छने मिलिल गोकुलचन्द
गोविन्द दास बोलनी।।

कालड़ा

वन्दे श्रीवृषभानु सुतापदं
कञ्ज नयन लोचन सुख सम्पदं
कमलान्वित सुभग रेखाङ्कितं
ललितादिक कर यावक रञ्जितं
रस विलास नटन रस पतितं
नखर मुकुरजित कोटि सुधाकरं
माधव हृदय चकोर मनोहरम्।।

वराड़ी

(वर्त्मरोधनम्)

नकुरू कदर्थनमत्र सरण्याम्। मामवलोक्य सतीमशरण्याम्।।
चञ्चल मुञ्च पटाञ्चलभागम्। करवाण्याधुना भास्करयागम्।।
न रचय गोकुलवीर विलम्बम्। विदधे विधुमुख विनति कदम्बम्।।
रहसि विभेमि विलोलदृगन्तम्।वीक्ष्य सनातन देव भवन्तम्।।

श्रीश्रीमद् गदाधर पण्डित गोस्वामि-शाखानिर्णयामृतम्

वृन्दारण्यपुरन्दरं नव नव प्रेमाभिलाषास्पदम्,
तीर्थन्यासविलासपूरपरमं पाण्डित्यसाराकरम्।।
गुञ्जत् कुञ्जपुरीनितान्तसदनं रासादिलीलायुतम्,
वन्दे गौरगदाधरं प्रभुवरं प्रेम्णाकिशोरं युगम्।।

शाखारूपान् पण्डितस्य परानन्दविलासिनः।
सदा स्वरूपसम्प्राप्तान् वन्दे लीलायुतान्तरान्।।
शिष्योपशिष्याः केचिच्च तथा केचनचाश्रिताः।
प्रभोः सान्निध्यभागित्वात् सर्व्वे शाखाइवाभवन्।।
ध्रुवानन्दमहं वन्दे सदोज्ज्वलविलासिनम्।
स्व स्वभावं ददौ यस्मै कृपया श्रीगदाधरः।।
श्रीश्रीधरं सुदामाख्यं ब्रह्मचारिणमद्भुतम्।
प्रेमामृतमयं सर्व्वं गौरलीलाविलासकम्।।
वन्दे भागवताचार्यं गौराङ्गप्रियपात्रकं।
येनाकारि महाग्रन्थो नाम्ना प्रेमतरङ्गिणी।।
श्रीयुतं हरिदासाख्यं ब्रह्मचारिमहाशयं।
परमानन्दसन्दोहं वन्दे भक्त्या मुदाकरं।।
वन्देऽनन्ताद्भुतरसमनन्ताचार्यसङ्गकं।
लीलानन्ताद्भुतमयं गौरप्रेम्णो हि भाजनम्।।
महाभाव चमत्काररूपान्वितं स्वभावजं।
राधाकृष्णौ यस्य हृदि वन्दे तं कविदत्तकम्।।
वन्दे श्रीनयनानन्दमिश्रं प्रेमसुधार्णवं।
गदाधरस्य गौरस्य प्रेमरत्नैकभाजनम्।।
गङ्गामन्त्रिनमीड़ेऽहं सेवासौख्यविलासिनम्।
नामप्रेम प्रकाशार्थं स्वर्धुन्या यः सुमन्त्रितः।।
यः प्रेम्णा गौरचन्द्रेण परिवारगणैः सह।
उत्कले भाषितोमामुस्तं वन्दे मामुठाकुरम्।।
लीलाकलापसंयुक्तं राधाकृष्णरसात्मकम्।

श्रीकण्ठाभरणं वन्दे तयोः कण्ठावतारकम्।।
गोस्वामिनं च भूगर्भं भूगर्भोत्थं सुविश्रुतम्।
सदामहाशयं वन्दे कृष्णप्रेमप्रदं प्रभुम्।।
भूगर्भसङ्गिनं वन्दे श्रीभागवतदासकम्।
सदा राधाकृष्ण लीलागानमण्डितमानसम्।।
भक्तसंघट्टभक्ताख्यं भक्तवृन्देन राजितम्।
ब्रह्मचारिणमीड़े तं वाणीनाथ महाशयम्।।
कृष्णप्रेममयं स्वच्छं परमानन्ददायिनम्।
वन्दे वल्लभचैतन्यं लीलागानयुतान्तरम्।।
वन्दे श्रीनाथनामानं पण्डितं सद्गुणाश्रयम्।
कृष्णसेवापरिपाटी यत्नैर्येन सुसेविता।।
अतिदीनजने पूर्णप्रेमवित्तप्रदायकम्।
श्रीमदुद्धवदासाख्यं वन्देऽहं गुणशालिनम्।।
यस्य श्रीपुस्तकं कृष्णमाधुर्य प्रेमपोषकम्।
जितामित्रमहं वन्दे सर्व्वाभीष्टप्रदायकम्।।
वन्दे जगन्नाथदासं काष्ठकाटेतिविश्रुतम्।
दत्तं येन त्रैपुरे च देशे श्रीनाममङ्गलम्।।
हरिदासाचार्यवर्यं बङ्गदेशनिवासिनम्।
वन्दे तं परया भक्त्या सोज्ज्वलेनोज्ज्वलीकृत।।
वन्दे गोपालदासाख्यं सादिपुरनिवासिनम्।
राधाकृष्णप्रेमरसैः प्लावितं विक्रमं पुरम्।।
ब्रह्मचारिणमीड़ेतं कृष्णदासमहाशयम्।
उज्ज्वलाक्तधियं शान्तं वृन्दाकाननवासिनम्।।

पुष्पगोपालनामानां वन्दे प्रेमविलासिनम्।
स्वरसैः पुष्पितः स्वर्णग्रामको नामधेयतः।।
वन्दे श्रीहर्षमिश्राख्यं कृष्णप्रेमविनोदिनम्।
गौरप्रेम्णा मत्तचित्तं महानन्दरसाङ्कुरम्।।
वन्दे श्रीरघुनाथाख्यं प्रेमकन्दमहाशयम्।
यन्नाम श्रवणेनैव वृन्दावनरसं लभेत्।।
व्रजलक्ष्मीनाथदासं करुणालयविग्रहम्।
महाभावान्वितं वन्दे व्रजसौभाग्यदायकम्।।
बङ्गवाट्याः श्रीचैतन्यदासं वन्दे महाशयम्।
सदा प्रेमाश्रुरोमाञ्चपुलकाञ्चितविग्रहम्।।
अमोघ पण्डितं वन्दे श्रीगौरेणात्मसात्कृतम्।
प्रेम गद्गद सान्द्राङ्गं पुलकाकुलविग्रहम्।।
हस्तिगोपालदासाख्यं प्रेममत्तकलेवरम्।
नमामि परया भक्त्या गौरप्रेममयं परम्।।
चैतन्यवल्लभं नामवन्दे प्रेमरसालयम्।
गदाधरस्य गौरस्यगुणगानाभिलाषिणम्।।
यदुनाथचक्रवर्त्तिलीलाभागवताभिधम्।
प्रेमकन्दं महाभिज्ञं वन्दे भक्त्या महाशयम्।।
मङ्गलं वैष्णवं वन्दे शुद्धचित्तकलेवरम्।
वृन्दावनेशयो र्लीलामृतस्निग्धकलेवरम्।।
शिवानन्दमहं वन्दे कुमुदानन्दनामकम्।
रसोज्ज्वलयुतं स्वच्छं वृन्दाकाननवासिनम्।।
आचार्यं माधवं वन्दे कृष्णभक्तिरसालयम्।

कृतं येन प्रयत्नेन ग्रन्थः श्रीकृष्णमङ्गलम्।।
वन्दे गोपालदासाख्यं प्रेमभक्तिरसाश्रयम्।
ाधु स्नेहसमायुक्तं प्रेमासक्तं महाशयम्।
वृन्दावने वासरतं वन्दे श्रीमधुपण्डितम्।।
पौर्णमासी पृथु प्रेमपात्रं श्रीचन्द्रशेखरम्।
अपारकरुणापुरपौर्णमासीति संज्ञकम्।।
उत्कले चैव त्रैलङ्गे कीर्त्तिर्यस्य विराजिता।
प्रेमवन्यायुतं वन्दे श्रीवक्रेश्वरपण्डितम्।।
अशेष सद्गुणैर्युक्तं महासौम्यकलेवरम्।
महारसात्मकं वन्दे श्रीदामोदरपण्डितम्।।
शिखासूत्रपरित्यागात् स्वरूपं यं विदुर्बुधाः।।
आचार्यं भगवन्तं तु तेजोमयकलेवरम्।
यस्य स्मरणमात्रेण गौरप्रेम प्रजायते।।
श्रीश्रीगोविन्ददेवस्य सेवासुखविलासिनम्।
दयालुं प्रेमदं स्वच्छं नित्यमानन्दविग्रहम्।।
वन्देऽनन्ताचार्यवर्यं महाभावकदम्बकम्।
आपादमस्तकं यस्य पुलकेनोज्ज्वलीकृतम्।।
विद्यानन्ताचार्यवर्यं गङ्गातीरनिवासिनम्।
वन्दे येनाकारि पूजा गौरस्यफलमूलकैः।।
महारसामृतानन्दमच्युतानन्द नामकम्।
गदाधरप्रियतमं श्रीमदद्वैतनन्दनम्।।
वन्दे श्रीकृष्णदासाख्यं प्रेममत्तकलेवरम्।
सदा प्रेमाश्रुरोमाञ्चपुलकाञ्चितविग्रहम्।।

वन्दे श्रीपरमानन्दं भट्टाचार्यं रसप्रियम्।
राधागोविन्द गौराङ्ग गदाधरपदप्रदम्।।
महातेजोमयं चारुसेवासुखविनोदिनम्।
गोस्वामिनं भवानन्दं वन्दे तं स्मृतिप्रेमदम्।।
श्रीलगोपीनाथदेवो यत्नैर्येन सुसेवितः।
यस्य स्मरणमात्रेण कृष्णप्रेम प्रजायते।।
लोकनाथभट्टसंज्ञं प्रेमानन्दसुखालयम्।
राधाकृष्णरसेमग्नं चम्पकलतिकाभिधम्।।
वन्देऽहं वैष्णवदासं शुद्धचित्तकलेवरम्।
वृन्दावनेशयो र्लीलामृतस्निग्धकलेवरम्।।
वन्दे गोविन्दमाचार्यं कृष्णप्रेमसुधामयम्।
गोविन्दोल्लासरसरसिकं मल्लदेशनिवासिनम्।।
भुवनानन्ददं वन्दे श्रीमदक्रुरठक्कुरम्।
गदाधरप्रेमकन्दं गौरप्रेमविलासकम्।।
वन्दे सङ्केतमाचार्यं श्रीगौरेङ्गितप्रज्ञकम्।
गौरप्रेममहापात्रं कृष्णप्रेमप्रदं प्रभुम्।।
राजानं श्रीयुतं रुद्रं प्रतापाद्यं सुविश्रुतम्।
वन्दे गदाधरयुतोगौरो येन सुसेवितः।।
आचार्यं कमलाकान्तं महासुभगविग्रहम्।
परमानन्दसन्दोहं वन्दे रूपनिषेविणम्।।
वन्दे श्रीयादवाचार्यं प्रेममत्तकलेवरम्।
लीलारसपरिपाकशालिनं गुणसागरम्।।
वन्दे वल्लभभट्टाख्यमाड़िलग्रामवासिनम्।

राधाकृष्ण प्रेमलीला पारावारविगाहिनम्।।
नारायणं पड़ियारिं गौरप्रेमसुधालयम्।
श्रीगदाधरगौराङ्गसेवासुखविनोदिनम्।।
वन्दे श्रीहृदयानन्दं मग्नं प्रेमरसे सदा।
महाभाव चमत्कार गौरभावकलेवरम्।।
वन्दे चैतन्यदासाख्यं जयानन्दमहाशयम्।
प्रकाशितं येन यत्नात् श्रीचैतन्यविलासकम्।।
श्रीलश्रीगौरचरणसेवासुखविलासिनः।
पण्डितस्यगणाः सर्व्वे शृङ्गारार्थकलेवराः।।
श्रीलपण्डितदेवस्य गणाः सर्व्वे महोज्ज्वलाः।
शाखोपशाखासहिता राधाकृष्णरतिप्रदाः।।

इति श्रीयदुनाथ दास विरचितं श्रीमत् पण्डित गोस्वामि शाखानिर्णयामृतम् समाप्तम्।।

इस शाखानिर्णयामृत में प्रसिद्ध तीन लोकों का नाम नहीं है यथा– यदु गाङ्गुली एवं रघु मिश्र का नाम श्रीचैतन्यचरितामृत में ही है–"श्रीहर्ष रघुमिश्र"। "यदु गाङ्गुली आर मङ्गल वैष्णव" शाखानिर्णय में यदुनाथ चक्रवर्ती के नाम से हैं। कोई कोई कहते हैं– श्रीयदुगाङ्गुली ही शाखानिर्णय के रचयिता हैं अतएव उनका नाम नहीं है। तृतीय राजा प्रतापरूद्र के पुत्र श्रीपुरुषोत्तम को जानना होगा, ये श्रीगदाधर प्रभु के शिष्य थे, यह कथा साधन दीपिका के षष्ठ कक्षा में उक्त है।

श्रीश्रीमद्गदाधर पण्डित गोस्वामिनां रतिजनक द्वादश नामानि

१। प्रणम्य गौराङ्गप्रियाग्रगण्यं रत्नावतीनन्दनमत्युदारम् ।
श्रीमाधवामोदकरं विचिन्त्य वक्ष्येऽस्य नामानिसुहृन्मुदेऽहम्।।

२। यस्य सौभाग्य पुञ्जेन विवशीभूत मानसैः ।
गदाधरस्य गौराङ्गः सदेतिघुष्यते जनैः ।।

३। निजप्राणार्व्वुदप्रेष्ठगौरपादनखद्युतिः ।
नित्यानन्दप्रियतमोऽच्युतानन्दसुदेशिकः ।।

४। श्रीगोपीनाथसत्सेवाकारकः पुरुषोत्तमे ।
गौरविच्छेददुःखेन क्षेत्रवासपरान्मुखः ।।

५। श्रीमद्भागवतास्वादलम्पटः स्वगणैः सह ।
व्रजभूमौ कृष्णसेवाधिकारी शिष्यसञ्चयैः ।।

६। पुष्पालङ्कार सङ्घेन गौरमात्रविभूषकः ।
गौराज्ञयापुनर्भक्तवृन्देभ्यः शेषदायकः ।।

७। वासुदेव ज्ञाततत्त्व कर्णपूरेण संस्तुतः ।
गौराङ्गभक्तवृन्दस्य ध्येयरूपगुणाकरः ।।

८। श्रीमद्गदाधरस्येदं नाम द्वादशकं सदा ।
यः पठेत्तस्यपादाब्जे लभते प्रेमनिश्चलम् ।।

श्रीश्रीगदाधर पण्डित गोस्वाम्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

१। प्रणम्य परया भक्तया श्रीयुतं पण्डिताभिधम् ।
गदाधरं प्रवक्ष्ये तन्नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।।

२। गदाधरो गौरचन्द्रप्रियो माधवनन्दनः ।
विद्यानिधिविनोदात्मा श्रीनीलाचलवासकृत् ।।

३। दयालुः कीर्त्तनानन्दी महापतितपावनः ।
पण्डिताख्यः सदा कृष्णनामग्राही महाशयः ।।

४। राधास्वरूप आनन्दमयमूर्तिर्महार्त्तिहा ।
शरणागतसंत्राता सुशान्तः सुदृढ़व्रतः ।।

५। चैतन्यगणसम्मान्यो मान्यमानप्रदायकः ।
गोपीनाथपदाम्भोजसेवी प्रेमविभूषणः ।।

६। तप्तकाञ्चनगौराङ्गो धार्मिकः साधने रतः ।
सत्यवागति पाण्डित्यः प्रेमदः कीर्त्तिमान् सुखी ।।

७। जितेन्द्रियः सुप्रतापी गम्भीरस्तेजसान्वितः ।
गौररूपसदाध्यायी चैतन्यानन्ददायकः ।।

८। सर्वसद्गुणसंयुक्तः सर्वलोकप्रियः प्रभुः ।
दुःखवारण पद्मास्यो व्रजवासप्रदायकः ।।

९। भक्तिसिद्धान्तदाता श्रीद्विजेन्द्रकुलपावनः ।
माधवामोदकारी श्रीचैतन्यप्रेमसारभूः ।।

१०। श्रीमद्रासरसामोदी श्रीकृष्णानन्दवर्द्धनः ।
भक्तिप्रियो महाभावस्वरूपः सर्वशक्तिमान् ।।

११। सर्व्वसल्लक्षणोपेतो दुर्गतित्राण कारकः ।
गौर व्रजस्मारक श्रीमुखमण्डलधारकः ।।

१२। महाधीरः श्रीशरीरः प्राणाधिकतमो महान् ।

सदानन्दमना सर्व्ववाञ्छाकल्पतरुवर: ।।

१३. सुशील: सकलाराध्यो व्रजस्थजनमोदित: ।
शोकहा तापहा वन्द्यो वन्द्यवंशोज्ज्वल कृत: ।।

१४. सर्व्वोपकृच्छास्त्रवेत्ता सर्व्वापद्विनिवारक: ।
(श्री) भागवत रसास्वादी सदा साधुजनाश्रय: ।।

१५. अष्टसात्त्विक भावाढ्य: श्रीगौराङ्गगणाग्रग: ।
दोषादर्शी गुणग्राही संसाराम्भोधितारक: ।।

१६. निराश्रयाश्रय: प्रेमभक्तिदाता गुणार्णव: ।
पापार्णवग्रासिनामा सदानन्दविवर्द्धन: ।।

१७. अगण्यगुणसम्पन्नो गुणज्ञ: सारसङ्ग्रह: ।
कृपादृष्टिर्गर्व्वहारी सर्व्वसद्गुणदायक: ।।

१८. श्रील कृष्णनामदाता चण्डालादिसुशोधन: ।
अदु:ख: परमोदारो गौरविच्छेदकातर: ।।

१९. अमानी क्रोधजिद् भक्त्याचारवान् निरहंकृति: ।
विनयी भजनोल्लासी विश्वम्भरगणप्रिय: ।।

२०. अतुल्यरूपमाधुर्य्य विस्मापित जगज्जन: ।
सद्द्वेषिविषयालापवर्जित: सत्कथारत: ।।

२१. अदोशी सुखद: श्रद्धायुक्त: प्रेमवदुत्तम: ।
वदान्य: स्निग्धवाक् प्रेमपीयूषरसवारिधि: ।।

२२. एतत् पण्डितदेवस्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
य: पठेन्नियतं भक्त्या गौरचन्द्रप्रियो भवेत् ।।

२३. मुच्यते सकलापद्भ्यो रोगाच्छोकाद् भयाच्च स: ।
अपराध समस्तेभ्यो मुच्यते घोर किल्विषात् ।।

२४. प्राप्नोति सकलान् कामान् विद्यापुत्रधनादिकान् ।
राधाकृष्णपदाम्भोजे प्रेमभक्तिर्भवेदध्रुवम् ।।

२५. कुञ्जसेवामवाप्नोति पण्डितस्य प्रसादतः ।
वसेद् वृन्दावनाधीशप्रेयसीगणमण्डले ।।
२६. भक्तिहीनाय दुष्टाय न दातव्यं कदाचन ।
श्रद्धायुक्ताय दातव्यं भजनोन्मुखचेतसे ।।
२७. श्रीमन्माधवपुत्राय पण्डिताय महात्मने ।
गदाधराय धीराय चैतन्यप्रेयसे नमः ।।

इति श्रीसार्व्वभौम भट्टाचार्य्य विरचितं श्रीयुत श्रीगदाधर पण्डित गोस्वाम्यष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रं समाप्तम् ।।

• •

श्रीश्रीगौर-गदाधर-युगलाष्टकम् (उपजातिछन्द)

क्षितौ लुठद्गौरकलेवराभ्यां सदा महाप्रेमविलासकाभ्याम् ।
समुद्रतीरे नटनागराभ्यां नमोऽस्तु मे गौरगदाधराभ्याम् ।।१।।
हाहा क्व राधेति मुहुः स्थिताभ्यां श्रीराधिकाकृष्णवपुर्धराभ्याम् ।
आनन्दलीलारसरञ्जिताभ्यां नमोऽस्तु मे गौरगदाधराभ्याम् ।।२।।
अद्वैतचिन्ताहरसम्भवाभ्यां मनोभवानन्दमनोहराभ्याम् ।
अचिन्त्यलीलापरिपूरिताभ्यां नमोऽस्तु मे गौरगदाधराभ्याम् ।।३।।

(पद्यार्थ)दोहार गौरवरण,भूमे गड़ागड़ि यान, सदा महाप्रेमे विलासेन।
समुद्रेर तीरे दोन, नटनागर हयेन, करि गौरगदाइ वन्दन।।
हा! राधे! तुमि कोथाय, बलिया सदा डाकय, दुहुँजन राधाकृष्ण हन।
दोहाँ लीलारसे दोन, आनन्दे मगन हन, करि गौरगदाइ वन्दन।।
अद्वैतेर चिन्ताहारी, मनमथ मनोहारी, जीवोद्धारे भुवनमोहन।
अपूर्व्वलीला दोँहार, लोकचिन्ता अगोचर, करि गौरगदाइ वन्दन।।

जीवैकनिस्तारधृतव्रताभ्यां श्रीकृष्णनाम्नाजनतारकाभ्याम् ।
हरे कृष्ण हरे मुखाम्बुजाभ्यां नमोऽस्तु मे गौर-गदाधराभ्याम् ।।४
अशेषदुःखामय भेषजाभ्यां किरीट केयूरविभूषिताभ्याम् ।
ग्रैवेय मालामणिरञ्जिताभ्यां नमोऽस्तु मे गौर-गदाधराभ्याम् ।।५
श्रीवत्सरोमावलीरञ्जिताभ्यां वक्षस्थले कौस्तुभभूषिताभ्याम् ।
त्रैलोक्यसम्मोहन सुन्दराभ्यां नमोऽस्तु मे गौर-गदाधराभ्याम् ।।६
स्फुरच्चलत् काञ्चनकुण्डलाभ्यां सदाष्टभावैः परिशोभिताभ्याम् ।
स्वेदाश्रुकम्पादिविभूषिताभ्यां नमोऽस्तु मे गौर-गदाधराभ्याम् ।।७
श्रीमच्छिवानन्द मनोरथाभ्यां सदा सुखानन्दरसस्फुराभ्याम् ।
मदीय सर्व्वस्वपदाम्बुजाभ्याम् नमोऽस्तु मे गौर-गदाधराभ्याम् ।।८
पठन्ति ये गौर गदाधराष्टकं पद्यं लभन्ते व्रजयुग्मपादम् ।
अद्वैत पुत्रेण मयोक्तमेतन्नाम्नाच्युतानन्द जनेनधीमता ।।९।।

इतिश्रीअच्युतानन्दप्रभुविरचितं श्रीश्री गौर-गदाधर युगलाष्टकं समाप्तम् ।

जीवनिस्तारिते दोन, दृढ़व्रत करिलेन, कृष्णनाम जीव उद्धारे।
मुखे हरेकृष्णनाम, दोहे करे संकीर्त्तन, करि गौरगदाइ वन्दन।।
यत दुःख रोग शोक, दोँहि तार चिकित्सक, अङ्गे चूड़ा केउर शोभेन।
ग्रीवाते मणि मालाय, अतिशय शोभाहय, करि गौरगदाइ वन्दन।।
श्रीवत्स रोमावलीते, वक्षस्थल सुशोभिते, ताहे शोभे कौस्तुभभूषण।
त्रिलोकेर मनहारि, गदाइ गौराङ्गहरि, करिमुत्रि दोँहार वन्दन।।
श्रवणे स्वर्णकुण्डल, दोले करि झलमल, सात्विकादि अङ्गेते भूषण।
स्वेद अश्रु कम्पचय,ताहे अति शोभाहय, वन्दि गौरगदाइ चरण।।
शिवानन्द मने याहा, पूरण करेन ताहा, दोहे सदा आनन्दे मगन।
दोँहार पद्मचरण, आमार सर्व्वस्वधन, करि गौरगदाइ वन्दन।।
गौर गदाधराष्टक पडिवे ये जन, तिहोँ पावे राधाकृष्ण युगलचरण।
श्रीअच्युतानन्दश्रीअद्वैत प्रभु पुत्र। तारकृत गदाधर गौराङ्गेर स्त्रोत्र।।**(समाप्त)**

श्रील श्रीराधागदाधराष्टकम् (मालिनी छन्दः)

१. अखिलभुवनवन्द्यं प्रस्फुरत् प्रेमसारम् ।
प्रवलकरुणयाढ्यं प्रेमभक्तिस्वतन्त्रम् ।।
व्रजविपिन विराजच्छ्रील वृन्दावनेन्दुम् ।
मधुर - मधुररूपं नौमि राधास्वरूपम् ।।
२. निखिल गुणगभीरं पूर्णलावण्यधीरम् ।
करुणहृदयसारं माधवामोदकारम् ।।
नवरसचलचित्तं नागरीप्रेमवित्तम् ।
प्रमदरसिकभूपं नौमि राधास्वरूपम् ।।
३. रसिकमुकुटमौलीं कौतुकाबद्धकेलीम् ।
कलितकलिलवल्लीं सर्वभक्तेशमल्लीम्

पद्यार्थ—

अखिल ब्रह्माण्डजन, याँर करे आराधन, प्रेमसार याते प्रकाशय ।
प्रबल करुणामय, सदा याँहार हृदय, स्वतन्त्रेते प्रेमभक्ति देय ।।
व्रजविपिनेर माझे, सौन्दर्य्य माधुर्य्य साजे, पूर्णचन्द्र शोभितेछे येन ।
मधु हैते सुमधुर, रूप याँर मनोहर, करि राधा गदाइ स्तवन ।।
गभीर निखिल गुण, लावण्येते परिपूर्ण, सर्वदाइ अतिशय धीर।
सदा हृदये, याँहार, पूर्ण करुणासार, आनन्द सदा माधवेर ।।
नवीन रसेते यार, हृदय चञ्चल बड़, नागरीर प्रेम याँर धन ।
अतिमत्त रसिकेर, यिहों राजराजेश्वर, करि राधास्वरूपे स्तवन ।।
जिहों रसिकगणेर, चूड़ामणि सकलेर, याँर केलि कुतूहलपूर्ण ।
अतिगाढ़ लताकुञ्जे,थाके यथा भक्त गणे श्रेष्ठ भक्त चूड़ामणि हन ।।

अतुल चतुरकेलीं सर्व्वसौशील्यवेलीम् ।
प्रवलमदनयूपं नौमि राधास्वरूपम् ।।

४. परमरसविभासं सर्व्वभक्तिप्रकाशम् ।
विविधरसविदाद्यं प्रेमरत्नैकहृद्यम् ।।
नियतनियमचारं सर्व्वसर्व्वार्थसारम् ।
मदनमथनरूपं नौमि राधास्वरूपम् ।।

५. कलितललितसारं सख्यवैवश्य पारम् ।
कवलितरसचित्तं सेव्यसेवैकमित्रम् ।।
सततविजयभद्रं पद्मदायादनेत्रम् ।
नवनवरसकूपं नौमि राधा स्वरूपम् ।।

६. परमरसविलासं सर्व्वपाण्डित्यकाशम् ।
विमलकमलवासं वन्द्यवंशोज्ज्वलांशुम् ।।

चातुरालि पूर्ण याँर, केलि अति मनोहर, सुशीतल गुणे परिपूर्ण ।
गौरकृष्ण मदनेर, यूप यिहों दमनेर, करि राधागदाइ स्तवन ।।
उन्नत उज्ज्वलरस, याँर अङ्गे परकाश, सर्व्वभक्ति प्रकाश करेन ।
विविध रसज्ञगण, ताँर आदि गुरुहन, प्रेमरत्ने भूषित हयेन ।।
सदा नियमे करेन, आचार परिपालन, सर्व्वशास्त्र तत्त्वज्ञ हयेन ।
मनमथेर मोहन, याँहार स्वरूप हेन, करि राधागदाइ स्तवन ।।
ललिताख्य अलंकार, जिहों कैल अङ्गीकार, राधाभावे विवश अपार ।
महारासे याँर चित्त, अतिशय कवलित, सेव्य सेवालाभैक आधार ।।
सदा विजय याँहार, हितकारी जगतेर, पद्मतुल्य विशाल नयन ।
नवीन रसेर कूप, जिहों राधास्वरूप, करि हेन गदाइ स्तवन ।।
येइ रस सर्व्वोत्तम ताहे विहार करेन, जिहों सर्व्व पाण्डित्य भूषित ।
रम्य पद्मवनाश्रिता, लक्ष्मी याँर अंशस्थिता, वन्द्यवंशकरे उज्ज्वलित ।।

कलितललिततन्त्रं कीर्त्तिदाकीर्त्तिचन्द्रम्।
कुशलगरिमरूपं नौमि राधास्वरूपम्।।

७. श्रवणरसदसारं माधवानन्दकारम् ।
करुणवरुणदृष्टिं प्लावितानन्दवृष्टिम् ।।
मधुरमधुरसारं प्रेमरत्नैकहारम्
स्वगुणगरिमकूपं नौमि राधास्वरूपम् ।।

८. व्रजसदसि सदा संसक्तचित्तं विराजद् ।
व्रजभुवि जयिलक्ष्मीवृन्दवर्गाग्रगण्यम् ।।
निखिल निगमपान्थालभ्यपादाब्जगन्धम् ।
किमपि करुणरूपं नौमि राधास्वरूपम् ।।

राधास्वरूपस्य गदाधरस्य स्तोत्र मुदाकारि सनातनेन ।
प्रेम्णा पठन् नित्यविलासशाली, प्राप्नोति सोऽभीष्टपदं हि तस्य ।।

इति श्रीसनानत गोस्वामि विरचितं श्रीराधागदाधराष्टकं समाप्तम् ।।

स्वीकृत मार्ग याँहार, अति सुनिर्म्मलतर, कीर्तिदार कीर्तिचन्द्ररूप।
जगत मङ्गलरूप, गौरवे पूर्ण स्वरूप, स्तवकरि सेइ गदाइ रूप ।।
श्रवणाति सुरसद, कर्णेर आनन्दप्रद, माधवेर आनन्द हय ।
करुणा वरुण याँर, दृष्टि से आनन्दकर, सुखवृष्ट्यै जगत डुबाय ।।
मधुर हैते सुमधुर, अनुपम रूप याँर, गले शोभे प्रेमरत्न हारे ।
गौरव पूर्ण गुणेर, यिहों हयेन आधार, स्तव करि राधा गदाधरे ।।
व्रजधामे सदा याँर, अत्यासक्त हृदयेर, हेन वृन्दावन शेभान्वित ।
ताहे लक्ष्मीजयि यत, आछे गोपी शतशत, ताहे यिहों अग्रवर्तिस्थित।।
वेद विधि अनुसारे, आराधना करि तारे, नाहि पाय चरण याँहार ।
केवल करुणा याँर, श्रेष्ठ साधन प्राप्तिर, स्तव करि राधागदाधर ।।
स्वरूप श्रीराधिकार, पण्डित श्रीगदाधर, तार स्तोत्र सनातन कय ।
भक्ति करि येइजन, नित्य करिबे पठन, अवश्य तार अभीष्ट पुरय।।(समाप्त)

श्रीश्रीराधागदाधर दशकम्

१. वृन्दावनेश्वरी राधा प्रेमभक्तिप्रदायिनी ।
कलौ श्रीगौर दयितः श्रीगदाधरपण्डितः ।।

२. सर्व्व पाण्डित्यसाराख्यं प्रेमरत्नविभूषणम् ।
माधवात्मजवन्द्याग्रं वन्दे राधागदाधरम् ।।

३. अपारकरुणापूरपुरितान्तमनोह्रदम् ।
सदारासरसामोदं वन्दे राधागदाधरम् ।।

४. सखीगणगणाध्यक्ष मधुमत्यादिसङ्कुलम् ।
वृन्दावने रासरतं वन्दे राधागदाधरम् ।।

५. दिव्यसद्गुणमाणिक्यपेटिकादिमनोहरम् ।
वृन्दावनकलानाथं वन्दे राधा गदाधरम् ।।

६. गौराङ्गगाढ़ताभाव - भावनिर्य्यासभावितम् ।
करुणावरुणाधारं वन्दे राधा गदाधरम् ।।

(पद्यार्थ) वृन्दावन अधिश्वरी,श्रीलराधिकासुन्दरी, यिहोँ करे प्रेमभक्ति दान।
तिहोँ एइ कलिस्थित, श्रीलगौराङ्गदयित, श्रीलगदाधर याँर नाम ।।
समस्त पाण्डित्यसार, विख्यात हइल याँर, प्रेमरत्न याँहार भूषण ।
श्रीमाधवेर नन्दन, आराध्येराराध्य हन, करि राधा गदाइ वन्दन ।।
करुणा समुन्द्रे याँर, नाहि हय पारावार, से प्रवाहे पूर्ण याँर मन ।
सदा रासरस रत, आनन्दे मगन चित, करि हेन गदाइ वन्दन ।।
सखीगण मध्ये हन, मधुमतादि प्रधान, से सङ्गेते हइया मिलन ।
वृन्दावने सर्वदाय, श्रीरासलीला करय, करि राधा गदाइ वन्दन ।।
यिहोँ दिव्य सद्गुणेर, माणिक्य पेटिकावर, रूपे जनमन नेत्रहारी ।
व्रजेनृत्य कलादिते, यिहोँ प्रवीणा विदिते, सेइ गदाइये नमस्कार करि ।।
गौराङ्गेते येइभाव, गाढ़तर सेइभाव, से निर्य्यासे भावित याँर मन ।
करुणावरुणालय, याँहार स्वरूपहय, सेइ गदाइ करिये वन्दन ।।

७.　कीर्तिदाकीर्तिदं नित्यं नित्यानन्दविवर्द्धनम् ।
रसालयं रसाधारं वन्दे राधागदाधरम् ।।
८.　पुण्डरीकप्रेमविद्याविद्योतिताशयम् ।
असीमगुणसम्पूर्णं वन्दे राधागदाधरम् ।।
९.　श्रीवासाप्ततमं गाढ़ं मुरारिगुप्तगुप्तकम् ।
वन्द्येवंशोज्ज्वलकरं वन्दे राधागदाधरम् ।।
१०.　शिवानन्दप्रियगुरुं नयनानन्दवन्दितम् ।
शुद्धकाञ्चनगौराङ्गं वन्दे राधागदाधरम् ।।
११.　गौराङ्गभक्तवृन्देन राजितं परमोज्ज्वलम् ।
रामानन्दरसामोदं वन्दे राधागदाधरम् ।।
१२.　श्रीलगदाधरस्येदं पद्यं हृद्यं मनोहरम् ।
यः पठेन्नियतं भक्त्या स प्रेम्नि प्रमिलेद् ध्रुवम् ।।

इति श्रीरूपगोस्वामिविरचितं श्रीराधागदाधर दशकम् समाप्तम् ।।

यिहों हन कीर्तिदार, निरन्तर कीर्त्तिकर, सदा नित्यानन्द विवर्द्धन ।
रसइ आधार याँर, रसेर यिहों आधार, से गदाइरे करिये वन्दन ।।
पुण्डरीक गुरु हेन, प्रेमविद्या मन्त्र देन, ताहे याँर मन दीप्त हन ।
असीम गुणेते यिहों, हन परिपूर्ण तिहों, वन्दि राधा गदाइ चरण ।।
यिहों श्रीवासेर अति, प्रीतिर भाजन निति, मुरारि गुप्तेर गुप्तधन ।
वन्द्ये वंशोज्ज्वलकर, पण्डित श्रीगदाधर, करि राधास्वरूपे वन्दन ।।
यिहों शिवानन्देर, अति प्रिय गुरुवर, नयनानन्द करे वन्दन ।
अङ्गवर्ण सुवर्णेर नाम, श्रीलगदाधर, हेन राधा करिये वन्दन ।।
गौराङ्गेर भक्तगण, सदा वेष्टित रहेन, ताहे याँर शोभा अति हन ।
यिहों श्रीरामानन्देर, आनन्दप्रद रसेर, करि राधा गदाइ प्रणाम ।।
गदाधर स्तोत्र हन, मोर हृदयेर धन, श्रवणे हरे सवार मन ।
भक्ति करि येइजन, करिबे नित्य पठन, शीघ्र पावे गौरप्रेमधन।।**(समाप्त)**

श्रील श्रीराधागदाधराष्टकम् (पञ्चचामर छन्दः)

१. स्वभक्तियोगलासिनं सदा व्रजेविहारिणम् ,
हरिप्रियागणाग्रगं शचीसुतप्रियेश्वरम् ।
सराधाकृष्णसेवनप्रकाशकं महाशयम्,
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुम् ।।

२. नवोज्ज्वलादिभावनाविधानकर्म्मपारगम्,
विचित्र गौरभक्तिसिन्धुरङ्गभङ्गलासिनम् ।
सुरागमार्गदर्शकं व्रजादिरासदायकम् ,
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरु प्रभुम् ।।

३. शचीसुताङ्.घ्रिसार भक्तवृन्द वन्द्य गौरवम्,
सुगौरभावचित्तपद्ममध्य कृष्णवल्लभम् ।
मुकुन्दगौररूपिणं स्वभावकर्म्मदायकम्,
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरु प्रभुम् ।।

(पद्यार्थ) राधाभावे गदाधर, नृत्य करे निरन्तर, व्रजे सदा बिहार करेन ।
कृष्णप्रिया मध्ये हन, सकलेर अग्रगण्य, गौरप्रिय मध्ये सर्व्वमान्य ।।
श्रीराधाकृष्ण सेवन, यिहोँ प्रकाश करेन, एइ हेतु उदार हयेन ।
हेन प्रभु गदाधरे, पण्डित श्रीगुरुवरे, सदा मुञि करिये भजन ।।
नवोज्ज्वल रसे येन, भावना करिते हन, से विषये विचक्षण हन ।
विचित्र गौर भजन, सिन्धुर तरङ्ग हेन, ताहे रङ्गभङ्गे येन नाचेन ।।
रागमार्ग दर्शकेर, यिहोँ आदि गुरुवर, कृपाकरि व्रजवास देन ।
हेन प्रभु गदाधर, श्रीपण्डित गुरुवर, भजि मुञि ताहार चरण ।।
गौरपाद पद्मलीन, मधुलुब्ध भक्तगण, गौरवे वन्दे याँर चरण ।
सुभाव श्रीगौरभक्त, हृदि यिहोँ अनुरक्त, श्रीकृष्णेर अतिप्रिय हन ।।
राधाकृष्ण ऐक्य येन, गौरकृष्ण गदाइ हेन, स्वीय भावधर्म्म करे दान ।
हेनप्रभु गदाधर, पण्डित श्रीगुरुवर मुञि ताँर करिये भजन ।।

४. निकुञ्जसेवनादिकप्रकाशनैककारणम्,
सदा सखारतिप्रदं महाभावस्वरूपकम् ।
सदाश्रिताङ्‌घ्रिपुण्डरीकदायिसद्‌गुरुवरम्,
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुम् ।।

५. महाप्रभोर्महारसप्रकाशनाङ्कुर प्रियम् ।
सदामहारसाङ्कुरप्रकाशनादिवासनम् ।।
महाप्रभोर्व्रजाङ्गनादिभावमोदकारकम् ।
भज्याम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुम् ।।

६. द्विजेन्द्रवृन्दवन्द्यपादयुग्मभक्तिवर्द्धकम्,
निजेषु राधिकात्मतावपुः प्रकाशनाग्रहम् ।
अशेषभक्तिशास्त्रशिक्षयोज्ज्वलामृतप्रदम्,
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुम् ।।

व्रजे कृष्ण सेवायाहा, अन्ये दिते नारे ताहा, केवल कृपाते मिले याँर ।
याँहार कृपाते पाय, राधादास्य सुनिश्चय, महाभाव स्वरूप याँहार ।।
सदाश्रित गौरपद, यिहों से चरणप्रद, विश्वत्राता श्रेष्ठ गुरु हन ।
हेन प्रभु गदाधर, पण्डित श्रीगुरुवर, मुञि तार करिये भजन ।।
महारास याहा हय, प्रभु ताहा आस्वादय, बीजांकुर प्रकाशे ये तार ।
हेन महारसांकुर, प्रकाश करिते याँर, वासना सदाइ अन्तरेर ।।
व्रजागंनागणे यत, भाव आछे नानामत, सेभावे प्रभुरे सुख देन ।
हेन प्रभु गदाधर, पण्डित श्रीगुरुवर, मुञि तार करिये भजन ।।
द्विजेन्द्र वन्द्य श्रीगौर, युगल चरणवर, ताहाते लोकेर भक्ति देन ।
स्वजनेर प्रति याँर, कृपार नाहिक पार, स्वीय देहे राधारे देखान ।।
भक्तिशास्त्रे आछेयाहा, उपदेश दिया ताहा, उज्ज्वल अमृतरस देन ।
हेन प्रभु गदाधर, पण्डित श्रीगुरुवर, ताँर मुञि भजि श्रीचरण ।।

७. मुदानिज-प्रियादिके स्वपादपद्मसीधुभि,
र्महारसार्णवामृतप्रदेष्टगौरभक्तिदम् ।
सदाष्ट-सात्त्विकान्वितं निजेष्ट-भक्तिदायकम्,
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुम् ।।

८. यदीयरीतिराग-रङ्ग-भङ्गदिग्ध-मानसो-
नरोऽपि याति तूर्णमेव नार्य्यभावभाजनम् ।
तमुज्ज्वलाक्त-चित्तमेतु-चित्तमत्त-षट्पदो;
भजाम्यहं गदाधरं सुपण्डितं गुरुं प्रभुम् ।।

९. महारसामृतप्रदं सदागदाधराष्टकम्;
पठेत्तु यः सुभक्तितो व्रजाङ्गनागणोत्सवम् ।
शचीतनुज-पादपद्म-भक्तिरत्न-योग्यतम्;
लभेत राधिका-गदाधराङ्घ्रि-पद्म सेवया ।।

इति श्रील स्वरूपगोस्वामि विरचितं श्रीराधागदाधराष्टकं समाप्तम् ।

हर्षे स्वीय श्रीचरण, मकरन्द करि दान, स्वजन हृदि करि शोधन ।
प्रिय गौराङ्गेर हेन, शुद्धभक्ति करे दान, याहे महारस आस्वादेन ।।
सात्त्विकादि भाव यत, ताहे हय विभूषित, प्रिय गौरभक्ति जीवे देन ।
हेन प्रभु गदाधर, पण्डित श्रीगुरुवर, भजि मुञि ताँहार चरण ।।
गदाधर राधाय, कभु भिन्न नाहि हय, ताहार ये रतिनीति हय ।
से रागरङ्गे भङ्गेते, निमग्न याँहार चिते, शीघ्र सेई राधादास्य पाय ।।
मोर चित्त मत्तभृङ्ग, मिले से चरण सङ्ग, ये सदा उज्ज्वलासक्त हन ।
हेन प्रभु गदाधर, पण्डित श्रीगुरुवर, भजि मुञि ताँहार चरण ।।
महिमाल्प प्रकाशक, श्रीगदाधराष्टक, गोपीगणोत्सवदायि हन ।
भक्तिभावे येइ जन, नित्य करिबे पठन, उज्ज्वल अमृत से पावेन ।।
राधागदाइ चरण, प्रीति करि येइजन, निरन्तर करिबे सेवन ।
श्रीगौराङ्ग श्रीचरणे, भकति रतन धने, सेइजन अधिकारि हन ।। **(समाप्त)**

श्रीलश्रीगौरगदाधर युगलाष्टकं (शार्दूलविक्रीडित छन्दः)

गोलोकादवतीर्य्य यः क्षितितले श्रीराधयासंयुतो,
वृन्दारण्यमुपासितोऽतिरभसात्तेने विहारादिकम् ।
गोपीगोकुलगोपविस्मयपदं गोवर्द्धनोर्द्धारणं,
सोऽयं गौरगदाधरो विजयते सानन्दमद्वैतकः ।।
यो नन्दात्मजतामुपेत्य निभृतव्याजेन गोपाङ्गना,
चित्ताकर्षण तत्परोऽतिरमणो नित्यं किशोराकृतिः ।
ब्रह्मेन्द्रश्रुतिशम्भुवागविषयोऽपाङ्गे व्रजयोषितां
सोऽयं गौरगदाधरो विजयते सानन्दमद्वैतकः ।।
यो वृन्दाविपिने कुरङ्गनयनी हस्ताप्तबद्धाञ्जलि,
नृत्यन्नित्यकिशोरसुन्दरतनु रासोल्लसन्मानसः ।

पद्यार्थ—

गोलोक हइते हरि, राधिकारे सङ्गे करि, वृन्दावने अवतीर्ण हैल ।
करि वृन्दावनाश्रय, अत्यन्त कौतुकी हय, विविध प्रकारे लीला कैल ।।
गोपगोपी गोकुल, अत्यन्त विस्मय हैल, देखि गोवर्द्धनेर धारण ।
गदाधर गौर हन, सुखे विराज करेन, अभिन्न स्वरूप दोँहे हन ।।
नन्दात्मज धरि, निभृतेते छलकरि, यिहोँ गोप युवतीगणेर ।
चित्त करि आकर्षण, करेन सुविहरण, याँर स्वरूप नित्य किशोर ।।
ब्रह्मा इन्द्र श्रुतिशम्भु, वर्णिते ना पारे कभु, ताँरे गोपी अपाङ्गे देखय ।
गदाधर गौर हेन, दोँहे विहार करेन, कभु भिन्न स्वरूप ना हय ।।
यिहोँ वृन्दाविपिने, कुरङ्गनयनी सने, हस्ते हस्त करिया धारण ।
नाचये नित्य किशोर, तनु अत्यन्त सुन्दर, रासरसे उल्लासित मन ।।

कालिन्दीतटकुञ्जमञ्जुलगृहे राधाबिहारी हरिः,
सोऽयं गौरगदाधरो विजयते सानन्दमद्वैतकः ।।
यो रासे रसिको रसादिचतुरां रासेश्वरीं राधिकां
स्वाङ्के न्यस्य गतोऽन्यगोपरमणीस्त्यक्त्वापि दूरं वनम् ।
ताः सम्भूयपुनर्यदर्थमभितः क्रीड़न्ति निन्दन्ति च,
सोऽयं गौरगदाधरो विजयते सानन्दमद्वैतकः ।।
यो दानच्छलरीति गोकुलवधुवक्षस्थलस्थप्रभु,
दानीनीपविलासिचारुचतुरापाङ्गान्वितः सस्मितः ।
हस्ताभ्यां परिवार्य गोपललना गवाञ्चनीतो हठात्,
सोऽयं गौरगदाधरो विजयते सानन्दमद्वैतकः ।।
यो नावा यमुनाजले नटवरः पारच्छले नाविको,
भूत्वा गोकुलनागरीभिरभितः क्रीड़ापरो नागरः ।

शोभित कालिन्दी तीरे, मञ्जुल कुन्जकुहरे, राधासङ्गे करे विहरण ।
गदाधर गौर हेन, सुखे विहार करेन, अभिन्न स्वरूप दोँहि हन ।।
रासादिते चतुरिणी, श्रीराधिका सुवदनी, रासेरईश्वरी यिहोँ हन ।
ताँहारे कोलेते करि, अन्तर्द्धान हैल हरि, अन्य गोपी त्यजी दूर वन ।।
पुन कृष्णेर लागिया, सकले मिलित हैया, विहरिछे करिया निन्दन ।
हेन गौरगदाधर, सुखे करेन विहार, अभिन्न स्वरूप दोँहि हन ।।
दानरीति छलकरि, कदम्बबिहारी हरि, गोपी वक्षे अवस्थान करे ।
यिहोँ चारुदानी हइ, चतुर अपाङ्गे चाइ, कतइ ना परिहास करे ।।
यतेक गोपाल नारी, हस्तेते वारण करि, दधिदुग्ध करिल हरण ।
गदाधर गौर हेन, सुखे विराज करेन, दोँहि कभु भिन्न नाहि हन ।।
नटवर पार छले, नाविक यमुनार जले, नौका चड़ि वहिया चलिल ।
नागरशेखर राज, ताहे गोपिका समाज, विविध भातिते केलि कैल ।।

नानाहास्यरसादिवीक्षणरतिप्रारम्भसम्भावितः,
सोऽयं गौरगदाधरो विजयते सानन्दमद्वैतकः ।।
यः प्रेम्णाखिललोकपावनमहाशाखः शचीनन्दनः,
लोकानां गतये स्थितसुरतरुः सन्यासिचूड़ामणिः ।
प्रेमालिङ्गनतत्परोऽधमजने कारुण्यपूर्णो हरिः,
सोऽयं गौरगदाधरो विजयते सानन्दमद्वैतकः ।।
प्रेमाधाररसायणो रसविदां रासोत्सवः सुन्दर :,
पूर्णः कीर्त्तनलम्पटः कटितटे कौपीनचेलाञ्चलः ।
भक्त्युद्रेकपरम्परासपुलको नेत्राम्बुविस्फूर्ज्जितः,
सोऽयं गौरगदाधरो विजयते सानन्दमद्वैतकः ।।
प्रतिपदमनुभूय श्रद्धाबुद्ध्याष्टकं यः,
स्मरति पठति नित्यं नम्रतामेत्य मर्त्तः ।

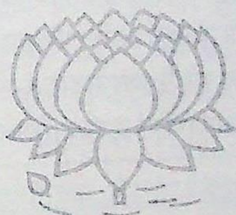
परिहास रसभरे, कटाक्षे इक्षण करे, करिलेन रति प्रकाशन ।
हेन गदाधर गौर, सुखे करेन विहार, अभिन्न स्वरूप दोंहे हन ।।
शचीरनन्दन प्रेमे, जगतेर शान्ति दाने, महावृक्ष सदृश हयेन ।
सन्यासिर चूड़ामणि, लोकगति दिते यिनि, अलौकिक कल्पतरु हन।।
अधमेर कृपावान, करे प्रेम आलिङ्गन, कारुण्येते पूर्ण हरि हन ।
गदाधर गौर हेन, सुखे विराज करेन, अभिन्न स्वरूप दोंहे हन ।।
प्रेमेर आश्रय हन, रसविदेर रसायन, सोन्दर्य्य ओ रासोत्सवे पूर्ण ।
संकीर्त्तनेते लम्पट,कोपीनस्थ कटितटे, वस्त्रखण्ड ताहे आवरण ।।
निरन्तर भक्त्युद्रेक, श्रीअङ्गे शोभे पुलक, सदा नेत्रे अश्रुधारा वय ।
हेन गौरगदाधर, सुखे करेन विहार, दुइ तत्वे भिन्न कभु नय।।
अष्टके ये पद हय, ताहे हवे ज्ञानोदय, हेन जन श्रद्धा भक्ति सह ।
मने करिवे चिन्तन, नित्य करिवे पठन, निरन्तर दीनतार सह ।।

सततमुरसि तस्य श्रीगदाधृक् स गौरो
निवसति निजभावौ भिन्नभेदं विधूय ।।

इति श्रीनयनानन्दमिश्रविरचितं गौरगदाधरयुगलाष्टकं समाप्तम् ।।

हेन येइजन हवे, ताँहार हृदये तवे, दोँहे अतिशय शीघ्र करि ।
श्रीगौराङ्गगदाधर, बसिवेन निरन्तर, परस्पर भेद परिहरि ।।

।। समाप्त ।।



श्रील श्रीराधागदाधराष्टकम्

श्रील वृन्दावनाधीशास्वरूपं सद्गुणाश्रयम्।
पण्डिताख्यं प्रभुवरं वन्दे राधागदाधरम्।।
श्रीगौराङ्ग महाभावकारकं प्रेमवर्द्धकम्।
महाभावस्वरूपं तं वन्दे राधागदाधरम्।।

(पद्यार्थ) श्रीलवृन्दावनेश्वरी, श्रीमती राधासुन्दरी, यिहोँ सर्व्वगुणेर आश्रय।
श्रीगदाधर पण्डित, मोर प्रभुवर ख्यात, वन्दि हेन राधागदाधर।।
गौराङ्ग महाभावेर, यिहोँ हय पुष्टिकर, प्रेम दिया करे ये उद्धार।
महाभाव एव याँर, स्वरूप निश्चय सार, वन्दि हेन राधागदाधर।।

यदास्यपद्मं संदृश्य श्रीप्रभोर्व्रजभावना।
श्रीमद्रासरसाधारं वन्दे राधागदाधरम्।।
श्रीगौराङ्ग-प्रेमसारं विद्यानिधिदयास्पदम्।
माधवानन्दनं धीरं तं वन्दे राधागदाधरम्।।
श्रीशचीहृदयानन्द-प्राणसर्व्वस्वसम्पुटम्।
श्रील प्रेमस्वरूपाख्यं तं वन्दे राधागदाधरम्।।
श्रीनवद्वीपलीलाब्धौ शैशवे चापलं महत्।
कृतं येन महासौख्यात्तं वन्दे राधिकाभिधम्।।
नीलाचलविहारि-गौराङ्गेन समं कृतम्।
प्रेमाम्बुदसुधा येन तं वन्दे राधिकाभिधम्।।
गौराङ्गेनार्पितं गोपीनाथपादाब्ज-सेवने।
नीलशैले सदावासं तं वन्दे राधिकाभिधम्।।

याँर मुखपद्म हेरि, नवद्वीपे गौरहरि, हन वृन्दावन लीलाविष्ट।
हेन गदाधर हय, महारास रसाश्रय, वन्दि गदाधरपद हृष्ट।।
यिहोँ हय गौराङ्गेर, परम प्रेमेर सार, विद्यानिधि दयार आस्पद।
माधवेर आनन्दन, अतिशय धीर हन, वन्दि राधागदाधर पद।।
याँहारे देखिया हन, शचीर आनन्द मन, ताँर प्राण सर्व्वस्व आधार।
शोभन प्रेमस्वरूप, ख्यात हन याँर रूप, वन्दि हेन राधागदाधर।।
नवद्वीपे लीलाचय, सागर सदृश हय, शैशवेते चापल्य महान्।
कृत यिहोँ महासुखे, वन्दना करिये ताके, तिहोँ राधागदाधर हन।।
श्रीनीलाचलविहारी, शचीर नन्दन हरि, ताँर सङ्गे श्रील गदाधर।
प्रेमामृत सुधारस, आस्वादि हैल अवश, वन्दि हेन राधागदाधर।।
श्रीगौराङ्ग गदाधरे, अर्पिल गोपीनाथेरे, सेवा कैल अति हृष्ट मन।
नीलशैले सदा वास, करिल क्षेत्र सन्न्यास, करि राधागदाइ वन्दन।।

श्रीराधाभिधया गदाधर इति ख्यातं महीमण्डले।
यत् प्रेमाब्धिकणालवेन सकलं मग्नं जगत् सर्व्वदा।
मत्सर्व्वस्व-पदाम्बुजं प्रभुवरं तं लोकनाथस्य मे।
कृष्णप्रेम सुधाश्रयाङ्घ्रि युगलं श्रीपण्डिताख्यं भजे।।

इति श्रीलोकनाथ गोस्वामि विरचितं श्रीराधागदाधराष्टकम्
समाप्तम्।।

श्रीराधिका याँर नाम, गदाधर ख्यात हन, त्रिभुवने प्रसिद्ध हयेन।
यार प्रेम समुद्रेर, कणालेश जगतेर, निरन्तर डुबे सब जन।।
लोकनाथ नाम मोर, प्रभु मम गदाधर, ताँर पादाब्ज सर्व्वस्व मम।
ये श्रीचरण सेविले, कृष्णप्रेम सुधा मिले, भजन करि से श्रीचरण।।
समाप्त।।

श्रील श्रीगदाधराष्टकम् (शार्दूलविक्रीड़ितम् १२-७)

१। (श्री)राधाकृष्ण प्रकाशजनकं श्रीराधिकासम्पुटम्,
वृन्दारण्यसुखप्रचारकमलं स्तम्भादिभावान्वितम्।
श्रीगौराङ्गमहाप्रभोर्व्रजरसामोदावताराकरम्,
वन्दे श्रीलगदाधरं गुरुमहं श्रीपण्डिताख्यं प्रभुम्।।

(पद्यार्थ) श्रीराधाकृष्णेर रस, यिहों करेन प्रकाश, श्रीराधिका सम्पुट ये हन।
वृन्दावन सुखचय, अतिशय प्रचारय, उद्दीप्तादि सात्त्विकभूषण।।
महाप्रभु गौराङ्गेर, व्रजरस आनन्देर, प्रकाशेर ये एक कारण।
हेन प्रभु गदाधर, पण्डिताख्य गुरुवर, वन्दि मुञि ताँहार चरण।।

२। गौरप्रेमवितानदानकुशलं प्रेमार्थिनां प्रेमदं,
सेवाधर्म्म विधायकं त्रिजगति स्वप्रेम सम्पत्प्रदम्।
मादृग् दुःखमतङ्गदारणहरिं गौराङ्घ्रिसेवासुखम्,
वन्दे श्रीलगदाधरं गुरुमहं श्रीपण्डिताख्यं प्रभुम्।।

३। श्रीचैतन्यहरेरनन्यमहसः प्रेमास्पदं भूतले,
राधाकृष्ण रसाब्धिना जगदिदमङ्गीकृतं येन तम्।
श्रीगौराङ्गहरेरनन्यदयितं गौराङ्घ्रिभाजां वरं,
वन्दे श्रीलगदाधरं गुरुमहं श्रीपण्डिताख्यं प्रभुम्।।

४। तीर्थन्यास सदादृतं स्ववपुसा श्रीपुण्डरीकप्रियम्,
राधाकृष्ण नवोज्ज्वलप्रघटितप्रेमप्रनाशास्पदम्।
भूगर्भादियदीयभक्तसकलप्रेमप्रदाङ्घ्रिद्वयं,
वन्दे श्रीलगदाधरं गुरुमहं श्रीपण्डिताख्यं प्रभुम्।।

गौरप्रेम विस्तारिते, चतुर ये ताहा दिते, प्रेमार्थिके यिहोँ प्रेम देन।
सेवाधर्म्मेर विधान, त्रिजगते ये करेन, स्वप्रेम सम्पद करेन दान।।
मादृग् दुःख महाहाती, विदारिते सिंहगति, गौराङ्घ्रि सेवाते सुखी हन।
हेन प्रभु गदाधर, पण्डिताख्य गुरुवर, वन्दि मुञि ताँहार चरण।।
अतुल प्रभाव याँर, हेन प्रभु गौराङ्गेर, भूतले ये अति प्रिय हन।
राधाकृष्ण रसाब्धिते, दुःखित हेन जगते, डुबाइया सवे दिल प्रेम।।
याँहा हैते प्रिय आर, नाहि श्रील गौराङ्गेर, गौरप्रिये श्रेष्ठ यिहोँ हन।
हेन प्रभु गदाधर, पण्डिताख्य गुरुवर, करि ताँर चरण वन्दन।।
ना छाड़ि क्षेत्रसन्न्यास, देह द्वारा कैल वास, पुण्डरीक प्रिय यिहोँ हन।
राधाकृष्ण नवोज्ज्वल, प्रेम अति सुनिर्म्मल, प्रकाशकारण यिहोँ हन।।
श्रीभूगर्भ प्रभृतिर, स्वकीय प्रियजनेर, प्रेमप्रद याँहार चरण।
हेन प्रभु गदाधर, पण्डिताख्य गुरुवर, करि ताँर चरण वन्दन।।

५। श्रीमद्रासरसादिसर्व्वसुखदं श्रीगौरदेहाद्वयं,
श्रीचैतन्यपदाम्बुजैकभजनद्वाराङ्घ्रि पङ्केरुहम्।
श्रीमद्गौरगणाश्रयाश्रयजनाभीष्टप्रदाग्रेसरं,
वन्दे श्रीलगदाधरं गुरुमहं श्रीपण्डिताख्यं प्रभुम्।।

६। भूगर्भादिमदीयकासु तनुषु प्रेमप्रकाशीकृतम्,
ब्रह्मानन्तशिवामरादिसकलागम्यं रसालम्बनम्।
मत्सर्व्वस्वपदाम्बुजं नवनव श्रीभक्तिसिद्धान्तदं,
वन्दे श्रीलगदाधरं गुरुमहं श्रीपण्डिताख्यं प्रभुम्।।

७। वृन्दारण्यसुसेवनादिसकलं श्रीराधिकाकृष्णयो,
र्येनासङ्ख्यमदायि तच्च सुखदं श्रीगौरलीलामृतम्।
वैराग्यैकनिदानमार्गसकलं द्रष्टारमस्मासु तं,
वन्दे श्रीलगदाधरं गुरुमहं श्रीपण्डिताख्यं प्रभुम्।।

रासरस सुखचय, याँहार कृपाय पाय, यिहों गौर हैते भिन्न नय।
याँर पादपद्माश्रय, बिना गौरभक्ति नय, शिवानन्द कहिल निश्चय।।
गौरगणेर आश्रित, यिहों ताँदेर आश्रित, ताँर श्रेष्ठ अभीष्टद हन।
हेन प्रभु गदाधर, पण्डिताख्य गुरुवर, वन्दि ताँर युगल चरण।।
मदीयता भावापन्ने, भूगर्भादि निजजने, यिहों प्रेम प्रदान करय।
ब्रह्मा अनन्त लक्ष्मीर, शम्भु आदि देवतार, अगम्य प्रेमेर ये आश्रय।।
आमार सर्व्वस्व धन, याँर पादपद्म हन, नवभक्ति सिद्धान्तद हन।
हेन प्रभु गदाधर, पण्डिताख्य गुरुवर, वन्दि मुजि ताँहार चरण।।
श्रीराधिका श्रीकृष्णेर, रम्य श्रीवृन्दावनेर, यतेक आछये सुसेवन।
राधादासी भावमय, गौरलीला युत हय, हेन सुख सेवा से दिलेन।।
वैराग्ये आदिकारण, ये सकल मार्ग हन, देखाइल यिहों मादृग् जने।
हेन प्रभु गदाधर, पण्डिताख्य गुरुवर, वन्दि मुजि ताँहार चरण।।

८। स्वर्णाभं सुमुखं दयालुममलं मादृग् जनानन्दनं,
वैराग्यैकसुसीम कृष्णदयितामुख्यं द्विजेन्द्रं प्रभुम्।
गौरप्रेमसुधाश्रितैकशरणं प्रेमस्वरूपाकृतिं,
वन्दे श्रीलगदाधरं गुरुमहं श्रीपण्डिताख्यं प्रभुम्।।
९। श्रीगौरस्य गदाधरस्य सुधियोभेदं न पश्यन्ति ये,
बुद्ध्यातै परिपठ्यतां खलु तदा श्रीपण्डितस्याष्टकम्।
राधाकृष्णरसाब्धिपानजनकश्लोकं सतां वल्लभं,
श्रीगौराङ्गगदाधराङ्घ्रिकमलं नित्यं यदा प्रार्थ्यते।।
१०। निखिलनिगमसारं श्रीमदीशाष्टकं यः,
स्मरति पठति नित्यं श्रीशिवानन्ददकम्।

याँर अङ्ग स्वर्णकान्ति, सुमुख दयालु अति, मादृग् जनेर आनन्दकर।
याँर वैराग्य असीम, कृष्णदयित प्रधान, प्रभु मोर हन द्विजवर।।
गौरप्रेम याँर धन, से याँर आश्रित हन, महाभाव स्वरूप हयेन।
हेन प्रभु गदाधर, पण्डिताख्य गुरुवर, वन्दि मुञि ताँहार चरण।।
श्रीगौरगदाधरेर, पादपद्म माधुर्येर, यदि केह सदा प्रार्थी हय।
से गौरगदाधरेते, भेद ना राखिवे चिते, ताँहाकेइ सुबुद्धि कहय।।
ताँहाराइ पड़िबेक, श्रीगदाधर अष्टक, सज्जनेर अति प्रिय हय।
राधाकृष्ण लीलारस, सागरेर नाहि शेष, इथे सब पान करा हय।।
निखिल निगम सार, मदीश्वर अष्ठकेर, भनिता श्रीशिवानन्द हय।
नित्य करिवे स्मरण, पाठ करे अनुक्षण, ताहाते अपूर्व्व फल हय।।

भणितमिदमपूर्व्वं श्रीलगौराङ्घ्रिपद्मा-

सवसुमधुरभावं प्राप्नुयात् प्रेमन्नाक सः।।

इति श्रीशिवानन्दचक्रवर्ति विरचितं श्रीगदाधराष्टकं समाप्तम्।

श्रीशचीनन्दनेर, श्रीचरण कमलेर, मकरन्द सुशीतल हय।

ताहे राधादासी भाव, पावे, यावे दुःख सब, प्रेमानन्दे डुबिबे सदाय॥ समाप्त

श्रील श्रीगदाधराष्टकम् (पृथ्वी छन्दः)

१। प्रभुप्रिय गदाधरः प्रियगदाधरोहि प्रभुः,

प्रतीत भुवनत्रयं सततमेष आनन्दयत्।

स्वयं प्रणयमाधुरी जगति केन नास्वादिता,

गदाधर मयि प्रभो कुरु कृपाकटाक्षच्छटाम्।।

२। व्रजेशपुरसुन्दरीरसझरीनालिका,

निकारबहुकारिना रभसकेलिरध्यापिता।

त्वमास्वपि वरा हरे स्त्वमसि यत्परं जीवनं,

गदाधर मयि प्रभो कुरु कृपाकटाक्षच्छटाम्।।

गदाधर अतिप्रिय प्रभु गौराङ्गेर। श्रीगौराङ्ग अति प्रिय प्रभु गदाइर।।

सेइ प्रभु गदाधर बड़ कृपावान्। आनन्दित करे सदा सकल भुवन।।

ताँर कृत प्रणयमाधुरी येइजन। नास्वादिल त्रिभुवने नाहि हेन जन।।

हेन प्रभु गदाधर निवेदन मोर। करुणा कटाक्षच्छटा मोर प्रति कर।।

व्रजपुर सुन्दरीर रसेर प्रवाह। ताहार प्रस्रवणेर प्रणालिका येह ।।

तुमि अध्यापिका हेन प्रबल केलिर। श्रीकृष्ण शिखये ताहा निकटे तोमार ।

ओहे राधे तुमि सव गोपीर ईश्वरी । तोमारे जीवनधन करियाछे हरि ।।

हेन प्रभु गदाधर निवेदन मोर । करुणा कटाक्षच्छटा मोर प्रति कर ।।

३। विदग्धनवरङ्गिनीरससुधासरित्सङ्गिनो,
महारसमहोदधे कति रसोर्म्मयो निर्म्मिताः।
व्रजेन्द्रतनयस्यतैर्जगदलं त्वया नाप्यायितं,
गदाधर मयि प्रभो कुरु कृपाकटाक्षच्छटाम्।।

४। नवप्रणयिता सुधास्वदनमन्तरेणानिशं,
क्षणः क्षणशतं भवेत् क्षणादिकातिहृत्त्रासिका।
युवां मिथुनलीलया विलसितं मनोमन्दिरे,
गदाधर मयि प्रभो कुरु कृपाकटाक्षच्छटाम्।।

५। अशेषगुणसंवृता व्रजसुधाकरप्रेयसी,
भवन्तमिह का परा श्रयति वार्षभानव्यपि।
अतः प्रबलया धिया प्रणतवत्सल प्रार्थये,
गदाधर मयि प्रभो कुरु कृपाकटाक्षच्छटाम्।।

चतुरारसिका नव रंगिनीर गण । ताँहादेर रससुधा नदी नाना हन ।।
श्याम महारसाब्धिते से नदी मिलिल । से समुद्रे राधा नाना तरङ्ग निर्मिल ।।
सेइ श्यामार्णवे येइ तरङ्ग हइल । ताहा जगजनेर सुप्रीति सम्पादिल ।।
हेन प्रभु गदाधर निवेदन मोर । करुणा कटाक्षच्छटा मम प्रति कर ।।
नवप्रणयेर येइ सुधारस हय । ताहा यदि निरन्तर अस्वाद ना हय ।।
शतक्षणतुल्य सेइ एकक्षण हय । हृदये सुत्रास दायि जानिह निश्चय ।।
ओहे गदाधर मन मन्दिरे आमार। तोमरा युगलरूपे करह विहार।।
हेन प्रभु गदाधर निवेदन मोर। करुणा कटाक्षच्छटा मम प्रति कर ।।
तोमाते समस्त गुण करिछे आश्रय । व्रजविधु कृष्ण प्रीति करये तोमाय ।।
तोमा छाड़ि अन्ये केवा करये आश्रय। अतएव वार्षभानवि तुमि आश्रय।।
ओहो प्रभो! प्रणतवत्सल हओ तुमि । एइ हेतु तव पद आश्रियाछि आमि।।
हेन प्रभु गदाधर निवेदन मोर । करुणा कटाक्षच्छटा मम प्रति कर ।।

६। अयि व्रजवनेश्वरी! स्वतनुमाधुरीसारभू,
स्त्वमेव माधुराभिधप्रणयसारवारांनिधिः।
अयि द्विजमहेन्द्र! प्रणयिलक्षदक्षाग्रणि,
गदाधर मयि प्रभो कुरु कृपाकटाक्षच्छटाम्।।
७। स्तुवन्ति युवयोर्गुणान् श्रुतिगणाः किमन्ये पुन,
र्युवां नहि विदांवराः श्रुतिविदाम्वराश्चक्रिये।
नयन्त्यसि जनान् बहुस्वसुखभक्तिसंसेवने,
गदाधर मयि प्रभो कुरु कृपाकटाक्षच्छटाम्।।
८। विचित्रित सुखास्पदं भवभयार्त्तिसंत्रासनं,
भवत्पदयुगं कदा रचयति स्वभाग्योदयम्।
इदं हि मम मानसं भजति दुःखमेवानिशं,
गदाधर मयि प्रभो कुरु कृपाकटाक्षच्छटाम्।।

अयि व्रजेश्वरी! तव उपमा ना हय । स्वीय तनु माधुर्य्येर तुमिइ आश्रय ।।
मधुर रसेर येइ सुधार्णव हय । तुमिइ एकमात्र ताहा जानिह निश्चय ।।
ओहे प्रभो! मिश्र पुरन्दर नन्दनेर । दश लक्ष प्रणयिर तुमि अग्रसर ।।
हेन प्रभो ! गदाधर निवेदन मोर । करुणा कटाक्षच्छटा मम प्रति कर ।।
ओहे गौरगदाधर तोमादेर गुण । श्रुतिस्मृति शास्त्र सब करये स्तवन ।।
अतः शास्त्रज्ञेते याँरा वेदज्ञ प्रधान । ताँरा तोमादेर स्तव ना करिवे केन ?
ओहे प्रभो! जीवे कर हेन भक्ति दान। श्रेष्ठानन्द पाय करि याहार सेवन।।
हेन प्रभो! गदाधर निवेदन मोर । स्वकृपाकटाक्षच्छटा मम प्रति कर ।।
ओहे गदाधर तव चरण कृपायँ । कबे हबे मोर हेन सौभाग्य उदय ।।
नानाविध सुखास्पद हबे ये कृपाते । भयंकर आर्त्तित्रास याइबे दूरेते ।।
आमार मनेते सदा इहाइ जागय । कतदिने हेन दुःख दूरेते पलाय।।
ओहे प्रभो! गदाधर निवेदन मोर । करुणा कटाक्षच्छटा मम प्रतिकर ।।

९। इमां हरिरतिप्रदां रसविदां रसैकास्पदं,
पठत्यपि मुहुः सुधाझरकरान्वितां य स्तुतिम्।
अभिन्नमतिता हरेः स्फुरति तस्य लीलाद्वये,
प्रयच्छति गदाधरो हि कुञ्जसेवामपि।।

इति श्रीभूगर्भ गोस्वामि विरचितं श्रीश्रीगदाधराष्टकं समाप्तम्।।

एइ स्तुति हय सदा हरिरतिप्रद । रसविद्‌जनेर हय रसेर आस्पद ।।
इहा हैते सुधा सदा हयत क्षरण । हेन स्तुति येइजन करये पठन ।।
व्रजलीला गौरलीला हरि ये करय । ताहाते अभिन्न मति से जनार हय ।।
गदाधर ताँर प्रति सन्तोष हइया । निज कुञ्ज सेवा देन हरषित हैया ।।

।।समाप्त।।

श्रील श्रीराधागदाधराष्टकम् (पृथ्वी छन्दः ८-९)

१। कलिन्दनगनन्दिनी, तटनिकुञ्जपुञ्जेषु य,
स्ततानवृषभानुजा, कृतिरनल्पलीलारसम्।
* निपीय व्रजमङ्गलो, यमिह गौररूपोऽभवत्,
स मे दिशतु भावुकं प्रभु गदाधरः श्रीगुरुः।।

कलिन्द नगरे यिहाँ तनया विदित । ताँर तीरे निकुंजेर पुंज शत शत ।।
श्रीवृषभानुनन्दिनी स्वरूपे तथाय । बहुबिध लीलारस प्रकाश करय ।।
याहा पान करि से मङ्गलमय हरि । नवद्वीपे प्रकट हैल गौररुप धरि ।।
हेन प्रभु गदाधर श्रील गुरुवर । सर्वदा कुशल मोर उपदेश कर ।।

* यदा तीव्रप्रयत्नेन हंयोगादेरगौरवम्।
न छन्दोभङ्‌गमप्याहुस्तदा दोपाय सुरयः।।

२।　अदभ्रविषयाटवीगहनकुञ्जपुञ्जेचरं,
त्वरस्विकरपङ्कजो य इह राजमार्गेऽनयत्।
जनं करुणावारिधि र्धरणीमण्डले मादृशं
स मे दिशतु भावुकं प्रभु गदाधरः श्रीगुरुः।।

३।　रहःकुजनमण्डलीहरिघटाशटाधुननै,
रतीव भयभाग् जनं तमनुसर्पनेनाश्वपात्।
चकर्त्त निगड़ं द्रुतं स्वजनगेहरूपञ्च यः,
स मे दिशतु भावुकं प्रभु गदाधरः श्रीगुरुः।।

४।　अनन्तगुणकीर्त्तने सदपि गौररूपप्रभोः,
प्रभुर्भवति यः स्वयं विविधभावभाभासितः।
निमज्जयति यो जनान् भजनजह्नु कन्याजले,
स मे दिशतु भावुकं प्रभु गदाधरः श्रीगुरुः।।

सुघोर विषय रूप अटवी कान्तारे । अति गहन निकुंज पुंजेर भितरे ।।
ताहा विचरणशील मादृश ए जन। व्यग्रहस्त भक्तिमार्गे टानि आनिलेन।।
से हेन दुर्गम स्थाने पतित आमारे। करुणा वारिधि प्रभु करिल उद्धारे ।।
हेन प्रभु गदाधर श्रीलगुरुवर। सर्व्वदा कुशल मोर उपदेश कर ।।
खल कुजनमंडली सिंह समूहेर । केशर कंपन द्वारा अति भयंकर ।।
ताहा देखि भयभीत ये जन हय । ताँर पीछे याआ शीघ्र ताँहाके राखय ।।
स्वजन गृहादि दृढ़ लौह वेड़ी हय । कृपा करि यिहोँ ताहा शीघ्र काटि देय ।।
हेन प्रभु गदाधर श्रीलगुरुवर । सर्व्वदा कुशल मोर उपदेश कर ।।
याँहार विविध गुणेर सीमा नाहि हय । हेन श्रील शचीसुत जगते कहय ।।
ताँर गुणावली यिहोँ करिते कीर्तन । विविध भावच्छटाते शोभित हयेन ।।
प्रभु एत दयालेर शिरोमणि । पतित जनारे भक्ति गङ्गाते डुबाय ।।
श्रीलगुरुवर हेन प्रभु गदाधर । आदेश करुन मोर याहा श्रेयकर ।।

५। हरिर्नटनचातुरीं सरसिकुञ्जपुञ्जाग्रजा,
ममन्दमदनासवैः स्वजनमण्डलोन्मादिकाम्।
इति स्फुटतरां गिरं वदति लज्जितः स्वेषु यः,
स मे दिशतु भावुकं प्रभु गदाधरः श्रीगुरुः।।
६। प्रभो कठिनशेखरस्त्वमसि वेद्मि तत्वं तव,
यदा भ्रमसि कानने रहसि देव! मामत्यजः।
उदार्य (इतीर्य) गिरमुन्नतां तपति वेपते यः स्वयं,
स मे दिशतु भावुकं प्रभु गदाधरः श्रीगुरुः।।
७। प्रभो तपननन्दिनी जलविहारं लालायितं,
रहस्मृतिपथं कथं क्व स वनाय नायाति ते।
उदीर्य (इतीर्य) गतचेतनो भवति प्रभोरग्रतो यः,
स मे दिशतु भावुकं प्रभु गदाधरः श्रीगुरुः।।

राधाकुण्ड कुञ्जपुञ्ज अग्रभागे स्थित। प्रेमोन्मत्त हैया राधा ये करिल नृत्य ।।
अत्यन्त चातुरी ताहे प्रकाश हइल । याहा देखि सखीगण उन्मादिनी हैल ।।
हेन कथा सखी मध्ये श्रीकृष्ण बलिल। ताहा शुनि यिहौं अति लज्जित् हइल।।
श्रीलगुरुवर हेन प्रभु गदाधर । आदेश करुन मोर जाहा श्रेय कर ।।
ओहे प्रभु तुमि हओ कठिन शेखर । भालरूपे तवतत्व ज्ञात ये आमार ।।
मने करि देख रासे एकाकिनी मोरे।
फेलिया लुकाइले तुमि वने अति घोरे।।
एइमतं उच्चैस्वरे बलिया बलिया । तापित अन्तरे कहे काँपिया काँपिया ।।
श्रीलगुरुवर हेन प्रभु गदाधर। आदेश करुन याते मोर श्रेय कर ।।
ओहे प्रभु तुमि ये एकान्ते लीला कैले । राधार से जलकेलि स्मरण हइले।।
प्रेम वैचित्रि भावेते समीपे तोमार। बल केन ना आइल प्राणनाथ मोर।।
एइमत उच्चैस्वरे बलिया बलिया। प्रभुर अग्रेते पड़े अचेतन हैया ।।
श्रीलगुरुवर हेन प्रभु गदाधर । आदेश करुन मोर जाहा श्रेयस्कर ।।

८। अनल्पहरिकीर्त्तने हरति चित्तवित्तं बलात्,
तमस्तुतिनिकृन्तने भवति चण्डरोचिश्च यः।
प्रतप्ततनुसेचने शिशिरवारि पुरो हि यः।
स मे दिशतु भावुकं प्रभु गदाधरः श्रीगुरुः।।

इति श्रीपरमानन्दभट्टाचार्य गोस्वामिविरचितम्,
श्रीश्रीराधागदाधराष्टकं स्वाङ्गी कुर्व्वन्तु वैष्णवाः।
श्रीपरमानन्दगोस्वामीकृत श्रीश्रीराधागदाधराष्टकं समाप्तम्।

कृष्णनाम अतिशय ये करे कीर्त्तन । बलेते ताहाँर मन हरये ये जन ।।
जीवेर अज्ञानतम करिवारे दूरे । यिहाँ हय अतिचण्ड किरण सूर्येर ।।
अति तापित शरीर सिंचन विषये । यमुनार सुशीतल जल यिहाँ हये।।
श्रीलगुरुवर हेन प्रभु गदाधर । करुन आदेश मोरे याहा हितकर ।।
परमानन्द गोस्वामिकृत स्तोत्र हन । वैष्णवगण सदाय करुन पठन ।।

।। समाप्त ।।



श्रीगदाधरगौराङ्गोपासनातत्व सन्दर्भ

श्रीगदाधरगौराङ्ग लीलामृत—

श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर रचित श्रीगौराङ्गलीलामृत धृत श्रीलोचनदास कृत निम्न तीन पदों में श्रीगदाधर प्रभु का अति संक्षेप में तत्व, महिमा, उनके भजन से गुण एवं अनादर से दोष व्यक्त हुआ है—

प्रथम पद—

जय जय गदाधर गौराङ्ग सुन्दर। एक आत्मा प्रकट भाव दुइ कलेवर।।
वृन्दावने राधाकृष्ण नवयुवद्वन्द्व । इदानीं प्रकट गदाधर गौरचन्द्र ।।
महाभाव स्वरूपा राधा वृन्दावनेश्वरी । सेइ एइ गदाधर पण्डितावतारी।।
रसराजमय मूर्त्ति व्रजेन्द्रनन्दन । सेइ एइ गौरचन्द्र पूर्ण प्रकटन ।।
रागानुगामार्गे ये भजिते साध करे। पंडित गोसाञिर शिष्यगण अनुसारे।।
ए सवार अनुगा विना व्रज प्राप्ति नाइ। अतएव ताँर शिष्य व्रजेर गोसाञि।।
याँर लागि लक्ष्मी देवी अन्तर्म्मना हैया। अद्यावधि तप करे ताँहार लागिया।।
तथापि ना पाय सेइ व्रजेन्द्र नन्दन। तिहीँ याँर प्रेम वश हय अनुक्षण ।।
सेइ राधा हय एइ पण्डित गोसाञि । गौर प्रेम सुधारस पाइ याँर ठाँइ ।।
अतएव ताँरे येवा हय रति हीन । प्रेम भक्ति नाहि ताँर हय महादीन ।।
इहातेओ येइजन ना करे विश्वास।कोटि जन्मे नाहि त्राण ताँर सर्व्वनाश।।
गदाधर गौराङ्ग पदे एइ निवेदन । से सकल सङ्ग येन ना हय कथन ।।
पाषण्ड आलाप सङ्ग सेइ मोर भाल। पण्डित निन्दुक सङ्ग सेइ मोर शेल।।
मदीरा सेवन मोर चिते यदि भाय। तथापि ताँहार सङ्ग भय लागे गाय।।
गदाधर गौराङ्ग पदाम्बुज करि आश। चरणेशरण मागे ए लोचन दास।।

द्वितीय पद

गदाधर गदाधर गदाधर आशे । गदाधर गाइ येन व्रजपुर वासे ।।
गदाधर नाम लैया हइव उदासीन। खाइव करङ्गे जल परिव कौपीन।।
एइ से मनेर आशा हय बहुदिने। गदाधर गौर प्रेम शुनिब श्रवणे ।।
सेइ गुरु सेइ शिष्य तोमाके ये जाने। तोमा छाड़ि भक्ति करे चक्षुहीन जने।।
गदाधर पादपद्मे एइ अभिलाष। चरणे शरण मागे ए लोचन दास।।

तृतीय पद–

भक्त भज मन, माधव नन्दन, गदाधर याँर नाम ।
ताँहार चरण, ये करे शरण, सेइ याय व्रजधाम ।।
बहु सखा सङ्गे, कुतूहल रङ्गे, सेवि सुखी कैल श्याम ।
पूर्वे व्रजपुरे, वृषभानुघरे, धरिया राधिका नाम ।।
एवे गौर सङ्गे, अवतरि रङ्गे, हइला वैरागी वेश ।
नीलाचले आसि, भक्तसङ्गे वसि, तारिला अनेक देश ।।
से प्रेम पाथारे, जगत साँतारे, ताप गेल सब नाश ।
प्रेमेर सायरे, ना देखे पामरे, कहे ए लोचन दास ।।

श्रीगदाधर प्रभु का आविर्भाव लीला (पाहिड़ी)

श्रीनरहरि सरकार कृत ।

धन्य धन्य बलि येन, चारि युग मध्ये हेन, कलिर भाग्येर सीमा नाइ ।
सुन्दर नदीयापुरे, माधव मिश्रेर घरे, कि अद्भुत आनन्द बाधाइ।।

वैशाखेर कुहुदिने, जनमिला शुभक्षणे, गौराङ्गेर प्रिय गदाधर ।
श्रीमाधव रत्नावती, पुत्र मुख देखि अति, उल्लासे अधैर्य निरन्तर ।।
किवा गदाधर शोभा, सवार नयन लोभा, येन कत आनन्देर धाम ।
झलमल करे वर्ण, जिनिया से शुद्ध स्वर्ण, सर्वाङ्ग सुन्दर अनुपम।।
देखिते आइसे लोक, पाशरिया दु:ख शोक, परस्पर कहे कुतूहले।
माधव मिश्रेर भाग्य, हैल हेन पुत्र लभ्य, ना जानि कतेक पुण्य फले।।
विप्रपत्नीगण आसि, आनन्द सागरे भासि, रत्नावती माये प्रशंसिया।
देखिया सोनार सुते, धान्य दुर्व्वा दिया माथे, आशिर्वादकरे हर्ष हैया।।
गदाधर प्रभावेते, विविध मङ्गल याते, वन्दिगण करे धाओया धाइ।
नरहरि कहे येन, जनमे जनमे हेन, गदाइ चाँदेर गुण गाइ ।।



(श्रीगदाधर प्रभु के लीला का संक्षेप में वर्णन)

आमोर करुणावान, अनाथ जनार प्राण, गदाधर पंडित गोसाञि ।
जगतेर चित्तचोरा, गोकुल नागर गोरा, याँर रसे उल्लास सदाइ ।।
याँर मुख निरखिया, भूमे पड़े मुरछिया, तिलेक धैरज नाहि माने ।
जलकेलि पाशासारि,फागु खेला आदि करि, कीर्त्तने नर्त्तन याँर सने।।
गदाधर प्रभु गुणे, दिवानिशि नाहि जाने, सुखेर सायरे सदा भासे ।
प्रभुर मनेते याहा, समय बुझिया ताहा, योगायेन रहि प्रभु पाशे ।।
एकदिन शचीमाता, ताम्बूल अर्पणे तथा, देखि गदाधरेर प्रताप ।
धरिया गदाइ हाते, कहे निमाञिर साथे, सतत रहिवे मोर वाप ।।
गौराङ्ग गमन यथा, गदाधर चले तथा, तिलेक छाड़िते नारे सङ्ग ।
श्रीवास अद्वैत मने, कत सुख क्षणे क्षणे, देखि गौरा गदाधर रङ्ग ।।
गदाइ गौराङ्ग अङ्गे, चन्दन लेपये रङ्गे, मालतीर माला दिया गले ।

ना जानि कि करे हिया, प्राणनाथे निरखिया,भासे दुटि नयनेर जले।।
प्रभुर शयन घरे, शय्यार रचना करे, शयन करिले गौरा राय।
गदाइ समीपे शुञा, पूर्व्व कथामृत दिया, कत भाव उथले हियाय।।
गौराङ्ग गोकुल शशि, ए हेन आनन्दे भासि, नवद्वीपे करिया विहार।
जानाइया गदाधरे, पुरुव प्रेमेर भरे, करिल सन्न्यास अङ्गीकार।।
श्रीकेशेर अदर्शने, ये हैल गदाइ मने, ताहा के कहिवे एक मुखे।
नीलाचले प्रभु सहे, गिया गोपीनाथ गृहे, वास नियमित सेवा सुखे।।
तथा प्रभु महासुखे, पण्डित गोसाञिर मुखे, शुनेन श्रीभागवत कथा।
से कथा अमृत पाने, धारा बहे दुनयने, किवा से अद्भुत प्रेम प्रथा।।
प्रभु नीलाचल हैते, श्रीगौड़ मण्डल पथे, गमन करिते वृन्दावने।
गदाइर निर्व्वन्ध याहा, सेइक्षणे छाड़ि ताहा, चले निज प्राणनाथ सने।।
गौरगदाधर दोँहे, से समय याहा कहे, ताहा शुनि केवा धैर्य धरे।
कतना शपथ दिया, गदाधरे फिराइया, चले प्रभु कातर अन्तरे।।
गदाइ 'गौराङ्ग' बलि, काँदे दुइ बाहु तुलि, भूमे पड़े मुरछित हैञा।
सार्व्वभौम आदि यत, गदाधरे कहि कत, नीलाचले चले यत्ने लैया।।
गदाइर व्याकुल प्राण, ना भाय भोजन पान, बहे वारि नयन युगले।
के वुझे एप्रेम धारा, कतेक दिवसे गोरा,आसिया मिलिला नीलाचले।।
पराण नाथेरे पाञा, गदाइ आनन्द हिया, विच्छेद वेदना गेल दूरे।
आहा मरि मरि भाइ, भुवने उपमा नाइ, गदाइर गुणे के ना झुरे।।
प्रभु नित्यानन्द भाले, याँर लागि नीलाचले, आनिला तण्डुल गौड़ हैते।
गदाधर पाक कैल, भक्षणे ये सुख हैल, ताहार तुलना नाइ दिते।।
नित्यानन्द विमुखेरे, गदाइ देखिते नारे, से ना देखे गदाइ विमुखे।
कहे दास नरहरि, गाओ गाओ मुख भरि, ए हेन गदाइ गुण सुखे।।

श्रीगदाधर प्रभु के अङ्गों के सौन्दर्य व माधुर्य का वर्णन

(यथाराग)

गदाधर परम सुघर रसधाम।

रुचिर गौरतनु, तनुरुचि रुचिकर, तछु निरमञ्छन करु कत काम(ध्रु)।।

ओ मुख कमल, कमलवन विजित, सुचारु मकरन्द सदृश मृदु हासि।

घन घन नयन, चषक भरि भरि परि, पीयत हिओ मधि अधिक उल्लासि

ओ मृदु मधुर, वचन रचना नव, निन्दित जग वशीकरण सुमन्त्र।

शुनत लुवध श्रुति, श्रुतिवाञ्छत बहु, विसारित वेदश्रवण श्रुति तन्त्र।।

पुरुव चरितचित, चिन्तिअथिर धृत, गति विरहित अतिशय सुखे भासि।

दूरे रहु हेम, प्रेम निरुपम वर, नरहरि गुपत वेकत हेरि हासि।।

(वेलोयार)जय जय श्रील, गदाधरपण्डित, मण्डित भावभूषण अनुपाम।

श्रचैतन्य अभिन्न, शकति गुणनाम, धन्य सुदुर्गम यछु रसधाम।।

किये विधि जगजन दुरगति जानि।

श्रीवृन्दावन, मधुर भजन धन, सम्पद सार मिलायल आनि।। (ध्रु)

गर गर गौर, प्रेम भरे झर झर, अरुण करुण वरुणालय आँखि।

क्षणेके स्तबध, शबद क्षणे गद गद, आध आध पद गोपीनाथ भाखि।।

नव अनुरागी, लागि रह अन्तर, ऊथलये क्षणे नव जलधि तरङ्ग।

दास शिवाइ, आओइ क्षीण दीनजन,ना पाओल सतत असत पथ रङ्ग।।

• •

श्रीश्रीराधामाधव-स्तवः

जय कृष्ण कृपामय कल्पतरो, गुण गौरव विश्रुत विश्वगुरो।
मयि देहि दृशं भव दुःख सहे, जय यादव माधव केशव हे।।१।।
शिखि वर्ह विभूषित मौलिवर, मुनिमानस मोहन मूर्त्तिधर।
चिर केलि पर व्रजभूमि रुहे, जय यादव माधव केशव हे।।२।।
जगदीश्वर! नश्वर विश्वहितं, तव भास्वर रूपमिदं विहितम्।
हृदयं व्यथितं भवतो विरहे, जय यादव माधव केशव हे।।३।।
व्रजवालक लालन कृत्य पटो, निज गोधन पालन दक्ष वटो।
कृत रक्षण भीषण दावदहे, जय यादव माधव केशव हे।।४।।
यमुना ह्रद शोधन तीव्र विषाद्, व्रज जीवन ताण्डव दण्ड मिषात्।
चरणप्रद नाग फणा निवहे। जय यादव माधव केशव हे।।५।।
गिरिराज तटे घृतदान महे, धृत हेम घटे रमणी निवहे।
कृत कौतुक! केलि कला कलहे, जय यादव माधव केशव हे।।६।।
तुलसीदल चन्दन माल्य मयैर्दयितालि विनिर्मित वेशचयैः।
परिशोभित! रम्य निकुञ्ज गृहे, जय यादव माधव केशव हे।।७।।
मधुराधर हास्य सुधा सदनं, मुरलीवर वादन कृद् वदनम्।
आलमादन! तद्गत गन्धवहे, जय यादव माधव केशव हे।।८।।
जय राधिकयाश्रित वामतनो, हत दर्पदशा मतनो रतनोः।
रमणी मणि मण्डित रासमहे, जय यादव माधव केशव हे।।९।।
चरणाम्बुज-मर्पय दीनपते, करुणा कणया मम मन्दमतेः।
शिरसि प्रणते सितकेश-वहे, जय यादव माधव केशव हे।।१०।।
इति दीन विनोद कृत स्तवनैर्निज चित्त विनोद कृद् वचनैः।
रतिरस्तु भवच्चरणाम्बुरुहे, जय यादव माधव केशव हे।।११।।

नित्यधामगत-प्रभुपाद-श्रील विनोद विहारी गोस्वामि विरचित
श्रीश्रीराधामाधव-स्तवः समाप्तः।

।। श्रीश्रीगौरगदाधरौ जयतः ।।

श्रीमद् रघुनाथदासगोस्वामि विरचिता

मनःशिक्षा

गुरौ गोष्ठे गोष्ठालयिषु सुजने भूसुरगणे
स्वमन्त्रे श्रीनाम्नि ब्रजनवयुवद्वन्द शरणे।
सदा दम्भं हित्वा कुरुरतिमपूर्व्वामतितरा-
मये स्वान्तभ्रान्तश्चटुभिरभियाचे धृतपदः ।।१।।
न धर्म्मं नाधर्म्मं श्रुतिगण निरुक्तं किलकुरु
व्रजे राधाकृष्ण प्रचुर परिचर्य्यामिह तनु।
शचीसूनुं नन्दीश्वर पति सुतत्वे गुरुवरं
मुकुन्द प्रेष्ठत्वे स्मर परमाजस्त्रं ननु मनः ।।२।।

हे मन! मैं तुम्हारे चरणों में विनम्र प्रार्थना कर रहा हूँ कि तुम सर्वथा दम्भ को छोड़कर श्रीगुरुदेव, श्रीव्रजधाम, व्रजवासिवृन्द, सज्जनवृन्द, वैष्णव, ब्राह्मणवृन्द, निजमन्त्र, श्रीहरिनाम एवं व्रज के नवकिशोर युगल श्रीराधाकृष्ण के पास आत्मसमर्पण करके उन सबके प्रति अनुराग कर॥१॥

श्रुतिवृन्द वर्णित धर्म, अधर्म के प्रति सन्तुष्ट न होना, श्रुतिवृन्द परम उपादेय, सर्वश्रेष्ठ रूप से जिसका चरम सिद्धान्त किये हैं उस राधाकृष्ण की परिचर्या एकान्त रूप से कर। श्रीशचीनन्दन को नन्दीश्वर पति श्रीनन्द महाराज के पुत्र मानकर एवं श्रीगुरुदेव को श्रीकृष्णप्रेष्ठ रूप से निरन्तर चिन्तन कर॥२॥

यदीच्छेरावासं व्रजभुवि सरागं प्रतिजनु-
युवद्वन्द्वं तच्चेत् परिचयितुमारादभिलषेः।
स्वरूपं श्रीरूपं सगणमिह तस्याग्रजमपि
स्फुटं प्रेम्णा नित्यं स्मर नम तदात्मं शृणु मनः।।३।।

असद्वार्त्ता वेश्या विसृजमति-सर्व्वस्वहरणीः
कथा मुक्तिव्याघ्र्या न शृणु किल सर्व्वात्मगिलनीः।
अपि त्यक्त्वा लक्ष्मीपतिरतिमितो व्योम नयनीं
व्रजे राधाकृष्णौ स्वरति-मणिदौ त्वं भज मनः।।४।।

असच्चेष्टा कष्टप्रद विकट पाशालिभिरिह
प्रकामं कामादि प्रकट पथपाति व्यातिकरैः।।
गले बद्ध्वाहन्येऽहमिति वकभिद्वर्त्मपगणे
कुरु त्वं फुत्कारानवति स यथा त्वं मन इतः।।५।।

मन! यदि तुम व्रजभूमि में अनुराग के साथ निवास करना चाहते हो, एवं साक्षात् रूप से मधुर श्रीराधाकृष्ण युगल की सेवा करना चाहते हो, तो सुनो! तुम इसी जीवन में ही श्रीस्वरूप गोस्वामी प्रभु, सपरिकर श्रीरूप सनातन प्रभु का स्मरण सदा प्रेम से कर॥३॥

मन! विवेक अपहारिणी असत् कथा रूपिणी वेश्या को तुम परित्याग करो। मुक्ति वार्त्ता रूपी समस्त ग्रास करने वाली शेरनी की कथा कभी भी न सुनना। तुम वैकुण्ठेश्वर श्री नारायण की भक्ति को भी त्यागकर इस व्रजभूमि में निज प्रेमदाता श्री राधाकृष्ण का भजन कर॥४॥

मन! संसार के प्रकट पथ में आक्रमणकारी काम, क्रोध आदि आसक्ति वर्ग, अनित्य विषय चेष्टारूप दुःखद भयङ्कर डोरी से गले में बाँधकर मुझे मार रहे हैं, इसलिए श्रीकृष्ण भक्ति मार्ग रक्षक वैष्णवों को जोर-जोर से बुलाओ, वे सब इन शत्रुओं से तुम्हारी रक्षा करेंगे॥५॥

अहे चेतः! प्रोद्यत् कपट कुटिनाटीभरखर-
क्षरन्मूत्रे स्नात्वा दहसि कथमात्मानमपि माम्।
सदा त्वं गान्धर्व्वा गिरिधर-पद-प्रेम-विलसत्-
सुधाम्भोधौ स्नात्वा स्वमपि नितरां माञ्च सुखय।।६।।
प्रतिष्ठाशाधृष्ट्याश्वपचरमणी मे हृदि नटेत्
कथं साधुः प्रेमा स्पृशति शुचिरेतन्ननु मनः।
सदा त्वं सेवस्व प्रभु दयित सामन्तमतुलं
यथा तां निष्काश्य त्वरितमिह तं वेशयति सः।।७।।
यथा दुष्टत्वं मे दवयति शठस्यापि कृपया
यथा मह्यं प्रेमामृतमपि ददत्युज्ज्वलमसौ।
यथा श्री गान्धर्व्वाभजनविधये प्रेरयति मां
तदा गोष्ठे काक्वा गिरिधरमिह त्वं भज मनः।।८।।

मन! तुम सर्वदा कपट कुटिनाटी रूप क्षरणशील गधे के मूत्र से स्नानकर अपने को और मुझको क्यों जला रहा है? तुम श्री गान्धर्वा गिरिधारी के चरण कमल के प्रेम से प्रकाशित सुधा समुद्र में नित्य स्नान करके अपने को और मुझको सुखी कर॥६॥

मन! निर्लज्जा चण्डालिनी प्रतिष्ठाशा यदि मेरे हृदय में नृत्य करे, तो साधु प्रेम इस हृदय को कैसे स्पर्श करेगा? अतएव तुम प्रभु श्रीकृष्ण के प्रिय अद्वितीय सामन्त की अर्थात् श्री गुरु वैष्णव की सदा सेवा कर, जिससे श्रीकृष्ण उस प्रतिष्ठाशा को शीघ्र निकालकर इस हृदय में उस प्रेम का सञ्चार करेङ्गे॥७॥

मन! इस गोष्ठ में विनती के साथ तुम श्री गिरिधारी की सेवा कर। जिससे श्री गिरिधारी सन्तुष्ट होकर मुझ दुष्ट का भी दुष्ट स्वभाव को दूर कर देङ्गे, प्रेम प्रदान करेंगे एवं श्री राधिका की सेवा करने के

मदीशानाथत्वे व्रजविपिनचन्द्रं व्रजवने-
श्वरीं मन्नाथत्वे तदतुलसखीत्वे तु ललिताम्।
विशाखां शिक्षालीवितरण गुरुत्वे प्रियसरो
गिरीन्द्रौ तत्प्रेक्षा-ललित-रतिदत्वे स्मर मनः।।९
रतिं गौरीलीले अपि तपति सौन्दर्यकिरणैः
शची-लक्ष्मी-सत्याः परिभवति सौभाग्य-वलनैः।
वशीकारैश्चन्द्रावलीमुख-नवीन व्रजसतीः
क्षिपत्याराद् या तां हरिदयितराधां भज मनः।।१०।।
समं श्रीरूपेण स्मर विवश राधागिरिभृतो
व्रजे साक्षात् सेवालभन विधये तद्गण युजोः।

लिए मुझको आदेश करेंगे ॥८ ॥

मन! व्रजचन्द्रमा श्रीकृष्ण को मेरी ईश्वरी के अर्थात् श्रीराधा के ईश्वर रूप में, वृन्दावनेश्वरी श्रीराधा को निज ईश्वरी रूप में, ललिता को श्रीराधा की अतुलनीय सखी रूप में, श्री विशाखा को समस्त शिक्षा वितरणकारी गुरुरूप में एवं प्रिय सरोवर श्रीराधाकुण्ड, गिरिराज श्री गोवर्द्धन को श्रीराधाकृष्ण के दर्शन, प्रेम विलास में रतिदायक रूप में तुम चिन्तन कर ॥९ ॥

मन! निज सौन्दर्य के किरण से जो श्रीरतिदेवी, श्रीगौरी देवी, श्रीलीलादेवी को सन्तप्त करती हैं, सौभाग्य वल्लभ की प्रियता की अतिशयता से इन्द्राणी, लक्ष्मी और सत्यभामा को पराजित करती हैं; प्रियतम के वशीकरण के द्वारा चन्द्रावली आदि प्रमुख करुण व्रजललनावृन्द को पराजित करती हैं, उन श्रीकृष्ण प्रेयसी श्रीराधा का भजन कर ॥१० ॥

मन! व्रज में श्रीरूप के साथ एवं सपरिकर कन्दर्प विभोर

तदिज्या ध्यान श्रवण नति पञ्चामृतमिदं
धयन्नीत्या गोवर्द्धनमनुदिनं त्वं भज मनः।।११।।
मनःशिक्षादैकादशकवरमेतन्मधुरया
गिरा गायत्युच्चैः समधिगतसर्व्वार्थतति यः।
सयूथः श्रीरूपानुग इह भवन् गोकुलवने
जनो राधाकृष्णातुलभजनरत्नं स लभते।।१२।।

इति श्रीमद्रघुनाथदास गोस्वामि-विरचिता श्रीश्रीमनःशिक्षा सम्पूर्णम्।

श्रीराधा गिरिधारी की साक्षात् सेवा प्राप्त करने के उपाय प्राप्ति के उद्देश्य से श्रीराधाकृष्ण की अर्चना, आख्यान, ध्यान, श्रवण और नति— इन पाँच प्रकार के अमृत का पान यथारीति से करते-करते श्रीगोवर्द्धन का भजन कर ॥११॥

सपरिकर श्रीरूप का अनुगत होकर सकल अर्थज्ञान के साथ मनः शिक्षाप्रद सर्वोत्तम एकादश श्लोकों का मधुर स्वर से जो कीर्त्तन करता है, वह इस गोकुल वन में श्रीराधाकृष्ण का अतुलनीय भजन रत्न प्राप्त करता है॥१२॥

इति श्रीमद्रघुनाथ दास गोस्वामि विरचिता श्रीश्रीमनः शिक्षा सम्पूर्णम्।

श्रील रघुनाथदास गोस्वामि विरचितम्

स्वनियम दशकम्

गुरौ मन्त्रे नाम्नि प्रभुवर-शचीगर्भ्भज पदे
स्वरूपे श्रीरूपे गणयुजि तदीय प्रथमजे।
गिरीन्द्रे गान्धर्व्वासरसि मधुपुर्यां व्रजवने
व्रजे भक्ते गोष्ठालयिषु परमास्तां मम रतिः।।१।।
न चान्यत्र क्षेत्रे हरितनु सनाथेऽपि सुजनाद्
रसास्वादं प्रेम्णा दधदपि वसामि क्षणमपि।
समं त्वेतद्ग्राम्यावलिभिरभितन्वन्नपि कथां
विधास्ये संवासं व्रजभुवन एव प्रतिभवम्।।२।।
सदा राधाकृष्णोच्छलदतुल खेलास्थलयुजं
व्रजं संत्यज्यैतद् युगविरहितोऽपि त्रुटिमपि।

श्रीगुरुचरण में, इष्ट मन्त्र में, श्री हरिनाम में, प्रभुवर श्रीशचीनन्दन के श्रीचरणकमलों में, सपरिकर श्रीस्वरूप दामोदर प्रभु, श्रीरूप गोस्वामी प्रभु, श्रीरूपाग्रज श्रीसनातन गोस्वामी प्रभु के चरणों में, गिरिवर श्रीगोवर्द्धन में, श्रीराधाकुण्ड में, श्रीमथुरा धाम में, श्रीवृन्दावन में, श्रीगोष्ठ में, शुद्ध भक्तगण में एवं गोष्ठ निवासी जनों में मेरी अतिशय प्रीति हो॥१॥

किसी भी क्षेत्र में श्रीहरि के श्रीविग्रह विराजित होने पर भी एवं सज्जन वैष्णव सङ्ग प्राप्त होने पर भी वहाँ थोड़ी देर भी नहीं रहुँगा। किन्तु इस व्रजभूमि में ही इन सकल ग्राम्य लोकों के साथ विविध आलाप पूर्वक प्रतिजन्म में वास करुँगा॥२॥

बहुकाल विरही होने पर भी सदा श्रीराधाकृष्ण के अतुलनीय

पुनर्द्वारावत्यां यदुपतिमपि प्रौढ़विभवैः
स्फुरन्तं तद्वाचापि हि नहि चलामीक्षितुमपि।।३।।
गतोन्मादे राधा स्फुरति हरिणा श्लिष्टहृदया
स्फुटं द्वारावत्यामिति यदि शृणोमि श्रुतितटे।
तदाहं तत्रैवोद्धतमपि पतामि व्रजपुरात्
समुड्डीय स्वान्ताधिकगतिखगेन्द्रादपि जवात्।।४।।
अनादिः सादिर्व्वा पटुरतिमृदुर्व्वा प्रतिपद
प्रमीलत्कारुण्यः प्रगुणकरुणाहीन इति वा।
महावैकुण्ठेशाधिक इह नरो वा व्रजपते-
रयं शृणुर्गोष्ठे प्रतिजनि ममास्तां प्रभुवरः।।५।।
अनादृत्योद्गीतामपि मुनिगणैर्वैणिकमुखैः
प्रवीणां गान्धर्व्वामपि च निगमैस्तत् प्रियकथाम्।

लीलास्थान युक्त इस व्रजधाम को छोड़कर पूर्ण ऐश्वर्य से दीप्तिमान् श्रीद्वारका को श्रीयदुपति के दर्शन के लिए उनके आदेश से भी थोड़ी देर के लिए भी मैं नहीं जाऊँगा॥३॥

चित्त के उन्माद से श्रीराधा द्वारका में जाकर श्रीकृष्ण के साथ विराज रही हैं, यह सुनकर मैं मन से भी अधिक वेग से, श्रीगरुड़ से भी अति वेग से श्रीवृन्दावन से उड़कर श्रीद्वारका में गिरुँगा॥४

अनादि अथवा आदि, कठिन अथवा अति कोमल, कृपा युक्त अथवा निर्दय इस प्रकार– परमेश्वर श्रीनारायण से अधिक उत्कर्ष युक्त, अथवा सामान्य मनुष्य मात्र हों, इस गोष्ठ में व्रजराजनन्दन प्रतिजन्म में मेरे प्रभु हों॥५॥

वेदादि शास्त्र समूह और श्रीनारदादि मुनिवृन्द जिनको श्रीकृष्ण की भी एकमात्र सर्वश्रेष्ठ प्रियतमा कहे हैं, उन श्रीराधा को अनादर

य एकं गोविन्दं भजति कपटीदाम्भिकतया
तदभ्यणे शीर्णे क्षणमपि न यामि व्रतमिदम्।।६।।
अजाण्डे राधेति स्फुरदभिधया सिक्तजनया-
ऽनया साकं कृष्णं भजति य इह प्रेमनमितः।
परं प्रक्षाल्येतच्चरणकमले तज्जलमहो
मुदा पीत्वा शश्वच्छिरसि च वहामि प्रतिदिनम्।।७।।
परित्यक्तः प्रेयोजनसमुदयैर्वाढ़मसुधी-
र्दुरन्धो नीरन्ध्रं कदनभरवार्द्धौ निपतितः।
तृणं दन्तैर्दष्ट्वा चटुभिरभियाचेऽद्य कृपया
स्वयं श्रीगान्धर्व्वा स्वपदनलिनान्तं नयतु माम्।।८।।
व्रजोत्पन्नक्षीराशनवसनपत्रादिभिरहं
पदार्थैर्निर्वाह्य व्यवहृतिमदम्भं सनियमः।

करके जो कपटी व्यक्ति दम्भ से एकक श्रीगोविन्द का भजन करता है, मैं उसके पास मुहूर्त्त के लिए भी नहीं जाऊँगा। यही मेरा व्रत है॥६॥

श्रीराधा नामक उज्ज्वल मुख्य नाम धारिणी और मानववृन्द को प्रेमाप्लुत कारिणी के साथ जो इस ब्रह्माण्ड में श्रीकृष्ण का भजन प्रणत होकर प्रेम से करता है, मैं उसका पादपद्म युगल प्रतिदिन प्रक्षालन करके वह चरणामृत आनन्द से सदा पानकरके मस्तक में धारण करता हूँ॥७॥

श्रीरूप सनातनादि प्रियतम जनवृन्द के द्वारा परित्यक्त, अज्ञ, अतिशय अन्ध, नाना यातनापूर्ण सागर में उपायहीन रूप में निपतित मैं दाँतों से तृण को दबाकर प्रार्थना कर रहा हूँ– स्वयं श्रीराधिका मुझको निज श्रीचरणकमल के समीप में कृपापूर्वक आकर्षण करें॥८॥

व्रजधाम में उत्पन्न दूध आदि, वस्त्र, पत्रादि द्रव्यसमूह के द्वारा दम्भहीन रूप से मैं जीवन यात्रा निर्वाह करके नियम से श्रीराधाकुण्ड,

वसामीशाकुण्डे गिरिकुलवरे चैव समये
मरिष्ये तु प्रेष्ठे सरसि खलु जीवादि पुरतः।।९।।
स्फुरल्लक्ष्मीलक्ष्मीव्रजविजयिलक्ष्मीभरलस-
द्वपुः श्रीगान्धर्व्वास्मरनिकरदीव्यद्‌गिरिभृतोः।
विधास्ये कुञ्जादौ विविधवरिवस्याः सरभसं
रहः श्रीरूपाख्य प्रियतमजनस्यैव चरमः।।१०।।
कृतं केनाप्येतन्निजनियमशंसिस्तवमिमं
पठेद् यो विस्रब्धः प्रिययुगलरूपेऽर्पितमनाः।
दृढ़ं गोष्ठे हृष्टो वसति वसतिं प्राप्य समये
मुदा राधाकृष्णौ भजति सहितेनैव सहितम्।।११।।

।। इति श्रीस्वनियमदशकं सम्पूर्णम्।।

श्रीगोवर्द्धन में ही निवास करुँगा। समय आने पर प्रियतम सरोवर श्रीराधाकुण्ड में ही श्रीजीव गोस्वामी आदि के सामने प्राण त्याग करुँगा॥९॥

मैं प्रियतमजन श्रीरूप के पीछे रहकर ही कुञ्जादि में, निर्ज्जन में श्रीलक्ष्मीदेवी में प्रकाशित रूपराशि का पराभवकारी रूप से शोभित श्री राधिका एवं कन्दर्प समूह की भाँति देदीप्यमान श्रीगिरिधारी की विविध सेवा आनन्द से सम्पादन करुँगा॥१०॥

किसी निष्किञ्चन जन के द्वारा रचित निजनियम सूचक स्तव का पाठ जो श्रीराधाकृष्ण के स्वरूप में अथवा प्रेम परायण श्रीरूप आदि में चित्त समर्पण करके विश्वास से करेगा, वह समय पर व्रजधाम में निश्चय ही स्थान प्राप्त करेगा एवं श्रीरूप प्रभु के साथ निश्चय ही आनन्द से श्रीराधाकृष्ण की सेवा करेगा॥११॥

॥ इति श्रीस्वनियम दशक का अनुवाद समाप्त ॥

उपदेशामृतम्

वाचो वेगं मनसः क्रोधवेगं
जिह्वावेगमुदरोपस्थवेगम्
एतान् वेगान् यो विषहेत वीरः
सर्व्वामपीमां पृथिवीं स शिष्यात्।।१।।

अत्याहारः प्रयासश्च प्रजल्पो नियमाग्रहः।
जनसङ्गश्च लौल्यञ्च षड्भिर्भक्तिर्विनश्यति।।२।।

उत्साहान्निश्चयाद्धैर्यात्तत्तत् कर्म्मप्रवर्त्तनात्।
सङ्गत्यागात् सतो वृत्तेः षड्भिर्भक्तिः प्रसीदति।।३।।

कटु वाक्य का वेग, मन व क्रोध का वेग, जिह्वा का वेग, उदर व उपस्थ का वेग; इन सब वेगों को सहन अथवा धारण करने में जो व्यक्ति समर्थ है, अर्थात् अयथा कटु वाक्य, क्रोध, लोभ, अधिक भोजन, उपस्थ इन्द्रिय में आसक्ति नहीं करता है, वह वीर व्यक्ति समग्र पृथिवी का आधिपत्य करता है॥१॥

अत्यधिक भोजन, व्यर्थ परिश्रम, असम्बन्ध प्रलाप, भजन का नियम पालन न करना, भगवद् विमुखजन सङ्ग, विषय आदि में व्यक्तिगत भोग लालसा, इन छः आचरणों से भक्ति विनष्ट होती है॥२॥

श्रीभगवत् सेवा कार्य में उत्साह, श्रीभगवतत्त्व ज्ञान, निजकृत कर्म दुर्विपाक से धैर्य, अर्थात् निजकृत कर्म कृत सुख दुःखादि फल भोग से उद्विग्न न होना, सेवानुकूल प्रसिद्ध कर्म समूह का यथावत् अनुष्ठान, श्रीभगवद् विमुख जन सङ्ग त्याग और सदाचार का अनुसरण; इन छः के आचरण से भक्ति देवी हृदय में विराजित होती हैं॥३॥

ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुङ्क्ते भोजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षणम्।।४।।
कृष्णेति यस्य गिरि मनसाद्रियेत
दीक्षास्ति चेत् प्रणतिभिश्च भजन्तमीशम्।
शुश्रूषया भजनविज्ञमनन्यमन्य-
निन्दादिशून्यहृदमीप्सित सङ्गलब्ध्या।।५।।
दृष्टैः स्वभावजनितैर्वपुषस्तु दोषै-
र्न प्राकृतत्वमिह भक्तजनस्य पस्येत्।
गङ्गाम्भसां न खलु वुद्वुद्फेनपङ्कैः
ब्रह्मद्रवत्वमपगच्छति नीरधर्मैः।।६।।

प्रिय व्यक्ति को दान करना, उनके पास से ग्रहण करना, गोपनीय कथा पूछना, उनके पास भोजन करना और उनको भोजन कराना ये छः प्रकार के आचरण प्रीति के लक्षण हैं॥४॥

जिनके मुख से श्रीकृष्ण नाम उच्चारित होता है, उनको मन से आदर करना चाहिए। दीक्षित होने पर प्रणति के द्वारा सम्मान करना चाहिए, यदि आत्म समर्पित होकर श्रीप्रभु की सेवा करते हैं तो सेवा के द्वारा उनका आदर करना चाहिए। भजन विषय में परिपक्व, निष्कपट, ऐकान्तिक भावापन्न एवं जिनका हृदय व्यर्थ परनिन्दा दोष दुष्ट नहीं है, इस प्रकार के सज्जन के साथ निरन्तर रहने की आकाङ्क्षा करें॥५॥

गङ्गाजल में बुद्बुद, फेन, पङ्क आदि रहने पर भी गङ्गाजल का ब्रह्मद्रवत्व अर्थात् पवित्रता नष्ट नहीं होती है, उसी प्रकार शरीर के स्वभाव हेतु दोष समूह भक्तजन में दिखने में आने पर भी उनमें प्राकृत बुद्धि नहीं करना चाहिए, कारण वे नित्य पवित्र हैं॥६॥

स्यात् कृष्णनामचरितादि सिताप्यविद्या,
पित्तोपतिक्त रसनस्य न रोचिका नु।
किन्त्वादरादनुदिनं खलु सैव जुष्टा
स्वादी क्रमाद्भवति तद्गदमूल हन्त्री।।७।।

तन्नामरूपचरितादिषु कीर्त्तनानु-
स्मृत्योः क्रमेण रसना मनसी नियोज्य।
तिष्ठन् व्रजे तदनुरागि जनानुगामी
कालं नयेन्निखिलमित्युपदेशसारः।।८।।

वैकुण्ठाज्जनितो वरा मधुपुरी तत्रापि रासोत्सवाद्-
वृन्दारण्यमुदारपाणि-रमणात्तत्रापि गोवर्द्धनः।
राधाकुण्डमिहापि गोकुलपतेः प्रेमामृतप्लावनात्
कुर्यादस्य विराजतो गिरितटे सेवां विवेकी न कः।।९।।

अविद्या पित्ततप्त रसनायुक्त व्यक्ति के लिए कृष्ण नाम लीला गुण आदि मिश्री के तरह रुचिकर नहीं होते हैं, किन्तु प्रतिदिन आदर से कृष्णनामादिरूप मिश्री सेवन करते करते वह क्रमशः स्वादु लगने लगता है, एवं अविद्या रूप पित्त रोग का मूल ध्वस्त करता है॥७॥

श्रीकृष्ण नाम रूप लीला आदि के स्मरण कीर्त्तन आदि में मन एवं रसना को नियुक्त करके कृष्णानुरागी जन के अनुगत होकर व्रज में रहकर कालयापन करें। यही समस्त उपदेशों का सार है॥८॥

मथुरा वैकुण्ठ से भी श्रेष्ठ है, उसमें रासोत्सव हेतु श्रीवृन्दावन श्रेष्ठ है, उससे उदारपाणि श्रीगोविन्द के केलि विलास हेतु श्रीगोवर्द्धन श्रेष्ठ हैं, उसमें गोकुलपति श्रीकृष्णचन्द्र के प्रेमामृत प्लावन हेतु श्री राधाकुण्ड श्रेष्ठ है, श्रीगोवर्द्धन गिरि के तट में स्थित श्रीराधाकुण्ड की सेवा कौन विवेकी जन नहीं करता है? ॥९॥

कर्मिभ्यः परितो हरेः प्रियतया ख्यातिं ययुर्ज्ञानिन-
स्तेभ्यो ज्ञानविमुक्तभक्तिपरमाः प्रेमैकनिष्ठा यतः।
तेभ्यस्ताः पशुपालपङ्कजदृशस्ताभ्योऽपि सा राधिका
प्रेष्ठा तद्वदियं तदीयसरसी तां नाश्रयेत् कः कृती।।१०।।

कृष्णस्योच्चैः प्रणयवसतिः प्रेयसीभ्योऽपि राधा-
कुण्डश्चास्या मुनिभिरभित स्तादृगेव व्यधायि।
यत् प्रेष्ठैरप्यलमसुलभं किं पुनर्भक्तिभाजां
तत् प्रेमादः सकृदपि सरः स्नातुराविष्करोति।।११।।

इति श्रील श्रीजीवगोस्वामि पाद शिक्षार्थं
श्रीमद्रूपगोस्वामिपादेनोक्तं श्रीश्रीउपदेशामृतं समाप्तम्।

कर्मियों से ज्ञानी श्रीहरि के प्रिय रूप से प्रसिद्ध हैं। ज्ञानियों से ज्ञानमुक्त-निर्भेद ब्रह्मानुसन्धानहीन भक्ति परायण व्यक्ति श्रेष्ठ हैं, भक्तों में प्रेमनिष्ठ भक्त श्रेष्ठ हैं, इस प्रकार के भक्तों से व्रजाङ्गनागण श्रेष्ठ हैं। उन सबों के मध्य में श्रीराधिका श्रीकृष्ण की सर्वापेक्षा प्रियतमा हैं एवं श्रीराधाकुण्ड भी श्रीकृष्ण को उस प्रकार प्रिय हैं। अतएव कौन सुकृती व्यक्ति श्रीराधाकुण्ड का आश्रय ग्रहण नहीं करेगा? ॥१०॥

श्रीकृष्ण की प्रेयसीवृन्द के मध्य में सर्वश्रेष्ठ प्रिया श्रीराधा हैं तथा श्रीराधाकुण्ड भी उसी प्रकार प्रिय है, मुनिगणों का कथन इस प्रकार है। श्रीकृष्ण के प्रियवृन्द के लिये भी यह श्रीराधाकुण्ड सुलभ नहीं है, साधारण भक्तों की तो बात ही क्या है। श्रीराधाकुण्ड में एक बार मात्र स्नान करने से उस स्नानकारी व्यक्ति को यह श्रीकृष्ण प्रेम प्रदान करते हैं॥११॥

श्रीउपदेशामृत का श्री श्रीहरिदास शास्त्रिकृत अनुवाद समाप्त।

श्रीश्रीउत्कण्ठादशकम्

श्रीश्रीराधिकायै नमः

छिन्न स्वर्ण विनिन्दि चिक्कण रुचिं स्मेरां वयः सन्धितो,
रम्यां रक्त सुचीन पट्टवसनां वेशेन विभ्राजिताम्।
उद्घूर्णच्छितिकण्ठ पिच्छ विलसद्वेणीं मुकुन्दं मनाक्,
पश्यन्तीं नयनाञ्चलेन मुदितां राधां कदाहं भजे।।१।।
यस्याः कान्त तनूल्लसत् परिमलेनाकृष्ट उच्चैः स्फुरद्,
गोपीवृन्द मुखारविन्द मधु तत्प्रीत्या धयन्नप्यदः।
मुञ्चन् वर्त्मनि वंभ्रमीति मदतो गोविन्द भृङ्गः सताम्
वृन्दारण्य वरेण्य कल्पलतिकां राधां कदाहं भजे।।२।।

जिनके अङ्ग की कान्ति सुवर्ण की मनोहर शोभा को भी तिरस्कार कर रही है, जो परम मधुर हास्य युक्ता हैं, वयः सन्धि से जो अति रमणीया हैं, जिनका परिधेय वसन अरुण वर्ण का है, जो अति मनोहर वेश से सुशोभित हैं। मस्तक की वेणी मण्डली बन्धन कौशल से नृत्यशील मयूर की प्रसारित पुच्छश्रेणी की भाँति शोभित है। जो नयन कोण से श्रीमुकुन्द देव के प्रति प्रति ईषत् वङ्किम दृक्पात कर रही हैं, जो अतिशय प्रसन्न अन्तःकरणा हैं, उन श्रीराधा का भजन मैं कब करुँगा ? ॥१ ॥

श्री गोविन्द मधुकर, परमा सुन्दरी व्रजवनितावृन्द के मुखारविन्द का मधुपान अतिशय प्रीति से करने पर भी उसको छोड़कर जिनके कमनीय अङ्ग के प्रफुल्ल परिमल से आकृष्ट होकर मत्तता के कारण पथ पथ में इधर उधर परिभ्रमण कर रहे हैं, वृन्दावन की सर्वश्रेष्ठ कल्प लतिका श्रीराधा की सेवा करने का सौभाग्य मुझको कब प्राप्त होगा ? ॥२

श्रीमत्कुण्डतटी कुडुङ्गभवने क्रीड़ाकलानां गुरुम्,
तल्पे मञ्जुलमल्लि कोमलदलैः क्लिप्ते मुहुर्माधवम्।
जित्वा मानिनमक्ष सङ्गरविधौ स्मित्वा दृगन्तोत्सवैः,
युक्तानां हसितुं सखीः परमहो राधां कदाहं भजे।।३।।
रासे प्रेमरसेन कृष्णविधुना सार्द्धं सखीभिर्वृताम्,
भावैरष्टभिरेव सात्विकतरैर्लास्यं रसैस्तन्वतीम्।
वीणा वेणु-मृदङ्ग किङ्किणिचलन्मञ्जीर चूड़ोच्छलद्,
ध्वानैः स्फीतसुगीतमञ्जु नितरां राधां कदाहं भजे।।४।।
उद्दामस्मरकेलि सङ्गरभरे कामं वनान्तस्थले,
कृष्णेनाङ्कित पीन पर्व्वतकुचद्वन्द्वां नखैरस्त्रकैः।
कन्दर्पेण तथा मदोद्धरमहो तं विद्ध माकुर्व्वतीम्,
दूरे स्वालिकुलैः कृताशिषमहो राधां कदाहं भजे।।५।।

परम शोभित श्रीराधाकुण्ड तीर स्थित निकुञ्ज मन्दिर में मनोहर मल्लिका कुसुम की सुकोमल दल निर्मित शय्या में, केलि परायण शिरोमणि दर्पान्वित माधव को पाशा क्रीड़ा समर में पुनः पुनः पराजित करके उपहास करने के लिए जो सहास्य अपाङ्ग भङ्गी से निज सखीवृन्द को नियुक्त कर रही हैं, उन श्रीराधा का भजन मैं कब करुँगा ? ॥३॥

रासलीला में सखीवृन्द परिवेष्टित होकर प्रेम रसिक श्रीकृष्णचन्द्र के साथ अष्ट सात्विक भाव से वीणा, वेणु, मृदङ्ग, किङ्किणी, चञ्चल नूपुर, चूड़ी आदि के उच्छलित शब्द परिपुष्ट सुमधुर गीत के साथ जो रसमय नृत्य विस्तार कर रही हैं, उन श्रीराधा की परिचर्या मैं कब करुँगा ? ॥४॥

श्रीवृन्दाविपिन में उद्दाम कन्दर्पयुद्ध में नखास्त्र के द्वारा श्रीकृष्ण जिनके सुविशाल शैल के समान वक्षोज युगल को चिह्नित करने पर जो

मित्राणां निकरै धृतेन हरिणास्वैरं गिरीन्द्रान्तिके,
शुल्कादानमिषेन वर्त्मनि हठाद्दम्भेन रुद्धाञ्चलाम्।
सार्द्धं स्मेर सखीभिरुद्धुर गिरां भङ्ग्या क्षिपन्तीं रुषा,
भ्रूदर्पैर्विलसच्चकोरनयनां राधां कदाहं भजे।।६।।
पारावार विहार कौतुक मनःपूरेण कंसारिणा
स्फारे मानस जाह्नवी जलभरे तटां समुत्थापिताम्।
जीर्णानौर्मम चेत् स्खलेदिति मिषाच्छाया द्वितीयां मुदा,
पारे खण्डित-कञ्चुलिं धृत कुचां राधां कदाहं भजे।।७।।
उल्लासैर्जलकेलिलोलुप मनःपुरे निदाघोद्गमे,
क्ष्वेलीलम्पटमानसाभिरभितः सायं सखीभिर्वृताम्।

उन्हीं के समान दर्प से मदोन्मत्त श्रीकृष्ण को क्षत विक्षत कर रही हैं, सखीवृन्द उसको दूर से देखकर जिनको आशिष प्रदान कर रही हैं, उन श्रीराधा की परिचर्या मैं कब करुँगा ॥५॥

गोवर्धन के पास पथ में कर ग्रहण छल से सुबलादि सखावृन्द से परिवेष्टित होकर श्रीकृष्णचन्द्र दर्प के साथ सखिवृन्द के साथ सहसा जिनके वसनाञ्चल धारण करने पर जो हास्यमुखी सखीगण के सहित भङ्गी के साथ उनके प्रति उद्धत वाक्य प्रयोग कर रही हैं, एवं उस समय भ्रूक्षेप हेतु जिनके चकोर सदृश नयन युगल चञ्चल हो रहे हैं, मैं उन श्रीराधा की परिचर्या कब करुँगा ? ॥६॥

विस्तृत मानस गङ्गा के जल में पारावार विहार करने की इच्छुक कौतूहलाक्रान्त चित्त होकर कंसरिपु श्रीकृष्ण जिनको पार करने के लिए अकेली नाव में उठाकर छल से "नाव जीर्ण हो गयी है, यदि डूब जाय" इस प्रकार कहने पर जो भीत होकर कञ्चुलिका उन्मोलन करने से श्रीकृष्ण जिनके वक्षःस्थल में हस्त अर्पण किये थे, उन श्रीराधिका का

गोविन्दं सरसि प्रियेऽत्र सलिलक्रीड़ाविदग्धं कणैः,
सिञ्चन्तीं जलयन्त्रकेण पयसां राधां कदाहं भजे।।८।।
वासन्ती कुसुमोत्करेण परितः सौरभ्य विस्तारिणा
स्वेनालङ्कृति सञ्चयेन बहुधाविर्भावितेन स्फुटम्।
सोत्कम्पं पुलकोद्गमैर्मुरभिदा द्राग्भूषिताङ्गीं क्रमै,
मोदेनाश्रुभरैः प्लुतां पुलकितां राधां कदाहं भजे।।९।।
प्राणेभ्योऽप्यधिकप्रियामुररिपोर्या हन्त! यस्या अपि,
स्वीय प्राणपरार्द्धतोऽपि दयितास्तत् पादरेणोः कणाः।
धन्यां तां जगतीत्रये परिलसज्जङ्घालकीर्त्तिं हरेः,
प्रेष्ठावर्गशिरोऽग्रभूषणमणिं राधां कदाहं भजे।।१०।।
उत्कण्ठादशकस्तवेन नितरां नव्येनदिव्यैः स्वरैः,
वृन्दारण्यमहेन्द्रपट्टमहिषीं यः स्तौति सम्यक् सुधीः।

भजन मैं कब करुँगा? ॥७॥

निज जल केलि लोलुप चित्त की वासना पूर्त्ति हेतु ग्रीष्मारम्भ के सायंकाल में क्रीड़ा कौतुकाभिलाषिणी सखीवृन्द से वेष्टित होकर श्रीराधाकुण्ड के जल में जलयन्त्र द्वारा जलकेलि विशारद श्रीकृष्ण के प्रति जलकण समूह सेचन कर रही हैं, कब मैं उन श्रीराधा का भजन करुँगा? ॥८॥

पुलकायित कलेवर श्रीकृष्ण के द्वारा कम्पित हस्त से सर्वत्र सौरभ विस्तारकारी वसन्त कुसुमावली एवं निजनिर्मित विविध अलङ्कारों के द्वारा सत्वर सुसज्जित होकर आनन्दाश्रु प्लाविता, परम पुलकिता हो गयी थीं। मैं उन श्रीराधा का भजन कब करुँगा? ॥९॥

श्रीकृष्ण के प्राण समूह से भी जो अति प्रिया हैं। अथच आश्चर्य यह है कि श्रीकृष्ण के पदरज कण जिनके निज कोटि कोटि प्राण से भी

तस्मै प्राणसमागुणानुरसनात् संजातहर्षोत्सवैः,
कृष्णोऽनर्घमभीष्टरत्नमचिरादेतत् स्फुटं यच्छति।।११।।

इति श्रीमद्रघुनाथदास गोस्वामि-विरचितं
श्रीउत्कण्ठादशकं सम्पूर्णम्।

प्रिय हैं, जिनकी कीर्त्तिराशि अति उज्ज्वल है और तीनों लोकों में सुविस्तीर्ण है, एवं जो श्रीकृष्ण प्रेयसीवृन्द के मस्तक स्थित अति उत्कृष्ट भूषण मणि स्वरूप हैं अर्थात् जो श्रीकृष्ण प्रियावृन्द के मध्य में सर्वश्रेष्ठ धन्यतमा हैं, उन श्रीराधा की परिचर्या मैं कब करुँगा ?१०॥

सम्यक् सद्बुद्धि सम्पन्न होकर जो व्यक्ति उच्च स्वर से इस अभिनव उत्कण्ठा दशक स्तोत्र के द्वारा वृन्दावनाधीश्वर श्रीकृष्ण की पट्टमहिषी श्रीराधा का अतिशय स्तव करता है, उस स्तव के द्वारा श्रीकृष्ण प्राणसमा श्रीराधा का गुणास्वादन करके अतिशय आनन्दित होकर शीघ्र श्रीराधिका की सेवा रूप अमूल्य अभीष्ट रत्न उसको प्रदान करते हैं॥११॥

अनुवाद समाप्त॥

।। श्रीश्रीगौरगदाधरौ जयतः।।

श्रीश्रीअनुरागवल्ली

देहार्व्वुदानि भगवन्! युगपत् प्रयच्छ
वक्त्रार्वुदानि च पुनः प्रतिदेहमेव।
जिह्वार्व्वुदानि कृपया प्रतिवक्त्रमेव
नृत्यन्तु तेषु तव नाथ! गुणार्व्वुदानि।।१।।
किमात्मना यत्र न देह कोट्यो
देहेन किं यत्र न वक्त्र कोट्यः।
वक्त्रेण किं यत्र न कोटि जिह्वाः
किं जिह्वया यत्र न नाम कोट्यः।।२।।

भगवन्! कृपा करके मुझे एक समय में अर्व्वुद संख्यक शरीर, प्रति शरीर में अर्व्वुद वदन, प्रति वदन में अर्व्वुद जिह्वा प्रदान करिये, और हे प्रभो! उन अर्व्वुद अर्व्वुद जिह्वा के द्वारा तुम्हारी अर्व्वुद अर्व्वुद गुण राशि कीर्त्तित हो॥१॥

हे प्रभो! जिस आत्मा के कोटि शरीर नहीं है, उस आत्मा का क्या प्रयोजन है? जिस शरीर में कोटि वदन नहीं है, उस शरीर का क्या प्रयोजन? जिस वदन में कोटि जिह्वा नहीं है, उस वदन का क्या फल है? जिस जिह्वा के द्वारा आपके कोटि नामों का उच्चारण नहीं होता है, उस जिह्वा का क्या प्रयोजन? अतएव, हे प्रभो! प्रार्थना करता हूँ, आप मुझे ये सब प्रदान कीजिये॥२॥

आत्मास्तु नित्यं शतदेहवर्त्ती देहस्तु नाथास्तु सहस्र वक्त्रः।
वक्त्रं सदा राजतु लक्ष जिह्वं गृह्णातु जिह्वा तव नाम कोटिम्।।३।।
यदा यदा माधव! यत्र यत्र गायन्ति ये ये तव नाम लीलाः।
तत्रैव कर्णायुतधार्यमाणा स्तास्ते सुधा नित्यमहं धयानि।।४।।
कर्णायुतस्यैव भवन्तु लक्षकोट्यो रसज्ञाभगवंस्तदैव।
येनैव लीलाः शृणुवानि नित्यं तेनैव गायानि ततः सुखं मे।।५।।
कर्णायुतस्येक्षण कोटिरस्याहृत्कोटिरस्या रसनार्व्वुदं स्तात्।
श्रुत्वैव दृष्टा तव रूपसिन्धुमालिङ्गय माधुर्यमहो धयानि।।६।।

हे नाथ! मेरी आत्मा में सौ सौ शरीर हों, प्रति शरीर में सहस्त्र मुख हों, प्रति मुख में लक्ष जिह्वा हो, प्रति जीभ से तुम्हारे कोटि नामों का कीर्त्तन करूँ॥३॥

हे माधव! हे राधाकान्त! तुम्हारे भक्तवृन्द जब भी जहाँ पर तुम्हारे नामलीला का कीर्त्तन करें, तभी जैसे उस स्थान में मैं अयुत कानों से उस कीर्त्तन सुधा का अविरत पान कर सकूँ॥४॥

हे प्रभो! जब उस कर्ण के द्वारा तुम्हारी नाम गुणावली का कीर्त्तनामृत पान करुँगा, तब उस कर्णसमूह में लक्ष कोटि रसना होवे, ऐसा होने पर उन रसनाओं के द्वारा तुम्हारी सुमधुर नाम और लीला का कीर्त्तन करके परम सुख सागर में निमग्न हो सकुँगा॥५॥

हे नाथ! अयुत कर्णों के कोटि नयन हों, कोटि नयनों के कोटि हृदय हों, कोटि हृदयों को अर्व्वुद रसना हों और उन अयुत कर्णों से मैं तुम्हारी अपरूप रूप सागर की कथा श्रवण करूँ, कोटि कोटि नयनों से रूप दर्शन करूँ। करोड़ों करोड़ों हृदयों से उन सबका स्पर्श करूँ, एवं अर्व्वुद जिह्वाओं से उन सबका माधुर्य पान करूँ॥६॥

नेत्रार्व्वुदस्यैव भवन्तु कर्णनासाररसज्ञा हृदयार्व्वुदम्वा।
सौन्दर्य सौश्वर्य सुगन्धपुरमाधुर्य संश्लेष रसानुभूत्यै।।७।।

तत्पार्श्वगत्यै पदकोटिरस्तु
सेवां विधातुं मम हस्त कोटिः।
तां शिक्षितुं स्तादपि बुद्धि कोटि-
रेतान् वरान् मे भगवन्! प्रयच्छ।।८।।

इति श्रीमद् विश्वनाथ चक्रवर्त्ति ठक्कुर विरचित स्तवामृतलहर्यां श्रीश्रीअनुरागवल्ली समाप्तम्।।

हे प्रभो! तुम्हारे सौन्दर्यामृत पान करने के लिए मेरे अर्व्वुद नयन हों, तुम्हारे सुमधुर कण्ठ ध्वनि श्रवण करने के लिए मेरे अर्व्वुद कर्ण हों, तुम्हारे श्रीअङ्ग का सौरभ ग्रहण करने के लिए मेरी अर्व्वुद नासिकायें हों, तुम्हारे रूप गुणादि के माधुर्यास्वादन हेतु मेरी अर्व्वुद रसनायें हों, एवं तुम्हें स्पर्श करने के लिए मेरे अर्व्वुद हृदय हों॥७॥

हे भगवन्! मुझे यह वर प्रदान करो, तुम्हारे पास जाने के लिए मेरे कोटि चरण हों, तुम्हारी सेवा करने के लिए मेरे कोटि हस्त हों, एवं उस सेवा कार्य को सुन्दर रूप से करने के लिए शिक्षा देने के लिए मेरी कोटि बुद्धियां हों॥८॥

॥ श्री अनुरागवल्लीका अनुवाद समाप्त ॥

श्रीहरिदास शास्त्री सम्पादित ग्रन्थावली

(श्रीगदाधरगौरहरि प्रेस से प्रकाशित)

क्रम सद्ग्रन्थ	मूल्य
१-वेदान्तदर्शनम् भागवतभाष्योपेतम्	१५०.००
२-श्रीनृसिंह चतुर्दशी	१०.००
३-श्रीसाधनामृतचन्द्रिका	२०.००
४-श्रीगौरगोविन्दार्चनपद्धति	२०.००
५-श्रीराधाकृष्णार्चनदीपिका	२०.००
६-७-८-श्रीगोविन्दलीलामृतम्	४५०.००
९-ऐश्वर्यकादम्बिनी	३०.००
१०-श्रीसंकल्पकल्पद्रुम	३०.००
११-१२-चतु:श्लोकीभाष्यम्, श्रीकृष्णभजनामृत	३०.००
१३-प्रेम सम्पुट	४०.००
१४-श्रीभगवद्भक्तिसार समुच्चय	३०.००
१५-ब्रजरीतिचिन्तामणि	४०.००
१६-श्रीगोविन्दवृन्दावनम्	३०.००
१७-श्रीकृष्णभक्तिरत्नप्रकाश	५०.००
१८-श्रीहरेकृष्णमहामन्त्र	५.००
१९-श्रीहरिभक्तिसारसंग्रह	५०.००
२०-धर्मसंग्रह	५०.००
२१-श्रीचैतन्यसूक्तिसुधाकर	१०.००
२२-श्रीनामामृतसमुद्र	१०.००
२३-सनत्कुमारसंहिता	२०.००

२४-श्रुतिस्तुति व्याख्या	१००.००
२५-रासप्रबन्ध	३०.००
२६-दिनचन्द्रिका	२०.००
२७-श्रीसाधनदीपिका	६०.००
२८-स्वकीयात्वनिरास, परकीयात्वनिरूपणम्	१००.००
२९-श्रीराधारससुधानिधि (मूल)	२०.००
३०-श्रीराधारससुधानिधि (सानुवाद)	१००.००
३१-श्रीचैतन्यचन्द्रामृतम्	३०.००
३२-श्रीगौरांग चन्द्रोदय	३०.००
३३-श्रीब्रह्मसंहिता	५०.००
३४-भक्तिचन्द्रिका	३०.००
३५-प्रमेयरत्नावली एवं नवरत्न	५०.००
३६-वेदान्तस्यमन्तक	४०.००
३७-तत्वसन्दर्भः	१००.००
३८-भगवत्सन्दर्भः	१५०.००
३९-परमात्मसन्दर्भः	२००.००
४०-कृष्णसन्दर्भः	२५०.००
४१-भक्तिसन्दर्भः	३००.००
४२-प्रीतिसन्दर्भः	३००.००
४३-दशःश्लोकी भाष्यम्	६०.००
४४-भक्तिरसामृतशेष	१००.००
४५-श्रीचैतन्यभागवत	२००.००
४६-श्रीचैतन्यचरितामृतमहाकाव्यम्	१५०.००
४७-श्रीचैतन्यमंगल	१५०.००

४८-श्रीगौरांगविरुदावली	४०.००
४९-श्रीकृष्णचैतन्यचरितामृत	१५०.००
५०-सत्संगम्	५०.००
५१-नित्यकृत्यप्रकरणम्	५०.००
५२-श्रीमद्भागवत प्रथम श्लोक	३०.००
५३-श्रीगायत्री व्याख्याविवृति:	१०.००
५४-श्रीहरिनामामृत व्याकरणम्	२५०.००
५५-श्रीकृष्णजन्मतिथिविधि:	३०.००
५६-५७-५८-श्रीहरिभक्तिविलास:	६००.००
५९-काव्यकौस्तुभ:	१००.००
६०-श्रीचैतन्यचरितामृत	२५०.००
६१-अलंकारकौस्तुभ	२५०.००
६२-श्रीगौरांगलीलामृतम्	३०.००
६३-शिक्षाष्टकम्	१०.००
६४-संक्षेप श्रीहरिनामामृत व्याकरणम्	८०.००
६५-प्रयुक्ताख्यात मंजरी	२०.००
६६-छन्दो कौस्तुभ	५०.००
६७-हिन्दुधर्मरहस्यम् वा सर्वधर्मसमन्वय:	५०.००
६८-साहित्य कौमुदी	१००.००
६९-गोसेवा	४०.००
७०-पवित्र गो	५०.००
७१-गोसेवा (गोमांसादि भक्षण विधिनिषेध विवेचन)	५०.००
७२-रस विवेचनम्	५०.००
७३-अहिंसा परमो धर्म:	११०.००
७४-भक्ति सर्वस्वम्	५०.००

बंगाक्षर में मुद्रित ग्रन्थ

१-श्रीबलभद्रसहस्रनाम स्तोत्रम्	१०.००
२-दुर्लभसार	१०.००
३-साधकोल्लास	५०.००
४-भक्तिचन्द्रिका	४०.००
५-श्रीराधांरससुधानिधि (मूल)	२०.००
६-श्रीराधारससुधानिधि (सानुवाद)	३०.००
७-श्रीभगवद्भक्तिसार समुच्चय	३०.००
८-भक्तिसर्वस्व	३०.००
९-मन:शिक्षा	३०.००
१०-पदावली	३०.००
११-साधनामृतचन्द्रिका	४०.००
१२-भक्तिसंगीतलहरी	२०.००

अंग्रेजी भाषा में मुद्रित ग्रन्थ

१-पद्यावली (Padyavali)	२००.००
२-गोसेवा (Goseva)	५०.००
३-पवित्र गो (The Pavitra Go)	८०.००
४-A Review of "Beef in ancient India	२००.००

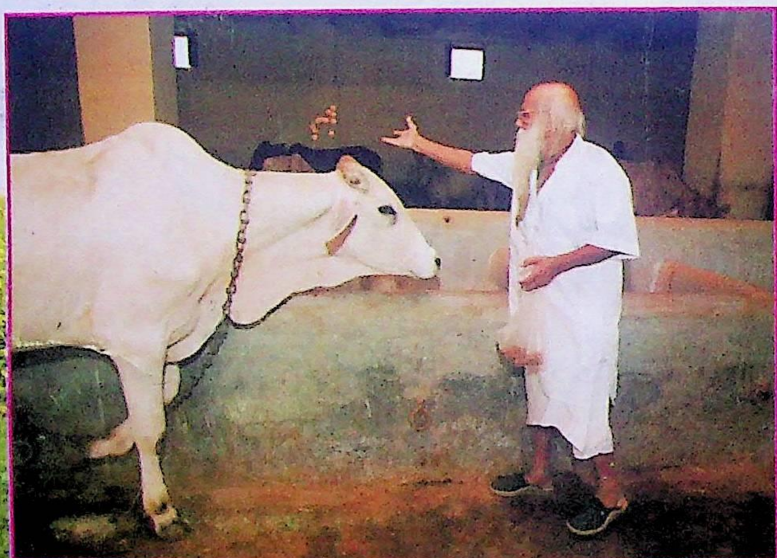
अन्य भाषाओं में मुद्रित ग्रन्थ

१- Pavitra Go (Spanish)

२- Goseva Pavitra Go (Italian)

३-गोसेवा (गोमांसादि भक्षण विधिनिषेध विवेचन) (तमिल)

॥श्रीहरि:॥



श्रीहरिदास शास्त्री

संस्थापक एवं अध्यक्ष -

श्रीहरिदास शास्त्री गोसेवा संस्थान

श्रीहरिदास निवास, पुरानी कालीदह

वृन्दावन, मथुरा (उ. प्र.)